

2018-19



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII

Issue - IV

October - December - 2018

English Part - VII / Hindi Part - III

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



EDITORIAL BOARD

Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydoie DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennai 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareilly Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasantao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerece, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. A. Koli
Professor & Head (Retd.),
Department of Economics,
Shivaji University, Kolhapur.

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	हिंदी कहानी में संवैधानिक मूल्य डॉ. मिलिंद बनकर	१-४
२	कबीर के साहित्य में समरसता भाव अनिल पुत्र श्री गोविन्द राम	५-९
३	समकालीन हिंदी कविता में दलित विमर्ष (समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में जयप्रकाश कर्दम का साहित्य) प्रा. डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	१०-१३



३. समकालीन हिंदी कविता में दलित विमर्ष (समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में जयप्रकाश कर्दम का साहित्य)

प्रा. डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जिला - औरंगाबाद.

प्रस्तावना

14 अक्टूबर 1956 को डॉ. भिमराव रामजी आंबेडकरजी 9 करोड़ जनता के साथ विश्वरूपी बौद्ध धर्म की दिशा नागपुर में ली ! तब से जाकर - आज तक गाँव के सभी तृच्छ और हिन काम को लोगों ने छोड़ दिए। इस कारण सवर्ण और दलितों में नए ढंग की अनबन पैदा हुई । इस उथल-पुथल से दलितों को सत्व मिल गया । " इन बौद्ध हो गए हैं; इसलिए हिंदु धर्म द्वारा हम पर लादे गए हीन काम अब हम नहीं करेंगे । ऐसी नई चेतना पुरे दलित समाज में जागृत हुई । इस सांस्कृतिक संकमण काल में ही दलित साहित्य के आंदोलन की जड़ जमाई नजर आती है । इस आलेख में मैंने दलित साहित्य की विशेषकर समकालीन हिंदी कविता में दलित विमर्ष - समकालीन हिंदी कविता के विशेष संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करने की कोशिश की है ।

दलित साहित्य की रचना प्रेरणा

" साऊथ ब्युरो कमीशन 27 जनवरी 1919 से 6 दिसम्बर 1956 का यह काल दलित साहित्य का मानवंबुंड है । यह समय बाबासाहेब के कार्यकृतत्व से प्रभावित हुआ है । हजारों वर्षों की विषम समाज रचना उसके आगे चल रहे गिने-चुने सुधारवादी आंदोलन, तेजी से बढ़ने वाला काँग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन; अल्पसंख्याकों को परतंत्रता में मिले हुए राजनीतिक महत्त्व, अंग्रेजों की ओर में किस्त-दर किस्त मिलने वाली सुविधाएँ, भारत में आनेवाले ब्रिटिश कन्वेंशन, भारतीय संविधान, राजनीति, दलितों का धर्मांतरण और दलितों के नेतृत्व में विराजमान बाबासाहेब आंबेडकर इन सब ऐतिहासिक घटनाओं से दलित आंदोलन प्रभावित हुआ ।"

बाबासाहेब जी जीवनकाय, वाणी तथा उनके अमुल्य विचारों से दलित समाज, दलित आंदोलन और दलित लेखक जागृत हुआ । इसलिए बाबासाहेब आंबेडकरजी ही दलित साहित्य की सच्ची प्रेरणा है । दलित साहित्य की प्रेरणा आंबेडकरवादी विचार है । क्योंकि बाबासाहेब के विचारों और आंदोलन से दलित समाज को स्वाभिमान मिला है । यदि बाबासाहेब न होते तो हम न होते । डॉ. बाबासाहेब के विचार दलित समाज को नई चेतना, कांती की उमंग देती है । दलित समाज में प्रत्येक व्यक्ति का एक दूसरे से अभिवादन करते हुए, 'जयभीम' का कहना भी इस बात का द्योतक है कि बाबासाहेब आंबेडकर ही हमारी सच्ची प्रेरणा है ।

हिंदी दलित साहित्य के संदर्भ में दलित साहित्य की आवधारणा भारत के स्वातंत्रता के स्वतंत्रता आंदोलन और स्वातंत्र्योत्तर काल में और विशेष संदर्भ में विकसित हुई । दलित साहित्य के बीच बौद्ध काल से लेकर संत काल तक ढुँढी जा सकती है । " किंतु यथार्थ में दलित साहित्य की पृष्ठभूमि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दलितों के मानवीय अधिकारों के लिए दीर्घ संघर्ष, 1931-32 में लंदन में गोलमेज सम्मेलन के दौरान भारत में दलितों की

समस्या उनके निवारण और अन्य हिंदु नेताओं के साथ हुई उनकी बहस भारतीय संविधान में नागरिकों के मु अधिकारों का प्रावधान और डॉ.बाबासाहब आंबेडकर द्वारा 14 अक्टुबर 1956 को बौद्ध धर्म की दिक्षा में देखी जान चाहिए ।" ²

दलित साहित्य का आरंभ गद्य से हुआ; अथवा पद्य से इस बारे में निश्चात्मक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है । कुछ विद्वानों द्वारा दलित साहित्य का उद्भव बौद्ध और संत साहित्य से भी मानते हैं । किंतु प्रा दलित साहित्य का— " प्रारंभ सितम्बर 1914 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हरिडोम की कविता " अच्छुत व शिकायत " से माना जाता है ।" ³

मनुस्मृति और अन्य हिंदु धर्मशास्त्र दलितों के दमन और दुर्दशा के कारण है, स्वामी अछुतानंद ने इसे अच्छ तरह समझा था। उनके काव्य की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

" निशिदिन मनुस्मृति हमको जला रही है ।
उपन न उठने देती, नीचे नीचे गिरा रही है ।
हमको, पुराने उतरन पहनो बता रही है ।
दौलत कभी न जोड़े गर हो तो छीन से वह ।
फिर नीच कह हमारा दिल भी दुखा रही है ।
कुत्ते एवं बिल्ली मक्खी, से भी बना के निचा ।
हा शोक, ग्राम बाहर, हमको बसा रही है ।
हमको बिना मजुरी, बैलों के साथ जोते ।
बच्चे तडपते, मुखों, क्या जुल्म ढा रही है ।" ⁴

समकालीन दलित कविताओं में प्रमुख हैं—ओमप्रकाश वाल्मीकी, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, सुरे तन्वर, सुशिला टाकभौर, सुरजपाल चौहान, मलखासिंह आदि । इन सभी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम र दलितों ने जिए—यातनाओं का चित्रण अपनी कविताओं के माध्यम से वर्णन किया हुआ नजर आता है । बहुत साल पहले—दलितों का मंदिर, सार्वजनिक पानी, बावडी, तालावा खुल्ला प्रवेश करने के लिए प्रतिबंध था । देव-देवताओं व मंदिरों में भी प्रवेश बंद था । आज के तारिख में भी परिस्थिति ज्यादा सुधरी नहीं है । सवर्ण मानसिकता के घर और मंदिरों में बेचारा दलित अब भी प्रवेश से वंचित है । इन समकालीन दलित रचनाकारों / कवियों में प्रमुख रूप से ओमप्रकाश वाल्मीकी जी वे एक नहीं हजारों सवालियों से टकराते हैं । आजादी के 67 वर्ष बाद भी इस भारत क दलित समाज अपनो के ही हाथ दबा कुचला क्यों है । दलित समाज के नाम पर राजनैतिक रोटियाँ सकते हैं आज अनेक कायदे, कानून, नियम होते हुए भी बहुत सारी समस्याएँ दलित की हैं ।

आज के तारिख में समकालीन कविताओं की पृष्ठभूमि पर नजर डालना प्रासंगिक होगा । दलित कविताओं का शोर, पीडित, अन्याय, अत्याचार, ऊँच, नीच, भेदा-भेद के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करती है । 14 अप्रैल 1891 को एव महान दलितों के कैवारी—मसिहा, लालन—पालन करता डॉ. भिमराव रामजी आंबेडकरजी का जन्म हुआ और समाज में जो वर्णव्यवस्था का रूप था उन्होंने खुद झेला था । इसलिए उन्होंने जुल्म और गुलामगिरी को जड से ऊखाड फेंक



साथ ही साथ समता, बंधुता, राष्ट्रप्रेम, विश्वबंधुता जैसे बुद्ध की राह पर चलकर बहुमुल्य - मुल्य इस देश के लोगों को दिए ।

अब बात करते हैं दलित साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम जी की । " उनका जन्म 17 फरवरी 1959 में उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद के निकट इन्दरगडी गाँव में एक दलित परिवार में हुआ । आज वे भारतीय उच्च आयोग पोर्टलुई मोरिशस में द्विवितीय सचिव पद पर विराजमान हैं । " समकालीन हिंदी दलित कविताओं में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले जयप्रकाश का नाम उल्लेखनीय है । उनका जन्म एक दलित परिवार में होने के कारण उनके रचनाओं में दलित समाज जीवन की प्रमुख समस्याएँ देखने को मिलती हैं । इन सब की उन्होंने खुद देखा और अनुभव किया है । इन्हीं अनुभवों को इन्होंने अपनी रचनाओं में रेखांकित किया है । दलितों के प्रगति के लिए अपने साहित्य के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए हैं । इससे स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश कर्दम के मन में दलित समाज के प्रति आस्था है और इन्हें वह प्रगति की राह पर लाना चाहते हैं जयप्रकाश कर्दम जी ने बड़ी आस्था के साथ उनकी रचनाओं के माध्यम से दलित जीवन का यथार्थ और प्रामाणिक चित्रण किया है ।

"साहित्य सृजन के संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं- 'मेरा गाँव आम्बेडकरवादी विचारों से परिचित और प्रभावित एक बहुत गाँव है । इस प्रकार उन्हें अपना लेखन करने का स्रोत हमें नजर आता है ।" जयप्रकाश कर्दम हिंदी दलित साहित्य में उल्लेखनीय माने जाते हैं । वे आम्बेडकरवादी विचारों के अनुयायी हैं । उनकी साहित्य सृजन की प्रेरणा स्वानुभूति, अपने दलित समाज के प्रति आस्था और गौतम बुद्ध, संत कबीर, महात्मा बसवेश्वर, महात्मा फुले, बीरसा मुंडा, संत रैदास तथा डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर रहे हैं । जयप्रकाश कर्दम जी का साहित्य समाज परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । जयप्रकाश कर्दम जी ने अपने रचना - साहित्य में दलित समाज को केंद्र में रखकर काव्य, कहानी, उपन्यास, वैचारिक लेख, कुछ महत्वपूर्ण कृतियों का सृजन किया है ।

" जयप्रकाश कर्दम जी ने " गुंगा नहीं था मैं " इस काव्य संग्रह में समाविष्ट कविता ' किल्ले ' नाम की कविता के माध्यम से कवि ने समाज में व्याप्त विषमता एवं जातिभेद का चित्रण बड़ी मार्मिकता के साथ सच्चा यथार्थ का चित्र खिंचकर सभी हिंदी रचना संसार को आश्चर्य चकित कर सच्चाई का सई चप्पा पहने वालों को सजग किया है । उपेक्षित एवं दलित वर्ग के दुख दर्द को काव्य रूप दिया है । उनका दुसरा काव्य संग्रह ' तिनक-तिनक अंग ' में भी दलितों की दुख दर्द, पीडा, अन्याय की गाथा है । इस प्रकार जयप्रकाश कर्दम जी ने समकालीन कविताओं में अपनी अलग छाप छोड़ी है । उनकी बहुचर्चित कविता- " वर्णवाद का पहाड़ " इस कविता में उन्होंने जातीयता का चित्रण किया हुआ है - उनकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

" तुम्हारे लौटे में पानी भरने को भी

हम लौलायित रहते किन्तु तुमने पानी पीने के

अपने पीतल के लौटे को हमारा हाथ कभी नहीं लगने दिया ।

लौटे में पानी सदैव सवर्ण छात्रों से ही भरवाया ।"

सर्व

इस प्रकार जयप्रकाश कर्दमजी ने अपने कविताओं के माध्यम से सभी दलित समाज के प्रमुख समस्याओं का रचना का विषय बनाकर समान परिवर्तन करने का प्रयास अपने साहित्य के माध्यम से किया है । समाज में



व्याप्त अंधविश्वासों, कुरितीओं, प्रथाओं, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ अपने रचनाओं में व्यक्त कर समाज को उचित मार्ग दिखाने का काम किया है।

संदर्भ

1. समकालीन काव्ययात्रा—किताबघर नई दिल्ली
2. समकालीन कविता के हस्ताक्षर —कवि डॉ.गीतासिंह—विश्वभारती प्रकाशन,नागपुर
3. विविक रमेश —समकालीन दलित साहित्य
4. हिंदी साहित्य :उद्भव और विकास: हजारी प्रसाद द्विवेदी —राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
5. www.hindisamay.com-इंटरनेट
6. तिनक—तिनक अंग—जयप्रकाश कर्दम

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's



Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri
Tq: Phulambri Dist : Aurangabad - 431111, (MS), India

Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's
Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri
Tq: Phulambri Dist : Aurangabad - 431111, (MS), India



One Day National Level Conference

On

“वैदवीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति”

2nd February 2019

Organized by

Department of Hindi

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad - 431111, (MS), India

Executive Editor

Principal, Dr. S. B. Jadhav

Chief Editor

Dr. D. N. Phuke

Co - Editor

Mr. B. T. Shelke



AARHAT PUBLICATION & AARHAT JOURNAL'S
1st, Gulabnagar Park, Dr. Ambedkar Chowk, Near T.V. Tower, Aurangabad (MS)-431001.
Email ID: www.aarhatjournal.com & Phone: 9822277964
Website: www.aarhat.com



130



76	दीपाली विश्वनाथराव सूर्यवंशी	दयानंद बटोही की कहानी में चित्रित दलित समस्याएँ	305 - 307
77	प्रा. शेळके बी. टी.	वैश्वीकरण और ईंधन	308 - 310
78	प्रा. डॉ. कोटुळे बायजा	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण	311 - 313
79	प्रा. डॉ. प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी	हिन्दी और मराठी दलित साहित्य में वैश्विक चेतना	314 - 317
80	डॉ. दत्तात्रय फुके	मुक्ति-संग्राम की महागाथा : मैं बोरिशाइल्ला	318 - 321
81	डॉ. अनिता भिमराव काकडे	'पार' उपन्यास में आदिवासी विमर्श	322 - 325
82	प्रा. डॉ. जयंत बोवडे	'काली आंधी' उपन्यास का सिनेमाई रूपांतरण	326 - 329
83	प्रा. भेंडेकर एन. एस.	जहीर कुरेशी की गज़लों में चित्रित नारी विमर्श	330 - 333
84	डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी	334 - 336
85	नितीन मधुकर बोडख	कुमार अंबुज की कविता में वैश्वीकरण	337 - 339
86	प्रा. वांजरवाडे एस. पी.	अधूरी देह की त्रासदी : किन्नर	340 - 343
87	डॉ. प्रा. प्रतिभा रं. धारासुरकर	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कबीर	344 - 348
88	प्रा. प्रकाश बन्सीधर खुळे	संचार माध्यमों की हिन्दी की चुनौतियाँ	349 - 351
89	इमरानखान पठाण	अधूरे इन्सानों की पुरी कहानी-किन्नर व्यथा	352 - 354
90	डॉ. अपर्णा पाटील	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संचार माध्यम और हिन्दी	355 - 357
91	श्री तुकाराम वसराव आडे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की दिशा	358 - 360
92	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास	361 - 366
93	प्रा. डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य की भूमिका	367 - 369
94	डॉ. विशाला शर्मा	संस्मरण विधा और श्रीराम शर्मा का 'रामकली'	370 - 373



अधुरे इंसानों की पुरी कहानी—किन्नर व्यथा

इमरानखान पठाण

शोध-छात्र

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद.

साहित्यिक दृष्टिकोण से वर्तमान समय में विभिन्न विमर्श पर चर्चा की जा रही हैं, जिसमें दलित विमर्श, मुस्लिम विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श इन विमर्शों के माध्यम से समाज के तमाम उपेक्षित वर्ग पर गहरा चिंतन हो रहा है। परंतु इसके अलावा भी समाज का एक उपेक्षित वर्ग जो की न स्त्री है न ही पुरुष जीसे किन्नर या आम भाषा में हिजडा कहा जाता है, उन पर खासी चर्चा नहीं हुई है। स्त्री और पुरुष के बीच फँसा हुआ यह उभयलिंगी समाज वर्तमान समय तक उपेक्षित रहा है। समाज में उन्हे हमेशा घृणा, तिरस्कार, तुच्छता की नजर से देखा जाता है। लेकिन पिछले कुछ समय से समाज के इस उपेक्षित घटक को सरकार सामाजिक प्रवाह में लाने की पुरी कोशीश कर रही हैं। इसी के तहत 19 जुलाई 2016 को ट्रांसजेंडर पर्सन (प्रोटोकाल ऑफ लाईफ) बी 2016 को मंजुरी दी है। भारत सरकार की कोशीश है की इस बील के माध्यम से किन्नर समुदाय को भी सामाजिक जीवन शिक्षा, रोजगार और अपने विभिन्न अधिकार प्राप्त हो सके यह प्रयास किए जा रहे है। अप्रैल 2014 में भारत की शिर्ष न्यायीक संस्था सर्वोच्च न्यायालय ने भी किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में पहचान दी है। इस फैसले के बदीलत हर किन्नर को जन्म प्रमाणपत्र, राशन कार्ड, पासपोर्ट, ड्रायविंग लाईसेंस आदि जैसे पहचानपत्र प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हुआ है।

साहित्य समाज का आईना होता है, और समाज के तमाम विषयों पर साहित्य अपनी बात विभिन्न तरीके से रखता है। इसी प्रकार कुछ साहित्यकारों ने किन्नरों की समस्याओं को लेकर उन समस्याओं के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का प्रयास किया है। जिसमें गुलाममंडी, तीसरी ताली, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, जिंदगी 50-50 जैसे उपन्यासों में किन्नर समुदाय का दुःख-दर्द, समस्याएँ एवं चुनौतियों सामान्य समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

जिंदगी 50-50 यह उपन्यास युवा लेखक भगवंत अनमोल द्वारा सन 2017 में लिखा गया है। इस उपन्यास में किन्नर समुदाय का दुःख दर्द एवं परेशानियों को व्यक्त किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में कथानायक का भाई एवं बेटा इसी समुदाय का हिस्सा है। इन समुदाय के समस्याओं को कथानायक भाई एवं पिता के रूप में देख चुका है। और इस समुदाय को लेकर उसके मन में अनेक सवाल उत्पन्न होते है और इन्ही सवालों के जवाब कथानायक स्वयं खोजने की कोशिश करता है। उपन्यास में एक ऐसे परिवार की कहानी है जहाँ एक नही दो-दो हिजडे पैदा हुवे हैं। उपन्यास का कथानायक अनमोल का बेटा किन्नर पैदा होने पर वह अपने किन्नर भाई हर्षा को याद करता है की कैसे उसके किन्नर भाई को पिता के साथ साथ समाज का प्यार नहीं मिला। वह याद करता है कि उनके घर किन्नर पैदा होने पर उनके घर हिजडों का मुखिया कस्तुरी उसे मॉगने आती है। कस्तुरी और उसके पिता का संवाद कुछ इस तरह से है, "सुना है आपके यहाँ लडकिवा हुआ है, इधर से जाती रहिन तो सोचा बधाई दे दूँ और नेग लै लू। अच्छा का नेग चाहीए? उन्होंने बिलकुल हिंदी फिल्मों की तरह मुँहों में ताव देते हुए जमींदार का रूतबा दिखया।.....

हमें जो नेग चाहिए वे हम लेके ही मानेंगे... मतलब यह है की पान के लाल लाल पिक ऑगन में ही धुकाते हुए थोड़ा नजदीक आकर कान में फुसफुसाते हुए बोलने लगी, आपके यहाँ हमारे बीरादरी के भाई ने जन्म लिया है उसे हो दे दो वही हमारी नेग है।¹ यह याद कर अनमोल मन ही मन सोचता है की जब उसके भाई के साथ जो कुछ हुआ तब वह कुछ भी नहीं कर पाया पर वह सब अब अपने बेटे के साथ नहीं होने देंगे। वह उसके अधिकार के लिए समाज का सामना करेगा।

हम सब यह बात भली भँती जानते है कि हमारे देश में किन्नरो की सामाजिक स्थिति बहुत दयनीय है। एक प्रकार से वह बहिष्कृत जीवन यापन करते है। भेदभाव के कारण वे शिक्षा हासिल नहीं कर पाते और उनके सामने भिख माँगने के अलावा दूसरा कोई पर्याय नहीं रहता। कथानायक का परिवार यह सब कुछ भूगत चूका है। घर में किन्नर बच्चा पैदा होने पर उसके माता-पिता को भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में रह रहे लोग उनहे ताने मारते है। उपन्यास में किन्नर हर्ष के पिता से कस्तुरी कहती है, "पर एक बात नोट कर ले तीवारी। हिजडे का बाप है तू, हिजडे का! और इतना आसान न है समाज में एक हिजडे का बाप बनकर जीना। सुई के नोक पर रहना होता है। इसकी चुभन से तोरा पैर ही नहीं, तोरा शरीर ही नहीं, तोरी आत्मा भी तडपेंगी... यह समाज तुझे जिने न देगा, या तु खुद मर जायेगा, या फिर तंग आकर खुद चलते हुए उस बच्चे को हमार यहाँ देने आयेगा।"² समाज के तानों का सामना जीस प्रकार से कथालेखक के पिता ने किया है उसी प्रकार से कथालेखक को भी इन चिजों से गुजरना पडा है। लेकिन इसके बावजूद वह समाज का डटकर सामना कर अपने बेटे को एक अच्छा सामाजिक जीवन देने में सफल रहता है।

इसी तरह से प्रदिप सौरभ का 'तीसरी ताली' यह उपन्यास भी इसी समाज की बात प्रस्तुत करता है। कहानी में गौतम सहाब और आनंदी आंटी के घर बच्चा पैदा होने पर नेग माँगने आये किन्नरो के डर से वे दरवाजा नहीं खोलते क्योंकि उन्हें लगता है की वे अपने बच्चे को उठाकर ले न जाए। वही दुसरी ओर उपन्यास का और एक पात्र विजय जो पेशे से पत्रकार है, वह सारी दुनिया के सामने अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ने को तैयार है, उसमें अन्याय अत्याचार के विरुद्ध लड़ने का जज्बा है, पर वह भी अपना एक सच दुनिया से छिपाकर रखता है। वह सच यह है कि वह पूर्णरूप से पुरुष नहीं बल्कि हिजडा है। समाज में हर अन्याय अत्याचार का सामना करनेवाला पत्रकार विजय इस बात से डर जाता है कि वह हिजडा है, यह बात समाज में मालूम पडने पर उसके इज्जत का क्या होगा? यह सच छिपना से समाज में वह इज्जत का जिवन यापन कर रहा है। हिजडा होने की बात अगर पहले समाज को पता चलती तो विजय आज पत्रकार नहीं बल्कि कही पर भिख मांगता नजर आता। अपना पेट भरने के लिए किन्नरो के पास भिख माँगने के सिवा कोई पर्याय नहीं बचता और दुसरी ओर उनके लिए रोजगार के अवसर ही नहीं होते या होने पर समाज उन्हें स्विकारता नहीं है। उपन्यास में किन्नरो का दुःख दर्द बयां करते लिखा है— "मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजडा बन जाऊँ, इससे किसी के कोई फर्क नहीं पडता। पेट की आग तो न जाने बड़े-बड़ों को क्या-क्या बना देता है।"³ इस विधान से यह स्पष्ट लेता की रोजी रोटी के लिए इस समाज को अनेक समस्याओं को सामना करना पडता है।

2018 में साहित्य अकादमी प्राप्त लेखिका चित्रा मुदगल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स न 203 नाला सोपारा' में लेखिका ने किन्नर समुदाय के पिडा को अभिव्यक्त किया है। उपन्यास की कहानी कुछ इस प्रकार से है —



विनोद उर्फ बित्री बचपन में सामान्य बच्चों जैसा है, लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता है यह बात समझ में आती है की वह सामान्य बच्चों से अलग है। उसके शरीर में एक प्रकार से लैंगिक विकलांगता है। जाने कैसे एक दिन यह बात हिजडों के समुदाय को पता चल गई और वह उसे लेने आ गए पर मौके पर उसकी जगह उसके छोटे भाई को दिखाकर उसे उनके पास जाने से बच्चा दिया गया। कुछ दिनों बाद विनोद उर्फ बित्री का स्कूल जाना छुट जाता है और एक दिन वह किन्नर समुदाय के पकड़ में आ ही जाता है। परिवार की बदनामी न हो इस लिए विनोद के घरवाले पहले तो अपना घर बदल लेते हैं और बाद में यह बताते हैं कि विनोद की दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

इसके बाद शुरू होता है विनोद और उसकी माँ यानी बा का चिट्ठीयोंद्वारा संवाद। चिट्ठीओं के माध्यम से विनोद उर्फ बित्री किन्नरों का दुःख दर्द, समस्या अपनी बा को बताता है। विनोद उर्फ बित्री यह चाहता है की इस समाज के रिश्ते में परिवर्तन आए वे पढ़े-लिखे उन्हें रोजगार के अवसर प्राप्त हो वह भी सामान्य समाज के प्रवाह में सम्मिलित हों। प्रख्यात लेखिका ममता कालीया इस उपन्यास के बारे में लिखती है कि – "नाला सोपारा नितांत कथावस्तु प्रस्तुत करनेवाला नये शिल्प का उपन्यास है, जिसमें लिंगभेदी समाज की समस्या को अत्यंत भावनीय दृष्टि से उठाया गया है।"

इसी प्रकार से लेखिका निर्मला भुरडीया का उपन्यास 'गुलाम मंडी' में किन्नर समाज की समस्याओं को उजागर किया है। उपन्यास की मुख्य पात्र कल्याणी और जानकी के माध्यम से तमाम तथ्यों को जिसमें अमेरिका की चमकीली दुनिया, इन्सानों की खरीद-फरोख्त समाज में फैला जात-पात रूढ़ीवाद जैसे तममा बातों को पाठको तक पहुँचाया है।

इस प्रकार से उपर्युक्त उपन्यासों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि समाज का एक अंग, घटक रहने के बावजूद अब तक उपेक्षित एवं दुर्लक्षित था। किन्नर समुदाय पर लिखे गए इन उपन्यासों के माध्यम से किन्नरों का दुःख दर्द उनकी समस्याएँ तथा उनकी सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्त कर उनके सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए और ठोस कदम उठाकर समाज के मुख्य प्रवाह में सम्मिलित करने के लिए प्रयास करना आवश्यक है, यह भी दर्शाते हैं।

संदर्भ :

1. जिंदगी 50-50 भंगवत अनमोल, पृ. 34
2. वही, पृ. 35
3. तीसरी ताली – प्रदिप सौरभ, पृ. 5
5. नवभारत टाइम्स, सितंबर 2016, ममता कालीया


PRINCIPAL

RAJIV GANDHI T.S. COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

January - March - 2019

Marathi Part - II / Hindi Part - II

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



EDITORIAL BOARD



Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Feteoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Abdul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennai 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

- Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareilly Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasant Rao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerce, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. Vitthal
School of Language and Literature
Marathi Dept. Swami Ramanand
Teerth Marathwada University, Nanded.



CONTENTS OF HINDI PART - II



अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	'अकाल में उत्सव' : क्रियाकर्म बनाम कार्यक्रम वैशाली	१-५
२	मालती जोशी और आशा बगे की कहानियों भाषा तुलनात्मक अध्ययन डॉ. अनिल साळुंखे	६-१०
३	हिन्दी में दलित कविता का स्वरूप एवम विकास प्रा. डॉ. एम. ए. काजी	११-१३
४	डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों का एक सौन्दर्यात्मक विश्लेषण डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह	१४-२२
५	उग्र राष्ट्रवाद को गढ़ता मीडिया डॉ. सरिता तिवारी	२३-२६
६	कथक कलाकार के लिये पखावज तबला तालीम की अनिवार्यता शशिकांत शर्मा प्रो. बंदना चौबे	२७-२८
७	मालवा की धार्मिक परंपराएँ और स्त्रियाँ निरूपा उपाध्याय	२९-३२
८	कबीर के काव्य में भाषा सौन्दर्य गुण अनिल पुत्र श्री गोविन्द राम	३३-३९
९	अनुवाद का महत्व : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रघुनाथ यादव	४०-४९
१०	राकेश के नाटकों में चित्रित स्त्री पुरुष संबंध : एक अध्ययन संगीता कुमारी पासी	५०-५६
११	सुचना तकनीकी संचार का खेलों में उपयोग भारतीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. ममता	५७-६०
१२	रुक्मिणी हरण परम्परा और महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव डॉ. सत्यजित कलिता	६१-६९
१३	भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती स्थितियाँ प्रा. पल्लवी जयपाल बोरकर	७०-७२
१४	महाराष्ट्र के हिंदीतर भाषियों का हिंदी प्रचार प्रसार में योगदान संत नामदेव प्रा. कृष्णा ना. घायकवाड	७३-७५
१५	धुमन्तू समाज का जाति के अनुसार व्यवसाय का वर्गीकरण डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर	७६-७७



१५. घुमन्तू समाज का जाति के अनुसार व्यवसाय का वर्गीकरण

डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

घुमन्तू समाज से ही पता चलता है कि यह समाज निरंतर भ्रमण करता है। घुमन्तू समाज के लोग व्यवसाय करने के हेतु निरंतर इधर-उधर काम करने के लिए भटकते रहते हैं। अपनी अजिविका के लिए गाँव-गाँव भटकते हैं। इसी वजह से उन्हें अपने परिवार से भी दूर रहना पड़ता है। इनमें शिक्षा का अभाव होने के कारण बच्चों का अज्ञानता का प्रमाण बढ़ रहा है। हमारे देश में अनेक जाति-धर्म के लोग रहते हैं और जाति के अनुसार ही उन्हें व्यवसाय करने पड़ते हैं। घुमन्तू जनजातियों में अनेक प्रकार के व्यवसाय होते हैं। उनमें अनेक जातियाँ आती हैं। जैसे घिसाडी, पोतराज, बैरागी, राजपूत, गारुडी, वडार, पारधी, बंजारा आदि हर जाति का अपना-अपना व्यवसाय होता है। इस कारण उनकी वेशभूषा, रहन-सहन, संस्कारों में बहुत अंतर होता है।

डॉ. गणपत राठोड लिखते हैं— बंजारा मूल में राजस्थान के होंगे। वे खुद को महाराणा प्रताप के वंशज भी कहते हैं। राजस्थान से मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र में आए होंगे। "1 बंजारा समाज के लोग ज्यादा तर घुमन्तू करने की वजह से तांडा बनाकर रहते हैं और बैलों के पीठपर माल ढोकर जंगल से जानेवाली यह जमात गाँव-गाँव घूमकर काम करती है। बंजारे पहले सौदागर के रूप में जाने जाते थे। बंजारा लोगो ने घुमन्तू करने की वजह से गुजरात, राजस्थान में बावडी जोहड टाकों का निर्माण किया था। स्त्रियाँ गौंदन गौंदती हैं, नृत्य करती, गीत-गाने बजाती हैं। बंजारा समाज के लोग बहुत ही परिश्रमी होते हैं।

वडार : वडार जनजाति के लोग भी काम करने के लिए इधर-उधर घुमते हैं। इस समाज में भी शिक्षा का अभाव होने के कारण अशिक्षित होते हैं। इन लोगों ने गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमकर कुएँ, बाँध, तालाब जैसे जल संचयनों का निर्माण किया है। राजाओं के महल, किले तथा बुरुज देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाने का कार्य इन लोगों ने किया है। इनमें शिक्षा का अभाव होने के कारण सरकारी योजनाओं से यह समाज बहुत दूर है। इन्हें अनेक योजनाओं का लाभ भी नहीं मिलता है। वडार समाज आज भी पत्थर तोड़ने का काम करता है। यह समाज गाँव-गाँव घूमकर पत्थर से अनेक प्रकार के काम करते हैं जैसे वरोटा, पाटा बनाने का काम भी यह लोग करते हैं। यह समाज पत्थर तोड़ने का काम करता है।²

घनगर घनगर समाज के लोग भेड-बकरियों चराने का काम करते हैं। भेड-बकरियों चराने का काम करने का व्यवसाय करते हैं तथा भेड-बकरियों की खाल के घोंगडी, चादर बनाने का, बेचने का काम भी करते हैं। खाने और ओड़ने के लिए कंबल बनाने का तथा बेचने का काम भी यह करते हैं। यह लोग बहुत ही परिश्रमी तथा मेहनती होते हैं। यह समाज भी घुमन्तू करता रहता है।

PRINCIPAL

RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAO
TQ. & DIST. AURANGABAD.



परदेशी :- परदेशी जनजाति के लोग भी अनेक प्रदेशों में घूमने की वजह से इन्हें भी परदेशी कहते हैं। परदेशी समाज में अन्य जातियाँ भी आती हैं मोची,तेली,कलाल,बैरागी। इनको भी परदेशी ही कहा जाता है। बैरागी लोग गाँव-गाँव में नाच-गाना कर लोगों का मनोरंजन करने का काम करते हैं। मोची समाज के लोग जूते बनाने तथा बेचने का व्यवसाय करते हैं तथा जूत सिलाई करने का काम भी मोची समाज ही करता है। यह समाज अपने जूते अनेक राज्यों में बेचने का व्यवसाय करते हैं। चमड़ेसे जो भी वस्तुएँ बनती हैं, वह करने का काम करते हैं। कलाल लोगों को ही परदेशी भी कहते हैं। यह लोग अनेक व्यवसाय करने का काम करते हैं जैसे बड़े-बड़े होटल तथा होटलों में तथा दारु की दूकाने इन्हीं की होती है। अनेक व्यवसाय तथा व्यापार कर यह लोग अपनी उपजीविका करते हैं। इनमें भी शिक्षा का अभाव होता है।

लमाण-लमाणी : लमाण समाज के लोग भी व्यवसाय करने के लिए घुमंतू करते रहते हैं। यह लोग गिट्टी तोड़ने का काम करते हैं। यह समाज भी पत्थर पीसकर अपना पेट पालते हैं। तथा खेती कर अपनी उपजीविका कर रहे हैं।

कोल्हाटी :- कोल्हाटी जनजाति के लोगो के यहाँ लडकी होना भाग्य का मानते हैं। जितनी खुशी उन्हें लडकी होने पर होती है उतनी खुशी बेटा होने पर नहीं होती है। लडकी होने से उनका व्यवसाय अधिक अच्छा होता है। क्योंकि यह समाज के लोग गाँव-दर-गाँव घुमते हैं। ढोल-ताशा बजाकर गाँववालों का मनोरंजन करते हैं। तथा डोर पर चलना,छलांग लगाना,पत्थर पर उपर उछाल के सिने पर लेना,रिंग को आग लगाकर उसमें से जाना तथा तमाशा में लडकियों को नचाने का काम भी यह लोग करते हैं। कोल्हाटी समाज में अशिक्षा का प्रभाव अधिक है। उन्हें वक्त पर अनाज भी नहीं मिलता है। गाँव-गाँव घूमकर अपना पेट पालते हैं।

वाघ्या मूरळी :- वाघ्या मूरळी जनजाति के लोग भी गाँव-गाँव,शहर-शहर घूम-घूमकर अपना पेट भरते हैं वाघ्या-मूरळी जनजाति खंडोबा भगवान को मानते हैं। तथा इस देवता को उन्हें छोड(वहन) दिया जाता है। इस वजह से स्त्री-पुरुष बचपन से इसकी विधि करने में विलीन होते हैं। विवाह के वक्त या खंडोबा देवता का जब जागरण गोंधळ होता है,तो वहाँ पर यह जाकर नाच-गाना करते हैं। यह वाघ्या-मूरळी भिक्षा मांगना तथा वारी मांगने का भी काम करते हैं। दिमडी,खंजीर,तुणतूणे,टाळी आदि भी बजाकर लोगों का मनोरंजन करते हैं।

निष्कर्षत

घुमंतू समाज में अनेक जाति-धर्म के लोग आते हैं। घुमंतू समाज के लोग गाँव-गाँव घूमकर व्यवसाय करते थे। एक जगह पर वह कभी भी नहीं रहते थे। अस्थायी न होने के कारण उन्हें घुमंतू कहा जाता था। उनमें अनेक जाति के लोग अलग-अलग व्यवसाय करते हैं। कोल्हाटी समाज के लोग गाँव-गाँव,शहर-शहर घूमकर तमाशा कर नाच-गाना कर लोगों का मनोरंजन करते हैं। पोतराज भी देवी-देवताओं की पूजा कर घूमते हैं और अपना व्यवसाय करते हैं। मोची लोग जूते बेचने तथा सिलाई का काम करते हैं।

संदर्भ

1. घुमंतू जनजातियों का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ.गणपत राठोड
2. घुमंतू जनजातियों का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ.गजानन राठोड
3. घुमंतू जनजातियों का वास्तव जीवन : डॉ.ईश्वर पवार


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
DIST. AURANGABAD.

Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 145 • Feb. 2019 • ISSN – 2349-1743

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal



One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's
Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,
Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

... Guest Editor ...

Dr. P. P. Sharma
Principal

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Executive Editor ...

Dr. S. S. Chouthaiwale (English)

Dr. A. T. More (Marathi)

Dr. P. S. Patil (Hindi)

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 145 • Feb. 2019 • ISSN – 2232-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal



One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's
Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,
Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

Printed by

PRASHANT PUBLICATIONS

3, Pratap Nagar, Sant Dnyaneshwar Mandir Road, Near Nutan Maratha Mahavidyalaya, Jalgaon.
Website: www.prashantpublications.com Email: prashantpublication.jal@gmail.com
Ph: 0257-2235520, 2232800, 9665626717, 9421636460

EDITORIAL POLICIES - Views expressed in the papers / articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inadvertent omissions.

हिंदी

८४.	आधुनिक हिन्दी कविता में किसान की वेदना	२३२
	डॉ. अमित कुमार सिंह कुशवाहा	
८५.	मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री-विमर्श अगनपाखी उपन्यास के संदर्भ में	२३९
	प्रा.डॉ.सांगोले शिवाजी	
८६.	मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री विमर्श 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में	२४१
	डॉ. अधिनीकुमार चिचौलीकर	
८७.	हिंदी विभाजन के उपन्यासों का अंग्रेजी में अनुवाद.....	२४३
	प्रा. पी. बी. सावंत	
८८.	जीरो रोड की वैश्विकता और वैश्विकरण	२४५
	डॉ. शेख अफरोज फातेमा	
८९.	आधे-अधुरे जीवन की कहानी - अस्तित्व और पहचान.....	२४७
	प्रा. डॉ. कुसुम राणा	
९०.	हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद का हिंदी सिनेमा में योगदान.....	२४९
	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	
९१.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी की बदलती भूमिका.....	२५१
	डॉ.राजश्री भामरे	
९२.	आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (प्रेमचंद के संदर्भ में)	२५३
	प्रा. पठाण जयनुल्लाखान	
९३.	आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विमर्श.....	२५६
	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	
९४.	२१ वीं सदी के हिंदी साहित्य में मानवतावाद.....	२५९
	डॉ. विनोद श्रीराम जाधव	
९५.	समकालीन हिंदी काव्य में मानवतावाद.....	२६२
	डॉ. संतोष विजय घेरावार	
९६.	'किन्नरों के संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति' (चित्रा मुद्गल कृत 'नाला सोपारा' के संदर्भ में)	२६५
	प्रा. डॉ. वेबले ए. जे.	
९७.	ट्रैड : आधुनिक जीवन में उत्पन्न (अंतहीन दीड का संवेदनात्मक चित्रण)	२६८
	डॉ.गजाला बसीम अब्दुल बशीर शेख	
९८.	आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	२७०
	सुख्खा एस. लक्कस	
९९.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान और कल्पना	२७३
	डा.निर्मला लक्ष्मण जाधव	
१००.	हिंदी आत्मकथा में स्त्री	२७५
	डॉ. रिना आर. सुडकर	
१०१.	दूरसंचार माध्यमों में हिंदी विज्ञापनों का महत्त्व	२७७
	डॉ. अमनुल्ला शेख	
१०२.	हिंदी कहानियों में नारी विमर्श	२७९
	डॉ. वेड एस. डी.	
१०३.	विश्व के विविध देशों में हिंदी की दिशा एवं दशा	२८१
	डॉ. दत्तात्रय नानासाहेब फुके	
१०४.	सूंडलीकरण और हिंदीउपन्यास	२८४
	डॉ. सुन्दर कुमारी सिन्हा	

मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री विमर्श 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में

डॉ. अश्विनीकुमार चिचौलीकर

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय करमाड, जि. औरंगाबाद



बीसवीं सदी के अंतिम दशक की महत्वपूर्ण रचनाकार मैत्रयी पुष्पा ने हिंदी साहित्य जगत में अपनी विमर्शपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं। बीसवीं शताब्दी का अंतिम दशक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक सभी दृष्टि से बदलाव की चरमसीमा का कालखंड है। इस युग में नारी का पुरुष के साथ संघर्ष बढ़ता गया। नारी की अस्मिता जागृत हो चुकी है। नौकरी के बहाने घर के बाहर पड़ चुकी नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन चुकी है। बाहरी वातावरण ने नारी को मुक्त वातावरण में संचार करने के लिए बाध्य किया। सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया स्त्री को मनुष्य न मानकर केवल वस्तु अथवा देह के रूप में देखने की प्रवृत्ति पर विमर्श विचार करता है। तथ्य यह है कि मानव समाज में अगर संतुलन बनाए रखना है, तो एक को दबाकर दूसरा अपना अस्तित्व बनाए नहीं रह सकता है वैश्विकरण के दौर में नारी जीवन की महत्ता को लेकर काफी स्त्री विमर्श हुआ है। जिसे साहित्य में स्त्री-विमर्श कहा गया है साहित्य में इस प्रकार का प्रयास बीसवीं सदी के अंतिम कुछ दशक से हो रहा है। राजेन्द्र यादव मानते हैं कि- "स्त्री विमर्श बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही आया है। यह स्त्री इतिहास और वर्तमान को एक स्वतंत्र अस्मिता देता है"। कहना सही होगा कि नारी को अस्तित्व का बोध होना, स्व के प्रति जागरूक, शोषण एवं दमन का विरोध करना और समानाधिकार की माँग करना ही स्त्री विमर्श है। मैत्रयी पुष्पा का हिंदी उपन्यास मूल विजन २००२ में प्रकाशित किया विजन मैत्रयी पुष्पा का नारीवाद पर लिखित बहुचर्चित उपन्यास है। पितृसत्ताक समाज के भीतर नारी सशक्तिकरण और नारी के उत्थान की बात विजन मैत्रयी पुष्पा का रहा है जो सार्थक सिद्ध हुआ है। विजन की कथा नारी के जीवन के संघर्ष और रूढ़िवादी जीवन प्रणाली को उभारती है। दो महिला तबीयों के जीवन संघर्ष की कथा है। जो तबावी क्षेत्र जिनका पेशा है इनका पेशाहि इनकी पहचान है यह उपन्यास विजन की खोज करता नारी के जीवन का संघर्ष को उपन्यास में चित्रित किया है नारी के जीवन के हर पहलुओं पर चित्रित किया है। विजन में लेखिका ने दो प्रकार की नारियों का चित्रण किया है। व्यवस्था के चक्रव्यूह में फंसी नारी और व्यवस्था के विरोध में विद्रोहिणी नारी उपन्यास में यदि संवेदनशीलता को देखा जाय तो विजन उपन्यासमें नेहा के अंतर्गत में कुंठा और घृटन निर्माण हो रही है। उसे यह पता है कि उसका शोषण हो रहा है। परंतु वह कुछ नहीं कर पा रही है। तब वह अस्वस्थ हो जाती है। और एक निर्व्यवस्था अवस्था में बैठी रहती है। अस्तपाल में जहाँ सब लोग व्यस्त है वहाँ नेहा अशांत में शांत बैठी है। नेहा का वृद्ध गहरी संवेदना का चाँचयक है वह पती के बारे में सोचती है तो स्वतः को न्याय नहीं दे पाती है जो अन्याय सहाता है वह अन्याय करनेवालों से भी बढ़कर न्यायहीन है। नेहा का यह अंतर्द्वंद्व उसकी प्रतिभा की चुनौती है। वह यह नहीं चाहती कि कुछ हानि हो परंतु वह आत्मसम्मान चाहती है। जो उसके ज्ञान के क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। उसे औरत बनने की यह सजा मिल रही थी। पर सुन मेरी बच्ची अपनी कटी हुई हथेलियों न फैलाया, उस बनने वाले के सामने कि पिछली बार तुझे बनाते समय जो भूल की थी, उसे सुधार ले! नहीं, तुझे फिर वही बमना है! फिर-फिर औरत! जो जन्म तक ओब तक औरत, जब तक तेरे हस्से का आसमान तेरे और सिर्फ तेरे नाम न कर दिया जाय।"२.

नेहा के मन में घृटन और कुंठा निर्मित हो रही है उन्हे यह पता है कि उसका और उसके ज्ञान का शोषण हो रहा है। परंतु उसका संस्कारित मन विद्रोह करने के बदले केवल सहता रहता है। वह अपने ससुर और पति के सामने असहाय बनकर रह जाती है। वह सोचती बहुत है परंतु कुछ नहीं कर पाती। वह यहाँ तक निर्णय लेती है कि अब इस सब बातों से मुक्त होना है। इसलिए गृहस्थ जीवन को छोड़ना होगा। परंतु उसका संस्कारित मन उसे यह सब करने नहीं देता जो वह अपने पति को तलाक भी नहीं दे पाती। नेहा बहुत कुछ करने की उम्मीद रखकर भी कुछ भी न कर पाने की बातना भोग रही है। उसे यह बात अंदर से खाये जा रही है कि उसके ज्ञान का और शोषण हो रहा है। वह उससे मुक्ति पाने के लिए उड़ान भी बन चुकी है परंतु जैसे उसके पर काट दिये गये है।

उपन्यास की आभा द्विवेदी की मानसिकता इसी प्रकार की है वह पति से सहयोग एवं प्यार पाना चाहती है। परंतु पढा-लिखा

डॉ पति मुकुल उसकी भावनाओं को नहीं समझ पाता वह उच्चशिक्षित पति को मारकर अपना पौरुषी धाक जमाना चाहता है, तब वह चुप नहीं बैठे सकती। पति का मार खाकर चूपचाप उसके साथ रहनेवाली मजबूर स्त्रियों जैसी मानसिकता डॉ आभा की नहीं है। वह परंपरागत पति बनकर पति का हर जुल्म सहने की अपेक्षा उसका खुलकर विरोध करती है। अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए वह पति से बेझिझक तलाक लेती है डॉ.भाभा का स्वाभिमान पुरुष के सामने झुकता नहीं बल्की वह निडर कहती है। मुकुल, आई वॉन्ट डायवर्स कोई कितना ही प्यार क्यों न हो, अगर धोखा देता है तो.....कोई कितना भी अपना क्यों न हो, अगर यातना देता है तो.....मुकुल, किसी को हक नहीं दूसरों को ऐसा सदमा दे कि उसका संतुलन बिगडने लगे तुम कह सकते हो, हमारे मुल्क पति अपनी पत्नी की पीट देता है। तो नया क्या है? मानती हूँ, तमाम स्त्रियाँ मार खाते-खोते जीवनमापन करती रहती है, मगर मुकुल न तो तुम

उन पतियों जैसे जाहिल थे, न में ही उन पत्नीयों जैसी लाचार.....में तुम्हारे उस खूबूर पौरुषार्थ को नहीं झेल पाई।" डॉ. आभा को पुरुष प्रधान समाज द्वारा बनाये गये खोखले आदर्श की खाल से बाहर निकलकर मनुष्य की रूप में जीने की इच्छाशक्ति और साहस ही अपने पति से अलग करती है। वह अर्थिक दृष्टि से स्वयं निर्भर है, उसे पिता या भाई के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं है। पूंजीवाद स्त्री-दत्तन का मुख्य कारण है पितृसत्ता नहीं। डॉ.आभा तलाक लेने का क्रूर निर्णय लेकर स्वतंत्र रूप से अपना जीवनमापन कर सकती है। परंतु डॉ आभा पति के बाद किसी अन्य पुरुष को अपने-जीवन में स्थात नहीं देती। पति के इतने क्रूर रूप को देखने के बावजूद आभा और स्नाक महिला का भावनात्मक जुड़ाव मुकुल से खत्म नहीं होता उसकी बगह और कोई नहीं लेता।

मैत्रयी पुष्पा की नारियाँ अपनी देह पर पति का नहीं बल्कि अपना अधिकार समझती हुई प्राकृतिक जीना आवश्यक ही नहीं तो अनिवां समझती है। उसे धीरज देने वाला, समझने वाला, उसकी खुशियों को जाननेवाला या उसके लक्ष्य में सहयोग देने वाला कोई भी अर्थात किसी भी जाति निर्भिक साहसी या दिलेर योद्धा हो, उसे सरोवर में खींच लेती है।

उपन्यास में डॉ. नेहा और डॉ. आभा भी विद्रोही व्यक्तित्व की नारियाँ हैं। डॉ. आभा अपने नेत्र-चिकित्सा व्यवसाय में नारी की स्थिति को दिखाने का प्रयास करती है। वह कहती है- कमाल है, अपनी शारीरिक ताकत के बल पुरुष हर अधिकार छीन लेना चाहता है। दुनिया का कर्ता धर्ता बना हुआ है। देख रहे हैं कि थोड़े से मेल डॉक्टरों से औरतों की मरीजों की और छोटे लोगों की दर चीटी जैसी कर दी है। ऐसा अब नहीं होता रहेगा। सबकी अपनी एक जगह होती है। मरीज है तो हम है। छोटे कर्मचारी है तो हम सफेदपोश है और इस जगत में बुद्धि और ज्ञान की जगह है तो स्त्रियाँ अपना बेहतर परिचय देगी ४

समाज में परिवर्तन आया है परिवर्तन के इस दौर पर स्त्री भी आंग बढती है। परन्तु आज भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी स्त्री-पुरुष के वर्चस्व में दबी नारी अवसर से वंचित है। डॉ. नेहा मानसिक रूप में विद्रोही है। किन्तु व्यावहारिक रूप से समझौता करने वाली है अतः वह व्यवस्था के चक्रव्यूह में पुरी तरह फंसी है। उसके पास है प्रतिष्ठित कॉलेज से डॉक्टर बन जानेका शिष्ट अहंकार, मेडल और पत्तों की पूंजी, साथ ही योग्यता और प्रतिभा फिर ससुर और पति दोनों उसके कैरियर पर बलत्कार हुआ है। अपने ही ससुर के अस्पृह में डॉ. नेहा को जब अपनी योग्यता की जान बुझकर उपेक्षा दिखाई गी है तब वह अधिक व्यथित होती है। एक कुशल डॉक्टर होंटे हुए भी नेहा को उसके ससुर ने जान बुझकर हाथ नहीं लगाने

दिया, इस डर से कि कही बेटे से जल्द ही वह निपुण न बन सकेगी यही नहीं, नेत्र चिकित्सा के समय गलत इन्वेक्शन दिये जाने से मरीज के अस्वस्थ होने पर दो बाहर के डॉक्टर बुलाये जाते हैं, डॉ. नेहा को उसके योग्य भी नहीं माना जाता है। किन्तु मरीज की सफा होने पर उसके ससुर वहाँ से निकल जाते हैं और पति डॉ. अजय मदद के लिए पत्नी डॉ. नेहा के सामने गिडगिडाता है। इसलिए कि डॉ. नेहा इस मौत की जिम्मेदारी स्वयं पर ले और अपने स्त्रीत्व का उपयोग कर शरण आई सेंटर को बदनाम से बचाए। वचना और उपेक्षा की शिकार बनी नेहा का विद्रोह ठण्डा पड जाता है। वह इस अंधेरी व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलंद करते अर्थात संघर्ष करने का संदेश देती है कि अंधेरों में से धीरे से मत निकलो, अंधेरों खिलाफ गुस्सेवर आवाज उठाओं। किन्तु अजय की बात से समझौता करते हुए ही उस समझौते और अंतर्द्वन्द्व से पीडित डॉ.नेहा अपना मानसिक संतुलन खो जाने के कारण व्यर्थ बडबडाने लगती है। डर के मोरे नर्स डॉ. अजय की ओर भागती है और कहती है, सर डॉ.नेहा को कुछ हो गया है, डॉ. नेहफख

डॉ. नेहा का अंतर्द्वन्द्व गहरी संवेदना का परिचायक है वह अपने पति के बारे में समाज के बारे में परिवार के बारे में सोचती है इसलिए, खुद को न्याय नहीं दे पाती है। उसके मन में यह विचार बार-बार आता है कि जो अन्याय सहता है वह अन्याय करने वाले से भी बढकर गुनाहगार होता है।

उपसंहार :

विजन उपन्यास में लेखिकाने चिकित्सा क्षेत्र और व्यवसाय को प्रस्तुत किया है। इसके जरिए सम्पूर्ण भारतीय समाज को डोलकर रख दिया है, जिसमें दकियानूसी, मध्यमवर्गीय समाज, महानगरी जीवन, शहरी जीवन, परम्पराओं को अपने कंधों पर लादे उसे ढोने के लिए अभिशप्त पढे लिखे तबके जीवन, अन्याय एवं दमन का साहस और क्षमता से विरोध करने वाली विद्रोही नारी तथा दमन को बर्दाश्त करने वाली नारी आदि का चित्रण किया है मैत्रीवी जीने उस समाज के मन मस्तिष्क की चिकित्सा को आवश्यक और अनिवार्य मानती है। समाज की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक ही अपने आचार, विचार और व्यवहार द्वारा समाज में ऐसे चक्रव्यूह कि सृष्टि काता है, जिसमें शोषण की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो। इस उपन्यास के द्वारा लेखिका की दृष्टि की अपेक्षा दृष्टिकोण की चिकित्सा होती है।

संदर्भ :

१. स. राजेन्द्र वादव-हंस- संपादकीय से जनवरी २००५.
२. विजन-मैत्रयी पुष्पा पृ.८६
३. विजन-मैत्रयी पुष्पा पृ.१२९
४. विजन-मैत्रयी पुष्पा पृ.१४५
५. विजन-मैत्रयी पुष्पा पृ.२१२

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD

Website : www.rcsresearchjournal.com

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2319-7143



INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFERENCE & INDEXED JOURNAL

August-2018 Special Issue - LXI

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar
Assist. Professor,
Dept. of Marathi,
MGV's Arts and Commerce College, Yeola
Dist. Nashik (M.S.) India.

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :

- University Grants Commission (UGC) List No. 40708
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- Indian Citation Index (ICI)
- International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon.
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- ❖ Dr. G. Haresh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- ❖ Dr. Samjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon
- ❖ Dr. P. K. Shewale - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul.
- ❖ Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik.
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, KCES's IMR College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sandip Mali - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Science and Commerce College, Shindkheda

Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna kotic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- ❖ Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- ❖ Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBPD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Act. Principal, MGV'S Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik

Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
- ❖ Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hind' Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258



दलित कविता आणि सद्यस्थिती

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहींगार
 भारती विभाग प्रमुख
 राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड जं. औरंगाबाद
 मो. ९४२२२४५३०९



प्रस्तावना :

भारती साहित्य अनेक वाङ्मय प्रवाहाने विकसित झाले आहे. त्या विकसित साहित्यामध्ये प्रामुख्याने संत साहित्य, दलित, बाण, आदिवासी आणि स्वतंत्रता साहित्य या साहित्यांचा समावेश होतो. त्या विकसित साहित्य प्रवाहामध्ये मराठी वाङ्मयात दलित साहित्याने मोलाची भर टाकली आहे. भारत स्वातंत्र्यानंतर जरी भारतात लोकशाही आणि शिक्षण आणि आरोग्य या आजही दलित उर्ध्वगत वर्ग सामाजिक स्वातंत्र्यापासून पूर्णपणे वंचित झाला नाही. म्हणून त्याच विषयामध्ये दलित साहित्यात दलित कविता अन्वाचाराचा फांद्यासाठी उदयाला आली. दलित साहित्यातील दलित कविता या वाङ्मयात अन्वयानुसार नकार, चेदना आणि विद्रोह इत्यादी जळजळ, कळकळ आणि तळमळही तळमळीतले शब्दांच्या वर्णाने व्यक्त झाले आहे. म्हणून या शोधनिबंधामध्ये दलित कविता आणि सद्यस्थिती या विषयावर चर्चा करणार आहोत.

संश्लेषित साहित्यात, दलित कवयित्री, दलित आत्मकथन, कथा या साहित्यप्रकारांपैकी दलित कविता ही आभक्त कविता व भेदक आणि वास्तवरुपात साक्षर झाली आहे. कारण की दलित कव्यातील अनुभव आतंग्य दाहक व अस्वस्थ आहे. म्हणून त्या अनुभवाची जात वेगळी, भाषा वेगळी आणि बांधिलकी वेगळी आहे. म्हणून या वेगळेपणाच्या प्रत्येक घटक महत्वाचे प्रेरित होऊन दलित कविता व्यक्त केली जाते. दलित साहित्यातील सद्यस्थितीच्या अनुभवांचे प्रत्येक घटक महत्वाचे प्रेरित होऊन दलित कविता व्यक्त केली जाते. दलित साहित्यातील सद्यस्थितीच्या अनुभवांचे प्रत्येक घटक महत्वाचे प्रेरित होऊन दलित कविता व्यक्त केली जाते. दलित साहित्यातील सद्यस्थितीच्या अनुभवांचे प्रत्येक घटक महत्वाचे प्रेरित होऊन दलित कविता व्यक्त केली जाते.

सद्यस्थितीचे उद्दिष्ट :-

- 1. दलित साहित्यातील दलित कविता म्हणजे काय ? ते व्याख्येसह स्पष्ट करणे.
- 2. दलित कवितेचे स्वरूप सांगून सद्यस्थितीचे विषय करणे.
- 3. दलित कवितेचा आढावा घेऊन सद्यस्थितीचा आढावा घेणे.
- 4. दलित कविता आणि सद्यस्थिती यांचे साधक - दाहक चर्चा करणे.

सद्यस्थितीचे विषय :-

दलित कविता आणि सद्यस्थिती

दलित साहित्य म्हणजे दलित लोकांच्या दलित जाणीवने दलितनांचे दुःख, अन्वाय आणि अन्वाचार साक्षर व व्यक्त म्हणजे दलित साहित्य होय. दलित म्हणजे भेदक काय ? हे व्यक्त करताना डॉ. म. ना. वाजपेठे म्हणतात - दलित साहित्याची व्याख्या केवळ शब्द अन्वाय सांगायचीच नाही तर जे जे पिढ्याने गेलंलं असे श्रमजोखे आहेत ते साहित्यात व्यक्त व व्याख्येने येतात. "१ अशाप्रकारे दलित ही संकल्पना अतिशय व्यापक आहे हे बरोच व्याख्येवरून सिद्ध होईल व्याख्येच्या अनुषंगाने दलित कवितेची व्याख्या पहालप्रमाणे स्पष्ट करता येते.

दलित कविताची व्याख्या :-

येवकुसाचाहरण्या जाती, भूपोहीम शोभनजूर, आदिवासी असा मोठा कॅनव्हास दलित कविता या शब्दामाग म्हणून असा आशय व्यक्त करणाऱ्या भावना म्हणजे दलित कविता होय."२ - दया पवार (कांडवाडी)



१. "मी पाहिलेले जग, जीवन आणि घेतलेले अनुभव एवढे अक्राळ विक्राळ आहे की, कवीने काव्येचा तर रत्नहाचीच पण असा अर्थ उचवून घ्या - जो वाचकाने जसे वाचला भावभावना ज्या काव्यात शब्दव्यंज होताने त्याला काव्येचे काव्येचे म्हणतात" ३- प्रचारक चंद्रवदनकर (आंबेडकर)

व्यापकतेची काव्येच्या व्यापकतेच्या संदर्भात दलित ही संकल्पना काव्येच्या अनुपंगाने मूळाला दलित काव्येची भूमिका वगळून घ्यावासातच ओळखता येते आहे. कारण की, १९५६ च्या धर्मोत्तरानंतर दलित माणूस माणसात आला. नंतर दलित चळवळ ह्या सामाजिक परिघटनांच्या माध्यमातून निर्माण झाल्या आणि बरोच व्यापकतेच्या अनुपंगाने दलित काव्येचा उदयास आला आहे. म्हणून दलित चळवळीचा आणि दलित काव्येचा अंतर्भाव अवळ्या संकेत आहे. दलित काव्येची व्यापकता सगळ्या चौखामळ्यापासून ते केशवसुत, किसन फागुजी बनसाई, दया पवार, चामनराव कडक, विमलधु, केशव मेश्राम, यशवंत मनोहर, ज.वि.पवार, नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, चामन निंबाळकर आणि इतर दलित कवींनी दलित काव्यात वास्तवाचे भिषण चित्र उभे केले आहे. त्यामुळेच मराठी वाङ्मयाला दलित काव्येने दखल घेण्यास भाग पाडले आहे.

दलित काव्यता : सद्यस्थितीचे स्वरूप :-

साहित्य हा समाजाचा आरसा आहे असे म्हटल्यामुळे समाजात अशांत आरशात माणसाचे प्रतिबिंब दिवते. अशांत त्याच्या वेदना, दुःख, जगणे, भागणे, हे सर्व समाजात घडते. त्याच अनुभवाचे रूपांतर कवी दलित काव्येने व्यक्त करत असतो. म्हणून दलित साहित्यावर पुत्री काही आक्षेप घेतल्या गेले आहेत की, दलित साहित्य एकसुरी आहे, प्रचारकच आहे. त्याच व्यक्ती व्यक्त झाली नाही. वरून आक्रस्ताळीपणे आढळते. पण मानवी मूल्य जीवित व जतन करताना मानवी मूल्याचा उदयोप हा साहित्यातून व्यक्त होत असतो. "दलित लेखकाची वेदना ही त्याची स्वतःची वेदना आहे. त्यामुळे ह्या लेखकाचा भावना वेदनेपासून नाळ तोडता येत नाही. दलित काव्येतील (साहित्यातील) प्रश्न हे स्वतःचे वेदनाकारण, कवीने त्याच्या समाजाचे प्रश्न असल्यामुळे या लेखकांना किंवा कवीला तटस्थ राहता येत नाही." ४

दलित साहित्यावरील आक्षेप सद्यस्थितीत टिकत नाहीत. कारण की, सद्यस्थितीतही दलित कवी आपल्या भावना, वेदना, दुःख पुर्वीच्या एकसुरीपणाने काव्यात व्यक्त करत नाही कारण की, आज लोक २१ व्या शतकातच जन्म जगत असले तरी २१ वे शतक हे जागृतीकरण, खाजगीकरण आणि उदारीकरणाचे धोरण आणि संगणकीय युग हे शब्द क्रांतीकरण वाटत असले तरी, दलितकावी व्यथा व वेदना, दुःखाचा रंग आणि सामाजिक जीवनमूल्य पाहजे त्या प्रमाणाने बदललेले नाहीत. आजही दलितकावी वाट्याला उपेक्षितांचे जीवन, जातीय दंगली येतात. पाहजे तो जीवनमूल्य व सामाजिक परिघटना सद्यस्थितीतही आमच्या वाट्याला आले नाही. बरोच विकासाची अनेक टप्पे आम्हाला सांगितले आत आम्ही तऱ्हा विकासाची, परिघटनाची खरी "आई" सद्यस्थितीतही आम्हाला मिळाली नाही म्हणून कवी यशवंत मनोहर लिखतात ...

"दुर्नशेत चंद्र सूर्यांच्या
 मज कुणीच घेतले नाही
 या जन्माचा कधी माझ्या
 कुणी आई झालेच नाही."

- यशवंत मनोहर ५

किंवा

प्रा.केशव मेश्राम बरोचप्रमाणे 'हे गलत्यांचे शहर' या काव्येने सद्यस्थिती व्यक्त करताना म्हणतात की, सद्यस्थितीतील मुंबई मधील 'समुद्र' ही अग्रांतम बांताकी प्रतिमा घेऊन प्रा.केशव मेश्राम लिहीतात.
 "मी बघतो आदलेले समुद्र
 त्यांनी केलेली वेडेमानी, तडजोड कितीच्या नारळासाठी



समुद्र झुकले घुटव्या मांडांच्या बुंध्याशी
पंरापंरांसाठी नाकरीची भीक मागत
समुद्र गातात गांडया मटव्यांचे पवाडे
स्वतः महासागर म्हणून जाहीर होण्यासाठी
समुद्रानी लहोली वाटेल तेव्हा गाणी रीडोव्हा
दिल्या टिन्हीवर भडक वृश शवंत मुलाम्बती
समुद्राने मांगतले फस्टे क्लासचे विमानभत्ते"द

शरीरप्रमाणे कवी शवंत मनोहर आणि प्रा.केशव पेश्राम यांनी सद्यस्थितीची जाणोव आधुनिक दलित काव्यतंत अनेक स्थितींत राहत्या रूपाने वारतवरुपात मांडली आहे. समुद्र आणि आई ही प्रतिमा घेऊन वरील दलित कवींनी माणुसकीची जोडून मुल्य जपली आहेत. सद्यस्थितीतही मानवी मुखवटे धारण करणारी अहंकारी, लाचार, वेगळी माणसो दलित काव्यतंत कवींनी धिक्कारली आहेत. सहनशीलतेने, नम्रतेने अन्याय, समानतेचे सांग, वेदना काव्यतंत दुःख, भावना इत्यादी समस्या बंशीवर टांगण्यासाठी सद्यस्थितीतही दलित कविता व कवी सज्ज आहेत. कारण आजही अपेक्षित असलेले यश, वैभय, पराक्रम, विक्रम आणि परिवर्तन सामान्य दलित कविनेच्या मनाप्रमाणे दलित माणसाच्या वाट्याला सद्यस्थितीतही आले नाही. याची खंत भावी काळातही कवी दलित काव्यात व्यक्त करून वर्णन करतील अशी अपेक्षा सद्यस्थितीत या शोधनिबंधाच्या अनुषंगाने व्यक्त करता येते.

निष्कर्ष :-

दलित काव्यता आणि सद्यस्थितीत या शोधनिबंधातील निष्कर्ष असा आहे की, चौखामेट्टा पासून ते आजपर्यंत दलित काव्यता ही मानवी मुल्यांचा स्विकार करत आलेली आहे. पुढेही करत राहणार आहे. मानवी जीवनमुल्य स्विकारताना त्यांना त्यांच्या वाट्याला आलेला नकार, वेदना, विद्रोह आणि विषमता यांचा आग आजही दलित काव्यतंत प्रकयाने जाणवत रावते. ही आग, वेदना आणि शोषण पुर्वीही समाजात होती. आजही आहे पण फरक तो एवढाच की, त्यांचे स्वरुप व रंग बदलले आहेत. अर्थात अन्याय, अत्याचार, प्रतिकार आणि विरोध यांच्या स्वरुपात फक्त सद्यस्थितीत फरक आहे. पण यांच्या प्रमाणात तळागाळात अन्याय अत्याचाराची ही धग आजही कायम आहे. ती सद्यस्थितीतही दलित काव्यतंत व्यक्त झेली जाते. सद्यस्थितीत दलितताची गता व स्थिती अशी आहे की, पाटी बदलली पण दुकान तेच आहे अशी आहे. याप्रमाणे सद्यस्थितीतही दलिततावर सामाजिक, राजकीय, नैतिक अत्याचार चालूच आहेत. महात्मा ज्यातिबा फुले, राजषी शाहू, चक्रवर्ती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांना आभयाने असलेली पूर्णपणे सामाजिक क्रांती आणि परीचतन झालेले नाही. यापेक्षा तळागाळातील शोषटव्या माणसाची सामाजिक, शैक्षणिक, राजकीय, आर्थिक प्रगती होत नाही. तांपेक्षा लवकर सामाजिक क्रांतीचा लढा चळवळीच्या, काव्याच्या माध्यमातून चालूच राहिल हे कोणीही नाकारू शकत नाही. म्हणून भावी दलित काव्यतंतही ही धग ध आग वारतच अनुभवातून भावी दलित कवी वाडऱ्यात व्यक्त करतील अशी अपेक्षा या शोधनिबंधातून व्यक्त केली आहे.

संदर्भ साहित्य

1. तरणकुमार लिंबाळें, 'दलित साहित्याचे शोधनिबंध', दिलीपराज प्रकाशन प्रा.लि.पुणे पृ.क्र.२७-२९, (१९७६) 'दलित साहित्य'.
2. अश्वशोच भाषण, दलित साहित्य संमेलन नागपूर १९७६.)
3. 'गांधी पत्र', कोड्यादा (काव्यसंग्रह), मनागत पृ.क्र.९
4. 'सुहाद चंद्रवर्णकर', अंतोड, मनागत पृ.क्र.७
5. तरणकुमार लिंबाळें, 'दलित साहित्याचे शोधनिबंध', दिलीपराज प्रकाशन प्रा.लि.पुणे तृतीय आवृत्ती, (१९७६) 'दलित साहित्य'.
6. 'मालचंद्र फडके', वेदना आणि विद्रोह खोल्या प्रकाशन पुणे पुनमुद्रण प्रथमावृत्ती २९ सप्टेंबर २०१७ पृ.क्र.२६९
7. शवंत (पुनमुद्रण प्रथमावृत्ती २९ सप्टेंबर २०१७ पृ.क्र.२६६)


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, KARMADE
TQ. & DIST. AURANGABAD



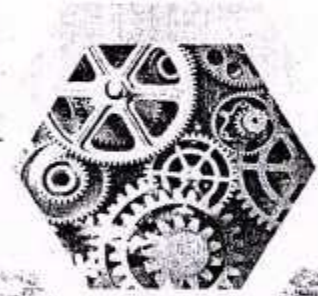
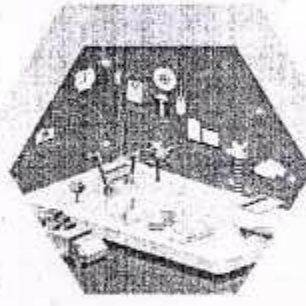
Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277-5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume-VII, Issue-III

September-2018

English Part-IV/

Marathi Part-III

IMPACT FACTOR/ INDEXING

2018-5.5

www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII

Issue - III

July - September - 2013

English Part - IV / Marathi Part - III
Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

32



VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018

AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१५	विंदा एक प्रयोगशील कवी प्रा. डॉ. सुनंदा चरडे दुबे	६२-६५
१६	अल्पसंख्यांक अभिव्यक्ती: भाषा आणि साहित्य प्रा. डॉ. संजय शिंदे	६६-६९
१७	सामाजिक दस्तावेज : दलित स्त्री आत्मकथने प्रा. डॉ. प्रतिभा अहिरे	७०-७३
१८	ग्रामीण कादंबरीची भाषिक वैशिष्ट्ये डॉ. वाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	७४-७७



१८. ग्रामीण कादंबरीची भाषिक वैशिष्ट्ये

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

भारतात इंग्रजी सत्ता प्रस्थापित झाल्यानंतरच्या शिक्षण धोरणाने महाराष्ट्र समाजसुधारकाविषयक नव्या प्रवृत्ती जन्मास आल्या अशा कालखंडात मराठी वाङ्मय या मध्ये ग्रामीण कादंबरीचा उदय झाला. ग्रामीण कादंबरीमध्ये 'यगुना पर्यटन', 'बळीचा पाटील' ह्या साधारणपणे सुरवातीच्या महत्त्वाच्या कादंबऱ्या मानल्या जातात. परिवर्तन हा निसर्गाचा नियम असल्यामुळे तो नियम मानवी समूहालाही लागू होतो. म्हणून वाङ्मयीन क्षेत्रातही वाङ्मयीन पर्यावरणात कालांतराने बदल घडून आले आहेत. त्या सामाजिक व वाङ्मयीन बदलत्या स्वरूपाला ग्रामीण वाङ्मय अपवाद नाही. ग्रामीण वाङ्मयात इतर प्रवाहापेक्षा कादंबरी हा वाङ्मय प्रकार सरस ठरला आहे. तो केवळ ग्रामीण कादंबरीतील भाषिक वैशिष्ट्येमुळे तो क्रांतीकारी बदल ग्रामीण कादंबरीमध्ये संशोधना अंती जागवत राहतो. ग्रामीण कादंबरीला वास्तवतेच्या पातळीवर नेण्यासाठी ग्रामीण भाषिक वैशिष्ट्येच महत्त्वाची ठरली आहेत.

उद्देश

1. मराठी वाङ्मयात ग्रामीण कादंबरीची भाषिक वैशिष्ट्ये ह्यावर साधक-बाधक चर्चा करणे.
2. ग्रामीण कादंबरीला ग्रामीण बोली भाषा आणि भाषिक वैशिष्ट्ये ह्यांचा अडावा घेणे.
3. कादंबरीतील ग्रामीण भाषिक उदा. देऊन त्याची जिवंत वास्तविकता निदर्शनात आणून देणे.
4. ग्रामीण भाषिक वैशिष्ट्ये सविस्तरपणे समजून घेणे.

संशोधन विषयाची निवड

मराठी वाङ्मयाच्या दालनामध्ये ग्रामीण कादंबरी भावनिक आणि वास्तव पातळीवर समर्थपणे उभी करण्यात ग्रामीण भाषेचा, बोलीचा खरोखर सिंहाचा वाटा आहे. ग्रामीण कादंबरीकारांनी स्व. अनुभवातील आशय व्यक्त करण्यासाठी ग्रामीण बोली भाषेचा उपयोग केला आहे. भाषिक वैशिष्ट्यामुळे वाङ्मयातील आशय, भावना, संवाद आणि त्यात जिवंतपणा आला आहे. ज्या ज्या वेळी किंवा कलाकृतीत जीवन जाणवा आणि जिवनानुभव जीवंत ठेवतात त्याचे मुख्य कारण भाषिक वैशिष्ट्येच असते. म्हणून ह्या संशोधित विषयाची निवड संशोधनासाठी केली आहे.

ग्रामीण कादंबरीची भाषिक वैशिष्ट्ये

कादंबरीत भाषा ही त्या, त्या स्थानिक व्यवहाराची बोली असते. कोणत्याही कलाकृतीच्या सहितेमुळे जिवंतपणा आणि जिवनानुभवातून ती पात्रे बोलत असतात. म्हणून भाषेचा त्या तो स्वतंत्र स्वाभावपिंड असतो. आणि तो काव्याला काव्यात्मक भाषेला चिटकून येते. म्हणून ग्रामीण कादंबरीतील भाषेचे भाषिक वैशिष्ट्ये व स्वरूप समजून घेण्यासाठी ग्रामीण कादंबरीची ठळक वैशिष्ट्ये पुढील प्रमाणे सांगता येतात.



वैशिष्टे

1. "ग्रामीण कादंबरीतील भाषाविषयक कलात्मकता व स्वरूप.
2. भाषेची चित्रमयता व निवेदन पध्दती.
3. कादंबरीतील भाषेची स्वभाविकता.
4. पात्रांच्या मुखतून बदलेले भाषा प्रदर्शित ध्वनिचित्रण.
5. ग्रामीण कादंबरीतील प्रादेशिक आणि स्थानिक वृत्ती व भाषिक वैशिष्टे.
6. कादंबरीत खास-भाषेत वापरलेले अस्सल अपरिचित शब्द.
7. ग्रामीण कादंबरीतील स्वातंत्र स्त्री पात्राची भाषा.

अशा प्रकारे ग्रामीण कादंबरीची काही ठळक वैशिष्टे सांगता येतात. ग्रामीण कादंबरीची वरील वैशिष्ट्यानुसार काही नमुन्या दाखल उदाहरणे पुढील प्रमाणे घेता येतात. प्रामुख्याने ग्रामीण कादंबरीतील बोली त्या भागातील मातीतून व्यक्तमत्वातून निवडलेल्या असतात.

अण्णामाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्यांची भाषिक वैशिष्ट्ये

कादंबरीत कोणत्याही लेखकाची खास करून अस्सल एक भाषा व बोली असते. ती एक वेगळी शैली पध्दत असते. अण्णामाऊ साठे 'रानगंगा' या कादंबरीत नहीचे वर्णन करतांना पुढील भाषिक वैशिष्टे वापरतात. "रानगंगेच्या पाण्याचा गुणच तसा होता. तो जीवन फुलवीतही होत. नष्ट ही करीत होतं. त्या खोऱ्याचं वैभव वाढवीत होतं आणि जन्म देत होतं.", अशी कलात्मक भाषा वापरून स्त्रीप्रतिमेच रूप म्हणून नदीचे वर्णन करतात. त्याचप्रमाणे 'वैजयंता' मधील 'वैजयंताच्या तोंडी तमाशा कलावंताला शोभेल अशी भाषा वैजयंताच्या तोंडी व व्यक्तीमत्त्वातून दिसून येते. ती असी की, "वैजयंताबाई म्हंजे इंद्राची उर्वशी. तिला दुरून बघावं, न्हायतर इजेचा झटका बसून पडतो. पण जरा का लावं बसून गाणं ऐकलं. तर मुडदयाचं माणुस व्हाईल"² अशाप्रकारे साध्या प्रसंगात ही अण्णामाऊ साठे भाषिक सामर्थ्यावर बळावर भाषेत जिवंतपणा आणतात. हे अण्णामाऊ साठे यांचे अस्सल भाषिक वैशिष्ट्ये आहे.

व्यंकटेश मांडगुळकरांची 'बनगरवाडी' मधील भाषिक वैशिष्ट्ये

व्यंकटेश मांडगुळकरांची माणदेशाची विशिष्ट एक खास भाषा आहे. त्यांची निवेदन व भाषा पध्दती, तीचे खास गुण माणदेशी शब्द, जीवन प्रसंग, व्यक्तिचित्र खरोखर हुबेहुब वाचकापुढे उभे राहते. हे वास्तवरूप उभे साकारतांना व्यंकटेश मांडगुळकर 'बनगरवाडी' मध्ये असे वर्णन करतात की, "एकदम त्याने 'का ग?' म्हणताच अंजी शहारली. तोच टपाटपा बामळीची फुले तिच्या अंगावर पडली आणि मागोमाग मेंढक्याने खाली उडी घेतली. रंगाने काळामोर असातो, जवान नाकेला मेंढका अंजीच्या पुढ्यात तोऱ्यात उभा राहिला. तीची छाती धडधडू लागली. अजुवाजुला कोणीही नव्हते. बामळीच्या सावलीत मेंढर डाहाळा खात होती. आणि गालातल्या गालात हसत तो घटिंगण आपल्या अंजीपूठ उभा होता."³ साध्या व खास निवेदनातून नैसर्गिक प्रसंगचित्रण भावनिक व जिवंत करण्याची क्षमता मांडगुळकरांच्या वरिल ग्रामीण देशी भाषा वापरून समट प्रसंग उभा केला आहे. हेच त्यांच्या शैलीचे खास भाषिक वैशिष्ट्ये आहे.



गोपाळ निळकंठ दांडेकर' यांच्या 'शितू' मधील भाषिक वैशिष्ट्ये

गो.नि. दांडेकरांच्या निवेदन शैलीत वातावरण निर्मिती अतिशय जिवंत व प्रभावी आहे. प्रयोग साजेल, शोभेल, अशा निरनिराळ्या उपमा प्रतिमा, उत्प्रेक्षांचा वापर तो फार सढळ भाषिक शैलीने करतात. त्यात त्यांच्या हात खंडा आहे. उदा: "पण अप्पाच्या लोण्याहून मऊ, शेवरीच्या कापसाहून सुखद वागणुकीनं ती लवकर सगळं दुख विसरली होती. किंवा 'अतृप्ती रडेल, भक्ती टिपं गाळील, तन्मयता उसासे टाकील पण मी त्याचं ऐकणार नाही" पृ.क्र. 47"; अशा प्रकारे शितू आणि अप्पा ह्या दोन पात्रांच्या तोडून वदवलेली भाषा खरोखर मानवी भावभावनांना मानवी रूप देऊन त्यात जिवंतपणा अतिशय काव्यात्मकपद्धतीने गो.नि.दांडेकरांनी शब्दबद्ध केला आहे. वरिल प्रमाणे गो.नि. दांडेकरांनी 'शितू' या कादंबरीवरील खास भाषिक शब्दांना आणि वैशिष्ट्यांना उजाळा दिला आहे. हिच खरी भाषिक वैशिष्ट्ये दांडेकरांनी आपला ग्रामीण प्रादेशिक भाषेत मांडली आहेत.

ना.धो. महानोर यांच्या 'गांधारी' मधील भाषिक वैशिष्ट्ये

ना.धो. महानोर खर तर मुळातच ते सौंदर्यवादी कवी आहेत. याचा प्रत्यय म्हणून त्यांच्या 'रानातल्या कविता' ह्या गावरान बोलीची त्यांच्या काव्याला गुलाबी शाक आहे. गांधारीमध्ये महानोरांची फारच भाषिक संवेदनशीलता अनन्यसाधारणपणे व्यक्त केली हे दिसून येते. काही प्रमाणात ते काव्यापेक्षा कादंबरीत प्रमाण भाषेचा वापर करतांना दिसून येतात. पण त्यांची खास गुलाबी गावरान ग्रामीण भाषिक हातोटी. ते कधी सोडत नाहीत. उदा. "थोराळयाजवळ पाणथळीची ओल. आगदी मौदानात असली नागीण आणि नाग मैथुनात मग्न. लालचट देह थोर मग्न. सगळे अंगाग विळख्यात सळसळून उठणारी उत्तेजित शरिरं. आसमंत विरून विथरलेले जडभार डोळ, वासना शरिरचरत जाणारी"; अशाप्रकारे महानोरांची भाषिक वैशिष्ट्ये सांगता येतात.

रां.रं. बोरडे यांच्या 'पाचोळा' मधील उस्मानाबादी भाषेचे भाषिक वैशिष्ट्ये

रां.रं. बोरडे हे मराठवाड्यातील एक प्रभावशाली ग्रामीण कादंबरीकार आहेत. त्यांची 'धग' या कादंबरीला समरस वाटणारी 'पाचोळा' ही कादंबरी अस्सल मराठवाड्यातील उस्मानाबादी भाषाशैलीत शब्दबद्ध झाली आहे. पाचोळ्यामधील- गंगाराम, पारबती आणि भाना ह्या कौटुंबिक कादंबरीत खास ठसक्याची उस्मानाबादी भाषिक रूपे वापरून ही कादंबरीत ग्रामीण कादंबरीत स्वाभिमानाने आणि आदर्शाने उभी केली आहे. 'पाचोळा' मधील पारबती आणि गंगाराम यांच्यामधला संवाद पुढीलप्रमाणे :

"च्या ला येळ का लागला?"

"एकाद्यादिशी व्हत असतो येळ"

"का व्हत असतो."

"बरं न्हायी मला आज उठावंच वाटतं नव्हतं."

"मग कशाला उठलीस? न्हायचं व्हतं पडून."

वरिल संवादावरून गंगाराम आणि पारबतीचा स्वाभाव आणि खास करून गंगारामचा एक तिरशिंगराव स्वाभाव वरिल संभाषणावरून दिसून येतो. हेच रां.रं. बोरडे यांच्या 'पाचोळा' या कादंबरीतील भाषिक वैशिष्ट्ये आहे.



समारोप

उपरोक्त निवडलेल्या रांशोधनातून वरिल ग्रामीण कादंबरीकारांच्या खास शैलीतून भाषिक वैशिष्ट्ये स्पष्टपणे दिसून येतात. वरिल ग्रामीण कादंबरीकारांनी म्हणजे अण्णाभाऊ साठे, व्यंकटेश, मांडगुळकर, नो.नी.दांडेकर, ना.धो. महानोर आणि रा.रं. बोराडे अतिशय अस्सल निवेदन पध्दतीने आपापल्या ग्रामीण भागाचे भाषिक वैशिष्ट्ये साह प्रतिनिधित्व करतात. वरिल अभ्यासलेल्या बहुसंख्य कादंबऱ्यांमधून जे संवाद साधले आहेत, ते खरोखर त्या मातीतून निपजले आहेत. आपापल्या मातीची, भागाची, प्रदेशाची एकआगळी वेगळी, अनन्यसाधारण ठेवन वरिल वैशिष्ट्ये वरिल ग्रामीण कादंबरीकारांनी अतिशय वैशिष्ट्यपूर्ण रेखांकित केली आहेत.

संदर्भग्रंथ

1. 'अण्णाभाऊ साठे', 'रानगंगा', मॅजेस्टिक बुक स्टॉल, आवृत्ती 1965, पृ.क्र. 06.
2. 'अण्णाभाऊ साठे', 'वैजयंता', मॅजेस्टिक बुक स्टॉल-मुंबई-04, आवृत्ती 3 री 1970, पृ.क्र. 37.
3. 'व्यंकटेश मांडगुळकर', 'बनगरवाडी' मौजे प्रकाशन गृह मुंबई-04, आवृत्ती 10 वी 1986, पृ.क्र. 89.
4. 'नो.नी.दांडेकर', 'शितू', मौजे प्रकाशन गृह मुंबई-04, 1967, पृ.क्र. 34.
5. 'ना.धो.महानोर', 'गांधारी', पॅप्युलर प्रकाशन मुंबई-34, आवृत्ती 1982, पृ.क्र. 34.
6. रा.रं. बोराडे, 'पाचोळा' मौजे प्रकाशन गृह मुंबई-04, 1991, पृ.क्र. 54.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

Volume - VII, Issue - IV, October - December - 2018
ISSN 2277 - 5730

AJANTA

Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)
Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार

As a Recognition of the Publication of the Paper Entitled
सावित्रीबाई फुले यांच्या सामाजिक कवितेतील आश्रयाचा आढावा



Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan
Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad, (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH
JOURNAL

AJANTA

Volume-VII, Issue-IV
October-December-2018
Marathi Part-I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018-5.5
www.sjfactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - VII Issue - IV Marathi Part - I October - December - 2018

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२७	स्त्री पुरुष असमानता वास्तविकता आणि दुष्परिणाम सहा. प्रा. डॉ. तक्षशिला मोटघरे	११०-११५
२८	सावित्रीबाई फुले व स्त्री शिक्षण प्रा. डॉ. चुन्निलाल प. साखरवाडे	११६-११७
२९	महिलांच्या शैक्षणिक आणि आर्थिक विकासाच्या प्रनेत्या : सावित्रीबाई जोतीराव फुले डॉ. गंगाधर रामराव भुक्तर	११८-१२२
३०	सावित्रीबाई फुले यांच्या साहित्यातील मानवता धर्म प्रा. डॉ. नरसिंग पिराजी कुडकेकर	१२३-१२७
३१	सावित्रीबाई फुले आणि महिलांचे सक्षमिकरण प्रा. डॉ. माया बापूराव मसराम	१२८-१३१
३२	सावित्रीबाई फुले यांच्या सामाजिक कवितेतील आशयाचा आढावा डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार	१३२-१३५
३३	क्रांतीज्योती सावित्री : एक जीवनसंघर्ष प्रा. कु. दिपिका गोपाल हटवार	१३६-१३९
३४	सावित्रीबाई फुले यांच्या कवी व काव्यविषयक दृष्टीकोन प्रा. सिद्धार्थ कुंडलिक इंगोले	१४०-१४३
३५	श्री चक्रधर कालीन स्त्री जीवन प्रा. डॉ. माधुरी मनोहराव पाटील	१४४-१४७
३६	सावित्रीबाई फुले स्त्री शिक्षण डॉ. प्रदिप शा. बोले	१४८-१५१
३७	सावित्रीबाईंची कविता : जीनानुभवाची अस्सल अभिव्यक्ती डॉ. अलका गायकवाड	१५२-१५७



३२. सावित्रीबाई फुले यांच्या सामाजिक कवितेतील आशयाचा आढावा

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय करमाड जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

सावित्रीबाई फुले यांचा जन्म इसवी सन 1831 रोजी झाला. खंडुजी नेवसे पाटील हे त्यांच्या वडीलाचे नाव होते. त्यांचा विवाह इ.स. 1840 मध्ये महात्मा ज्योतीबा फुलेंशी झाला. त्यांनी महात्मा फुलेंच्या आदर्शातून आणि प्रेरणेतून इ.स. 1848 मध्ये पुण्याच्या बुधवार पेठेत तात्यासाहेब भिडे यांच्या वाड्यात मुलींची पहिली शाळा काढली. विशेष म्हणजे सावित्रीबाई फुलेंच्या कार्याला अधिक प्रेरणा मिळावी म्हणून तात्यासाहेब भिडे यांनी त्यांना मोफत जागा दिली. स्त्री शिक्षणाशिवाय स्त्रियांच्या उध्दाराचे मोठे कार्य सावित्रीबाईंनी केले. म्हणून त्यांनी पुनर्विवाह, बालहत्या प्रतिबंधकगृह, बालिकाश्रम, अस्पृश्यतेविरुद्ध चळवळ अस्पृश्यता, महिला सेवा मंडळ इत्यादींच्या माध्यमातून सावित्रीबाई फुले यांनी सामाजिक सुधारणा केल्या आहेत.

सावित्रीबाई फुले यांचे कार्य हे सामाजिक सुधारणा किंवा शिक्षणापुरते मर्यादित नव्हते तर त्यांनी काव्य लेखनामधून समाज जागृतीचे महान कार्य केले आहे. सावित्रीबाई फुले यांनी 'काव्यफुले(1854) आणि 'बावन्नकशी सुबोध रत्नाकर (1891) हे दोन परिवर्तनाने प्रेरित झालेले दोन काव्यसंग्रह लिहून अत्यंत महत्वाचे समाज प्रबोधन केले आहे. हयातून सावित्रीबाई फुले यांच्या एका स्वतंत्र, प्रतिभा संपन्न व लोक कल्याणास वाहून घेतलेल्या थोर समाज कवितेच्या संपन्न व्यक्तिमत्त्वाचे अनन्य साधारण असे दर्शन होते. सावित्रीबाई फुलेंनी अनेक विषय 'काव्यफुले' हया कविता संग्रहामध्ये हाताळले आहेत. त्यापैकी वरिल संशोधनात आपण सामाजिक कवितेतील तत्व व त्यातील शब्दांचा अढावा सदरिल संशोधनात घेतला आहे. सावित्रीबाई फुलेंच्या 'काव्यफुले' या काव्यसंग्रहाचे मुल्यमापन करताना त्यातील सामाजिक आत्मज्ञान आणि सामाजिक आशय व्यक्त करणा-या कवितेमध्ये खालील कवितेचा आढावा होतो.

सावित्रीबाई फुलेंच्या सामाजिक कविता

1. 'शिकणेसाठी जागे व्हा
2. मनु म्हणे
3. ब्रह्मवंती शेती
4. शुद्रांचे दुखणे
5. इंग्रजी माउली
6. शुद्र शब्दांचा अर्थ
7. बळीस्त्रोत्र
8. शुद्रांचे परावलंबन



9. तयास मानव म्हणावे का ?
10. अज्ञान
11. सावित्री व ज्योतीबा संवाद" 1

वरितप्रमाणे सावित्रीबाई फुले यांच्या 'काव्यफुले' ह्या काव्यसंग्रहामध्ये सामाजिक कवितेत समावेश होतो.

सामाजिक कवितेचा आशयात्मक आढावा :

मुळातच महात्मा फुले आणि सावित्रीबाई फुले यांचा मुळ पिंडच समाजकांती किंवा सुधारणा करणे हा होता. म्हणून त्यांच्या जास्तीत जास्त कविता सामाजिक विषयावर असणे अगदी स्वाभाविक आहे. समाजात शिक्षणाशिवाय जागृती होणार नाही. म्हणून शिक्षण दिली पाहिजे आणि ते प्रथम स्त्री वर्गाला द्यावे ही प्रांजळ भुमिका सावित्रीबाई फुलेंची होती. म्हणून त्या भुमिकेचे महत्त्व पटवून देतांना वामनदादा कर्डक म्हणतात...

बाई जाईल तुझ दुःख सारं
एका मुलांच्या शिक्षणामुळं
सारं उध्दरून जाईल कुळ
सुखी होईल तुझं सारं घरदार
बाळ होईल तुझां फौजदार
तुझ्या पोटाचं ग-हाणं पाठी
आणि बाळाच्या शिक्षणासाठी
आज कर तु रोजगार
बाळ होईल तुझं फौजदार" 2

(फौजदार)

अशाप्रकारे समाजात शिक्षणाला किती महत्त्व आहे हे वामनदादा एका स्त्रीला समजून देतांना सामाजिक जाणिव ठेवून संदेश देतात. अशाच प्रकारची जाणिव वरिल विषयात व्यक्त केली आहे. म्हणून सामाजिक आशय व्यक्त करताना सावित्रीबाई फुले 'शिकणेसाठी जागे व्हा' या कवितेत सावित्रीबाई फुले म्हणतात...

"उठा बंधुनो अतिशुद्रानो
जागे होउनि उठा
परंपरेची गुलामगिरीही
तोडणेसाठी उठा!

बंधुनो शिकणेसाठी उठा ||धृ||

ज्ञानदाते इंग्रज आले विद्याशिकुनि घ्यारे
ऐसी संधी आली नव्हती. हजार वर्षे रे
असे गर्जूनी विद्या शिकण्या जागे होउन झटा
परंपरेच्या बेड्या तोडूनि शिकविण्यासाठी उठा" 3

(शिकणेसाठी जागे व्हा)



वरिल काव्यपंक्तीतून सावित्रीबाई फुलेनी शिक्षणामुळे कांती होते. हा संदेश जाहिरपणे दिला आहे. समाज बांधवाणो! परंपरेणे चालत आलेली गुलामगिरी तुम्ही तोडून टाकण्यासाठी तुम्ही जागे होऊन बंधुनो शिक्षणामुळे तुम्ही उठा आणि जागृत व्हा त्याशिवाय आपला उध्दार होणार नाही. इंग्रजाने आपणाला शिक्षणाची संधी दिली ती संधी तुम्ही सोडू नका. परंपरेने गुलामाच्या अज्ञानाच्या बेड्या तुम्ही तोडा, असा परिवर्तनादी संदेश सावित्रीबाई फुलेनी 'शिक्षणेसाठी जागृत व्हा' हया काव्यामधून दिला आहे. माणवास शिक्षणाशिवाय माणसातील जीवनात खरे मनुष्यत्व जागृत करावयाचे असेल तर त्याला विद्येशिवाय किंवा शिक्षण शिक्षणाशिवाय पर्याय नाही. त्याशिवाय मनुष्यत्व जागृत होत नाही. त्याला मानव म्हणता येत नाही. म्हणून 'तयास मानव म्हणावे का?' या कवितेत सावित्रीबाई फुले वर्णन करतात...

" ज्ञान नाही विद्या नाही
ते घेणेचि गोडी नाही
बुद्धी आसुनि चालत नाही
तयास मानव म्हणावे का? ||धृ||
गुलामगिरीचे दुःख नाही
जराही त्यास जाणवत नाही
माणुसकी समजत नाही
तयास मानव म्हणावे का ?4

उपरोक्त काव्यातून सावित्रीबाई फुलेनी समजात माणवतेची आणि शिक्षणाची महती काय असते. शिक्षणामुळे गुलामगिरीचे जीने नष्ट होते. माणुस दुःखी राहत नाही. म्हणून ज्याला माणुस म्हणून घ्यावयाचे आहे. त्यांनी शिक्षणाची कास धरल्याशिवाय पर्याय नाही. अस्ती सुचना व संदेश दिला आहे. वरिल कार्यामुळे सावित्रीबाई फुले हया आद्य शिक्षिका आद्य लेखिका, कवयित्री, कलाकार, थोर समाजसेविका म्हणून आज सर्वश्रुत झाल्या आहेत. समाजसेवा करता करता 10 मार्च 1897 ला सावित्रीबाईने जगाचा निरोप घेतला आहे. वरिल महान कार्याची प्राणज्योत मिमाली होती. त्या शरिराने गेल्या तरी त्या विचाराने अजरामर आहेत. म्हणून प्रमोद सलामे त्याविषयी म्हणतात... "सावित्रीबाई नेली पण जाण्यापूर्वी समाजात स्त्री शिक्षणाचा वटवृक्ष लावून गेली. अजूनही त्या वटवृक्षाच्या छायेखाली मुली येतात आणि समाधानाचा विसावा घेतात. शहाण्या होतात" 5 अशाप्रकारे स्त्रीयांसाठी सावित्रीबाई फुलेनी स्त्रीयांच्या जीवनाचे सोने केले आहे. जर सावित्रीबाईंनी हे अनमोल कार्य हाती घेतले नसते तर आज झालेली व होत जाणारी प्रगती आपणास दिसून आली नसती. म्हणून भावी स्त्री यांनी सावित्रीबाईंचा आदर्श घेतला पाहिजे.

समारोप

वरिलप्रमाणे सावित्रीबाई फुले यांनी आपल्या काव्यातून सामाजिक जाणिव व्यक्त केली आहे. वरिल संशोधनात सामाजिक कवितेच्या आशयातून त्यांनी बहुसंख्याक समाजाला शिक्षणाचे महत्व सांगितले आहे. म्हणून साहित्य हे समाजाचे प्रतिनिधी असते. म्हणून त्याची उदिष्टे वरिलप्रमाणे साध्य झाली पाहिजेत. त्या उदिष्टाशिवाय समाजाची प्रगती होत नाही. ही जाणिव फुले आणि सावित्रीबाई फुलेना होती. त्यामुळे त्यांनी समाजात सावित्रीबाईंच्या

PRINCIPAL

RAJN GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TO. & DIST. AURANGABAD.

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

ISSN 2277 - 5730

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019

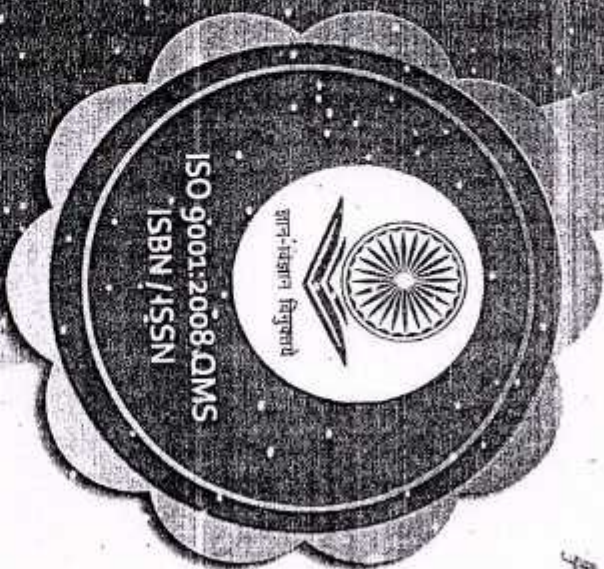
AJANTA

Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

As a Recognition of the Publication of the Paper Entitled
'आनंद यादव' यांच्या कथेच्या वैशिष्ट्यांचे समकालीन सद्यस्थितीतील स्थान



Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate,

Aurangabad. (M.S.) 431 004

Web. No. 9579260877, 9822620877

Tel. No.: (0240) 2400877.

ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole



ग्रामीण बोलीतील अर्थविश्वाची समर्पकता

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार

मराठी विभाग प्रमुख

राजीव गांधी महाविद्यालय करमाड जि. औरंगाबाद



34

प्रस्तावना :-

ग्रामीण साहित्याची निर्मिती ही ग्रामीण संवेदनशीलतेमधून झालेले असते. म्हणून ग्रामीण साहित्यातील ग्रामीण शब्दाने सुचित होणारे अर्थ विश्व व त्याची समर्पकता खरोखर व्यापक असते. ग्रामीण कथा, कादंबरी असो त्यातील ग्रामीण शब्द, बोली भाषा, शैली हे ग्रामीण साहित्याचे अर्थविश्व व त्याचे सामर्थ्य व बलस्थान आहे. त्यामुळे ग्रामीण संस्कृतीला परंपरेला, रुढीला, शब्दाच्या माध्यमातून त्यातील वेगवेगळे अर्थविश्व सुचित केले जातात. साहित्य हा समाजाचा आरसा असतो. याचाच अर्थ ग्रामीण साहित्यामध्ये ग्रामीण शब्दाचे सुचित झालेले अर्थ, साहित्यामध्ये ग्रामीणतेतून स्पष्टपणे लेखनात, जीवनात दिसून येतात. ग्रामीण भागामध्ये काही शब्द, आणि संदर्भ वेगवेगळे अर्थविश्व निर्माण करून त्याचे अर्थसुध्दा अधोरेखांकित करत असतात.

ग्रामीण साहित्यातील ग्रामीण शब्दाची सुचकता आणि अर्थविश्वाची समर्पकता समजून घेण्यासाठी या शोध निबंधाची निवड केलेली आहे. ग्रामीण साहित्यातील संस्कृतीने सुचित होणारे अर्थ, त्यामध्ये रुढी, परंपरा, संस्कृती, जीवनपध्दती, आचार-विचार, धार्मिक भावना, धार्मिक मर्यादा व व्यापकता, अज्ञान, अंधश्रध्दा ईत्यादी घटकातून ग्रामीण शब्दाचे अर्थविश्व व त्याची समर्पकता अर्थाच्या संदर्भात व्यक्त होत असते. म्हणून प्रथम 'ग्रामीण' या संकल्पनेची व्यापकता समजून घेउनच त्यातील अर्थविश्वाची समर्पकता स्पष्ट करता येते. म्हणून 'ग्रामीण' ह्या शब्दाच्या अर्थाची व्यापकता समजून घेणे गरजेचे आहे. त्याशिवाय आपणाला संशोधन विषयाची उकल होणार नाही.

ग्रामीण संकल्पनेचा व्यापक अर्थ व समर्पकता आणि अर्थविश्व :-

'ग्रामीण' या संज्ञेत किंवा संकल्पनेत ग्रामीण भागातील संस्कृती, ग्रामीण मानसिकता, जाणिवे रुढी, परंपरा, त्याची वैशिष्ट्ये आणि अनुभवविश्व, अज्ञान श्रध्दा, अंधश्रध्दा या तमाम घटकांचा अंतर्भाव समाविष्ट होत असतो.

'ग्रामीण' या संज्ञेसंबंधी भाष्यकारांनी मांडलेले विचार :-

'ग्रामीण' आणि त्याचे अर्थविश्व व त्याची व्यापकता व संकल्पना व अर्थ उलगडून दाखविण्यासाठी काही भाष्यकारांनी खालीलप्रमाणे मते मांडली आहेत.

1) डॉ. आनंद यादव :-

या संदर्भात म्हणतात, "ग्रामीण हा शब्द प्रयोग फक्त ग्रामीणतेतील व्यवस्थेरी निगडीत नाही. त्याचा अर्थ शहरी व्यवस्थेव्यतीरिक्त जी भारतीय जीवनव्यवस्था आहे. त्या सर्व व्यवस्थेला व्यापणारा असा अर्थ अभिप्रेत आहे." 1

2) डॉ. नागनाथ कोत्तापल्ले यांच्या मते :-

" 'ग्रामीण' हा शब्द स्थलवाचक आहे. या संदर्भात ते म्हणतात की, ग्रामीण जीवनातून फुलणारे, ग्रामीण

वास्तवातून साकार होणारे साहित्य ते 'ग्रामीण साहित्य' 2

3) श्रीराम गुंदेकर यांच्या मते :-

'ग्रामीण साहित्य म्हणजे ग्रामीणांना ग्रामीणांचे अस्सल जीवनदर्शन घडविणारे देशी वळणाचे साहित्य' 3

4) प्रा. नरहर कुरुंदकर यांच्या मते :-

'ग्रामीण साहित्याचा सगळा जिवंतपणा तीच्या बोलीवर निगडीत असतो.' 4 वरिल मत-मतांतवरून 'ग्रामीण' या सज्ञेसंबंधी किंवा अर्थसंबंधी वरिल विचारवंतांनी आपली मते व्यक्त केले आहेत. यावरून त्यांच्या अर्थविश्वाची समर्पकता स्पष्ट होते.

5) शंकर पाटील यांच्या 'वावरी रोंग' (कथासंग्रहातील) 'सत्य' मधील तांबडा-भुजंग व अर्थविश्व व समर्पकता :-

'सत्य' या कथेत शिवाला रानात गवत कापतांना भला मोठा तांबड्या रंगाचा भुजंग दिसतो. तोच भुजंग शिवाच्या बापालाही दिसला होता म्हणून बाप दोन आठवड्यात मेला होता. असे काही बरे-वाईट व्हायचे असेल तर तो दृष्टीस पडतो. एरवी तो अदृश्य होतो. अशी त्याबद्दल आख्यायिका होती. आपणाला दिसला नग आपण ही मरणार असा ध्यास शिवाच्या मनाने घेतलेला असतो. असे अशुभ घडू नये म्हणून बाप भुजंगाच्या नावाने दर अमावस्येला नारळ वाहत असे, तर रानातल्या पिराला कोंबडी वाहत असे'. 5 अशाप्रकारे ग्रामीण माणसाच्या मनात 'भुजंग' या शब्दाने अनेक अर्थविश्व सुचित होतात. हे वरिल संदर्भावरून दिसून येते. कृषिसंस्कृतीत वाढणारा असल्यामुळे त्याचे मन सतत अदिम संकल्पनांनी बांधले जात असते. ग्रामीण माणूस अज्ञानी असतो किंवा अंधश्रद्धाळू असतो अडाणी असतो. असे नव्हे तर तो एका विशिष्ट सांस्कृतिक घडलेला त्या संस्कृतीचा आपत्य असतो. त्यामुळे त्याच्या मनावर ग्रामीण अर्थविश्वाचा, अंधश्रद्धेचा, लोकरुढीचा, लोकविधिचा लोकसमजुतीचा रुढी, परंपरेचा किंवा सुचित होणा-या अर्थविश्वाचा पगडा असतो.

उदा : चारुता सागर यांच्या 'नागीण' कथासंग्रहातील 'नागीण' या कथेत ग्रामीण भागात असलेल्या लोकांच्या मानसकितेचा प्रत्यय येतो. या कथेत सापासंबंधी जे लोकसमजत आहेत त्यापैकी साप दुख धरतो हा एक आहे. नाग-नागिनीची लागण, जोडपे असेल ततर ते मारू नये. किंवा पाहू नये असा समज आहे. तीच नागीण मारली तर तीच पुढे घरातील कुटूंबातील व्यक्तिला चावते. 'नागीण' मधील बापुच्या बायकोला 'चंद्राला' तीच चावली असा समज आहे. अशाप्रकारे ग्रामीण शब्दातून सुचित होणारे अर्थविश्व अनुभवायला मिळते.

बलुतेदारी पध्दत या शब्दाने सुचित होणारे अर्थविश्व :-

ग्रामीण भागामध्ये गावगाड्याला ग्रामीण जीवनात अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे. बलुतेदारी पध्दतीला प्रत्येक माणूस जोडला जातो. शेतक-यांच्या मालावर शेतक-यांचाच अधिकार असतो असे नव्हे तर त्यावर वाराबलुतेदारांचा सुध्दा अधिकार असतो.

बलुत कशाला म्हणतात ? :-

सेवेच्या बदल्यात माल किंवा वस्तु व वस्तुच्या बदल्यात दिल्या जाणा-या मोबदल्यात बलुत असे म्हणतात. उदा. शेतकरी धान्य देतो. कुंभार मडके देतो. अशा 'ग्रामीण', 'बलुत' या शब्दातून अनेक अर्थविश्व किंवा संदर्भ बारा बलुतेदारांना किंवा सामान्य माणसांना सुचक अर्थ सुचवितात. त्याच बरोबरीचे 'बहुरूपी' हे एक



ग्रामीण शब्दाने सुचित होणारे अर्धविश्वातील समर्पक नामाभि विधान आहे. बहुरूपी हा लोकसाहित्य जपून ठेवणारा महत्वाचा घटक आहे. यामध्ये वैदु, वसुदेव, पिंगळा, पांगोळ, मनसजोगी, बैरागी इ. महजप्राणे सुचित ग्रामीण शब्द लोकसाहित्याची ओळख करून देतात.

बोली भाषेतून सुचित होणा-या अर्धविश्वाची समर्पकता :-

ग्रामीण भागातील ग्रामीणता जोपासने हे बोली भाषेचे अत्यंत महत्वाचे कार्य आहे. कारण ग्रामीण बोलीभाषा ग्रामीण जाणिवाना जतन व जिवंत करत असते. ग्रामीण बोली भाषेच्या संदर्भात ओनक उदा. देता येतात. यासाठी 'फक्कडगोष्टी' या कथेत व्यंकटेश मांगुळकर म्हणतात, "मग तर वाणितीला रान मोकळंच झालं, राजरोसपणे ती यार घरी आणू लागली. रोज नवी नवलाई शोधू लागली.... गावात कालवा फार झाला. तोंडावर पदर घेउन बायका आपआपसात कुजबूजून लागल्या. की तो अमका-तमका वाणीणीशी लागून आहे." 6 या भाषेवरून वाणीबाईचे व तिच्या याराचे शारिरिक संबंध भोषतुन अर्थ सुचित होतात. भाषेचे सुचित अर्थ लक्षात येतात.

समारोप :-

वरिलप्रमाणे ग्रामीण साहित्यातील ग्रामीण शब्दाने सुचित होणारी ग्रामीणता आणि त्याची समर्पकता व्यापक संदर्भाने व्यक्त करता येते. ज्या-ज्या शब्दात ग्रामीण अर्थविश्वता संदर्भीत होउन समर्पक अर्थ घेतला जातो त्याला ग्रामीणता असे म्हणतात. अशाप्रकारे खेड्यात राहणा-या सर्व सामान्य लोकांच्या मनावर पिढ्यान्-पिढ्या चालत आलेल्या रूढी, परंपरेचा, आचार विचारांचा, अज्ञान, अंधश्रध्देचा त्याचप्रमाणे संस्कृती श्रध्दा यांचा जबरदस्त प्रभाव पडलेला असतो. ग्रामीण समज विचारापेक्षा रूढी-परंपरेला स्वतःच्या जीवनापेक्षा ग्रामीण अधिक महत्त्व देत असतो. तेच त्याचे अंतिम जीवन व ध्येय असते. श्रध्द हे त्याचे अविभाज्य अंग असल्यामुळे ग्रामीण साहित्यात ग्रामीण शब्दाने अनेक वेगवेगळ्या अर्थविश्व आकार घेउन साकार होत असतात.

संदर्भग्रंथसुची :-

- 1) 'ईश्वर नंदापुरे', 'साहित्य : ग्रामीण आणि दलित', विजय प्रकाशन, नागपूर - 2002 पृ.क. 02.
- 2) 'नागनाथ कोत्तापल्ले' - 'ग्रामीण साहित्य : स्वरूप आणि शोध', स्वरूप प्रकाशन - औरंगाबाद - 2007 पृ.क. 08.
- 3) "श्रीराम गुंदेकर", 'ग्रामीण साहित्य: प्रेरणा व प्रयोजन' मेहता पब्लिशिंग पुणे. 1999 पृ.क. 26.
- 4) 'नरहर कुरुंदकर', - 'वानवळा' (प्रस्तावना), अमेय प्रकाशन नागपूर - 1979 पृ.क. 16.
- 5) 'डॉ. सौ. कल्पना बोरकर', 'स्वरूप प्रकाशन औरंगाबाद प्रथम आवृत्ती- 6 डिसेंबर 2015 पृ.क. 13.
- 6) 'व्यंकटेश माडगुळकर' - 'फक्कड गोष्ट', व्यंकटेश माडगुळकर यांची कथा, पृ.क. 92.

PRINCIPAL

RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277-5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

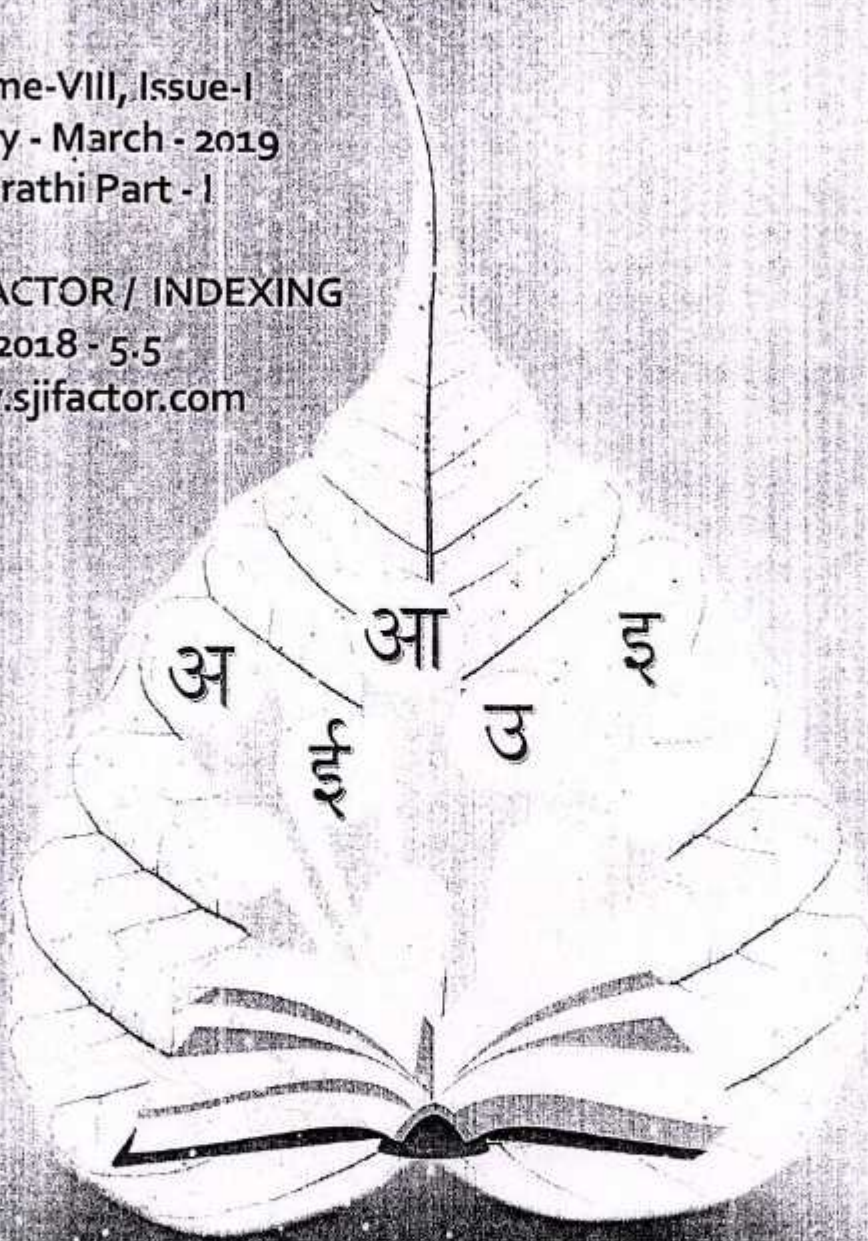


Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com



Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

Marathi Part - I

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२६	आजची दलित कविता पल्लवी जमधाडे	११७-११९
२७	स्त्रीवादी कथा कल्पना व्यंकटराव काळे	१२०-१२३
२८	आदिवासी कविता कांबळे भाग्यशाली लेखराज	१२४-१३०
२९	आदिवासी जीवनसंघर्षावरील कादंबरी, 'पाड्यावरचा टिल्या' : एक चिंतन प्रा. नागनाथ करडे	१३१-१३५
३०	आदिवासी साहित्य : कादंबरी एक अभ्यास कौशल्या तुळशिराम बागुल	१३६-१३८
३१	आदिवासी कवितेतून व्यक्त होणारे निसर्ग आणि सांस्कृतिक जीवन प्रा. कवित्रा सिपु वलवी	१३९-१४३
३२	दलित साहित्य : कविता क्रांती मारुती गायकवाड	१४४-१४७
३३	आजचे ग्रामीण साहित्य आणि बदलते खेडे : एक अभ्यास प्रा. कृष्णा काशिराम कोटकर	१४८-१५०
३४	आदिवासी कविता प्रा. डॉ. रेखा नारायण वाघ	१५१-१५४
३५	मराठीतील स्त्रियांचे कविता लेखन प्रा. डॉ. योगिता देवगिरीकर (कथले)	१५५-१५७
३६	यशवंत मनोहरांच्या काव्यातील विद्रोहाची प्रकृती व जीवनदृष्टीचा आविष्कार प्रा. डॉ. कापसे शिवसांब	१५८-१६०
३७	बुलडाणा जिल्ह्यातील कृषी : एक अवलोकन (२०१०-२०१६) संजय गोडाजी खंडारे	१६१-१६४
३८	'आनंद यादव' यांच्या कथेच्या वैशिष्ट्यांचे समकालीन सद्यस्थितीतील स्थान डॉ. बाळारामहेब बाबुराव लिहिणार	१६५-१६८

३८. 'आनंद यादव' यांच्या कथेच्या वैशिष्ट्यांचे समकालीन सद्यस्थितीतील स्थान



डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

मराठी साहित्यामध्ये समकालीन कथा या साहित्य प्रवाहांची सद्यस्थिती लक्षात घेण्यासाठी जागतिकरणात आणि संगणकाच्या युगात कथेला किती? आणि कसे स्थान आहे. हे अभ्यासने अत्यंत महत्वाचे आहे. खरे तर मुळातच कथा सांगणे आणि कथा एकणे हा माणसाचा स्वाभाव धर्म आहे. पूर्वीपासूनच भारतीय समाजाच्या जडण-घडणीत कथेला अनन्य साधारण महत्वाचे स्थान आहे. म्हणूनच पूर्वीपासूनच रूजलेला 'कथा' हा वाङ्मय प्रकार आहे. पूर्वीपासूनच बुद्धांच्या काळात जातक कथा सांगितल्या जात होत्या. नंतर इसापनितीच्या कथा, इ. कथनामधूनच मानविमुल्यांचा दृष्टांत देउन मानविजीवनमुल्यांची रूजवणक झाली. हे समकालीन सद्यस्थितीत संगणकाच्या युगात नाकारता येत नाही. कारण की, समकालीन साहित्य प्रवाहाच्या सद्यस्थितीतही मानवी मुल्यांची रूजवणूक करण्यासाठी वन्याच वाङ्मय प्रवाहामध्ये कथेतून प्राण्यांचे, पक्षाचे स्वभाव मानव प्राण्याच्या स्वभावावर लादून त्यांच्या स्वभावाची ओळख करून दिले जाते व वर्णन केले जाते.

मराठी वाङ्मयामध्ये 1960 ते 2009 या ग्रामीण कथा वाङ्मयाच्या तिसऱ्या व चौथ्या पिढीतील वरिल घटकांचा आपण आढावा होणार आहोत. वरिल उल्लेखलेल्या कालखंडात, आनंद यादव, चंद्रकुमार नलगे, भारकर चंदनशिव, नागनाथ कोत्तापल्ले, बाबाराव मुसळे, सदानंद देशमुख, प्रतिमा इंगोले ह्या प्रमुख कथकारांचा विशेष उल्लेख करता येतो. त्यापैकी ग्रामीण साहित्यात अतिथय सामर्थ्यावान कथालेखक म्हणून 'आनंद यादवांचे' नाव पूढे येते. आनंद यादव यांनी कथा, कविता, कादंबरी, वगनाट्य, साहित्य समीक्षा इ. विशेष वाङ्मय प्रवाह हाताळलेले आहेत. म्हणून ग्रामीण साहित्यात त्यांना मानाचे स्थान आहे. त्याची दखल घेउनच वरिल संशोधनात आनंद यादव यांच्या कथेच्या वैशिष्ट्यांचे समकालीन सद्यस्थितीतील स्थान खरोखर सद्यस्थितीतही समकालीन काळाचे, आधुनिक काळातही वर्तमान स्थितीचे प्रतिनिधित्व करणारे वाटतात. कारण सद्यस्थितीतही आनंद यादवांच्या कथेची वैशिष्ट्ये समकालीन साहित्य प्रवाहात सद्यस्थितीतही ठामपणे नेतृत्व करतांना दिसून येतात म्हणून ह्या संशोधनामध्ये ह्या विषयाचीची निवड आवर्जून केली आहे.

आनंद यादवांचे कथा संग्रह

1. 'माती खालची माती' - 1965 (व्यक्तीचित्रे)
2. 'खळाळ' - 1967
3. 'घटजावई' - 1974
4. 'माळावरची मौन' - 1976



5. 'अदिताल' - 1980

6. 'डवरणी' - 1982

7. 'उखडलेली झाडे' - 1986

8. 'झाडवाटा' - 2000

9. शेवटची लढाई -

10. 'भूमिकन्य' आणि 'उगवती पान' इ. कथा संग्रह प्रकाशित आहे. त्यातून आनंद यादवांनी विविध प्रवृत्तीची व मानसिकतेची माणसे वैशिष्ट्य सह रेखाटलेली आहेत. हे वैशिष्टपूर्ण रेखाटनेच आनंद यादवांच्या कथेचे ठळक वैशिष्ट्ये आहेत.

आनंद यादवांचे कथा वाङ्मय जरी साटोत्तरी काळातले लेखन असले तरी समकालीन नवतरूनांना पचणाऱ्या ग्रामीण कथा सद्यःस्थितीत ही जिवंत व जतन करून आनंद यादवांनी लिहून ठेवल्या आहे. म्हणून त्यांनी कथेतून जीवनमुल्य व साहित्य मुल्य आनंद यादवांनी ग्रामीण कथेत रुजविली आहे. त्यामुळेच त्यांच्या वरिल विषयाचे संशोधन करण्यासाठी ह्या विषयाची निवड केली आहे.

समकालीन साहित्य प्रवाहात सद्यःस्थितीतही प्रतिनिधित्व करणारी आनंद यादवांच्या कथेची वैशिष्ट्ये

1. कृषिजीवन अभिव्यक्त करणारी यादवांच्या तोडीची वास्तववादी कथा वाङ्मय प्रवाहात सद्यः स्थितीत नाही.
2. सामान्य ग्रामीण माणसाचे दुःख, वेदना, हा त्यांच्या कथेचा जिवाळयाचा विषय आहे. ही ग्रामीण कथेची पकड आजही कोणत्याही समकालीन साहित्य प्रवाहातील कथा लेखकाला सद्यःस्थितीत साधता आली नाही.
3. जागतिकीकरणामुळे बदलत्या खेड्याचा सद्यःस्थित एवढे बदलत्या खेड्याचे चित्रण वास्तवरूपाने कोणी केले नाही. तेवढे वास्तव सद्यःस्थितीचे वैशिष्ट्युक्त चित्रण 'उखडलेली झाडे' मध्ये यादवांनी केले आहे.
4. सद्यःस्थितीचे ग्रामीण भागातील बदलते वर्तमान वास्तवमान ते हुबेहुबपणे सद्यःस्थिती लेखकांच्याही निवेदनापेक्षा सरस करून अनुभव जिवंत ठेवतात.
5. ग्रामीण वास्तवता आणि कलात्मक एकाच वेळी साधने.
6. आनंद यादवांची निवेदन-शैली सद्यःस्थितीतही सतेज व रसरसीत आहे. म्हणून ती जिवंत वाटते.
7. सद्यःस्थित औद्योगिकीकरणामुळे भरडल्या जाणाऱ्या मानसिकतेचे चित्रण करतांना ती मानसिकता आजही ते समर्थपणे पेलून धरतात.

अशाप्रकारे आनंद यादवांच्या कथेच्या विशिष्टांचे समकालीन सद्यःस्थितीत स्थान किती वास्तवरूपाचे व महत्त्वाचे आहे. हे वरिल वैशिष्ट्यांवरून दिसून येते. म्हणून त्या कथेच्या वैशिष्ट्यांचे स्पष्टीकरण पुढील प्रमाणे करता येते.

सद्यःस्थितीतही सरस ठरतात अशी कथेची स्पष्टीकरणासाठी वैशिष्ट्ये

आनंद यादवांच्या कथा ही एक नवे वैशिष्ट्य घेऊन ग्रामीण कथेच्या प्रांतात अवतीर्ण झाली आहे. त्यांच्या कथेतून शेतकऱ्यांच्या जीवनातील दुःख अगतिकता लाचारी, कष्टमय जीवन, यांचे ते वैशिष्टपूर्ण रेखाटन करतात. आनंद यादवांची 'मोर' या कथेची वैशिष्ट्ये अशी आहेत की, 'मोर' ही कृषिजीवन अभिव्यक्त करणारी वास्तववादी कथा



आहे. ही कथा ग्रामीण वास्तव अंधोरेखित करते. 'बावु' ने हिऱ्या बैलावर जिवापाड केलेल प्रेम असते. ते पाणुस अंतर्बाइय थसरून जातो. हयाची प्रचिती 'खळाळ' या कथा संग्रहातील 'मोर' या कथेत आनंद यादव अशी रेखाटली आहे.

"हिऱ्यान जलमभर नि जलम संपल्यावरवी पिकाला पाणी पाजलं. मोट वडून पाजलं. मोट होऊन पाजलं, हिऱ्याचा पाय समद्या रानावर पडत हुता: पर हिरीत कवा पडला नव्हता. आता हिऱ्या हिरीत गेला. पाण्यातवी गेला आणि वडयाकडयांच्या रानात मातीतवी गेला... हिऱ्या मोटवी, तुच, पांगचावुकवी तूचं, वादी जुपण्या बी तुच? व्हयर?... आणि गी बी तुच कसा झालास हिऱ्या?," अशाप्रकारे ग्रामीण कृषिजीवन व जिळाला ते वास्तवरूपाने कथेत मांडतात. म्हणून आनंद यादवांच्या कथेची वैशिष्ट्ये व कथा सद्यःस्थितीत अतिशय प्रवाही व प्रभावी ठरतात. हे कोणीही नाकारू शकत नाही.

आनंदयादवांनी समकालीन ग्रामीण जीवनातील वास्तवतेला अतिशय वास्तव कलात्मकतेची जिवंत जोड दिलेली आहे. त्या कलात्मक जोडीत-एकजिवता स्पष्ट करतांना अरविंद कुलकर्णी असे नमुद करतात की, "त्यांची कथावाचतांना असे सतत वाटते की, त्यांनी मोठया समर्थपणे 'कलात्मकता आणि ग्रामीणता' एकत्र पोसलेली आहे. माणसाच्या ग्रामीण वैशिष्ट्यपूर्ण मनाचा व जीवनाचा शोध घेण्याच्या सतत प्रयत्नांत ते असतात. त्यांची कथा सच्येपणाने एकाच वेळेला कथाही असते आणि ग्रामीणही असते" 2 किंवा कलात्मकता आणि ग्रामीण जीवन दर्शन साधतांना डॉ. रविद्राकूर नोंदवितात की, "ग्रामीण कथेतील कलात्मकता आणि जीवनदर्शन या दोहोंचा समतोल साधणारी यादवांची कथा मराठी कथेत आपले एक वैशिष्ट्यपूर्ण स्थान निर्माण करते";

वरिल वैशिष्ट्यांच्या संदर्भावरून असे विविधांनी वैशिष्ट्ये नमुद करता येतात. हयाच मुळ वैशिष्ट्ये कि, 'आनंद यादव' हे सामान्य ग्रामीण माणसाचे दुःख, व वेदना हा त्यांच्या जिळाल्यांचा विषय आहे. हे त्यांचे एक ठळक वैशिष्ट्य आहे. ग्रामीण माणसाच्या अनुभवासी, दारिद्रयाची ते अतिशय प्रभाविपणे चित्रण करतात म्हणून समकालीन साहित्य प्रवाहामध्येही आनंद यादव खंबीरपणे प्रतिनिधीत्व करतांना दिसून येतात.

समकालीन साहित्य प्रवाहांची सद्यःस्थिती आणि आनंद यादवांच्या कथा व त्याचे स्थान

समकालीन साहित्य प्रवाहाची सद्यःस्थिती आणि आनंद यादवांच्या कथा व त्याचे स्थान सिध्द करतांना औद्योगिकीकरणामुळे भरडला जाणारा ग्रामीण समाज, सामान्य माणुस, त्या सामान्य माणसाठी सामान्य स्त्री तीच्या च्या अरसल बोलीत ते रंगवितात व वास्तवतेकडे घेऊन जातात. म्हणून त्यांनी समकालीन बदलत्या खेडयाचे चित्र 'खडलेली झाडे' या संग्रहात असे करतात की, "लंगडा 'गोपा' या कथेतील गोपा आपल्या मुलांच्या मृत्यूनंतर तिसऱ्याच दिवशी कामावर जायला लागतो. तो म्हणतो, पोराच्या पाटी लागून ते मेलं आमीवी असचं एक दिवस मातीआड व्हयचं पोंट-पोंट करत", किंवा आनंद यादव यांच्या कथा खरोखर समकालीन साहित्य प्रवाहाचे वास्तव पातळीवर सद्यःस्थितीतही दर्शन घडवून देतात. कारण ते वास्तव चिंतनशील कथा रेखाटतांना आढळते. हे वास्तव व्यक्ता करतांना म.द.हातकणंगले कर म्हणतात की, "आनंद यादवांच्या कथेत मांडगुळकरांचे सूक्ष्म वस्तुनिष्ठ निरिक्षण आहे. शंकर पाटलांची गंभीर करुणार्द्र जीवनसृष्टी आहे आणि कथेच्या केंद्रीय अनुभूतीशी प्रारंभापासून शेवटपर्यंत त्यात्मक अवस्थेत राहण्याची कवीपवृत्ती ही आहे. ही कथा भावकविते सारखीच अटकर बांध्याची जातिवंत ग्रामीण कथा आहे." 5



अशाप्रकारे आनंद यादव हे ग्रामीण जीवनाचे वेधक दर्शन घडवितात. म्हणून त्यांच्या कथेची समकालीन जीवनाचे चित्रण रेखाटण्यात आजही यशस्वी आहेत.

समारोप

उपरोक्त संशोधनात आनंद यादव हे ग्रामीण समकालीन साहित्याचे प्रवाहीवाहक आहेत. म्हणून यादवांनी कथा ह्या वाङ्मय प्रवाहामध्ये समकालीन ग्रामीण जीवनाचे चित्रण अत्यंत प्रभावीपणे जीवनाला भिडले आहे. यादवांची कथा खरब समकालीन ग्रामीण जीवन व्यक्त करणारी सामर्थ्याशील कथा आहे. आणि ती सद्यःस्थितीतही काळाचे समाजाचे प्रतिनिधित्व करते. आणि वास्तव दर्शन घडविते. ही अस्मीयता आणि जिऱ्हाळा खरोखर समकालीन काळातही अगर राहिल अशी अपेक्षा वरित लेखाच्या साहाय्याने व्यक्त करता केली आहे.

संदर्भग्रंथ

1. आनंदयादव : 'खळाळ' मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, तिसरी आवृत्ती, जुलै 1993, पृ.क्र. 179
2. अरविंद वामन कुलकर्णी : 'महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका' जुलै-डिसेंबर 1990, पृ.क्र. 18
3. डॉ. रविंद्र ठाकूर : 'आनंद यादव व्यक्ती आणि वाङ्मय', पृ.क्र. 27
4. आनंद यादव : 'उखडलेली झाडे', मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, आवृत्ती दुसरी, जुलै 1994, पृ.क्र. 35
5. म.द. हातकणंगलेकर : 'मराठी साहित्य: प्रेरणा आणि स्वरूप', संपादक, गो. म. पवार व हातकणंगलेकर पृ. क्र. 150



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

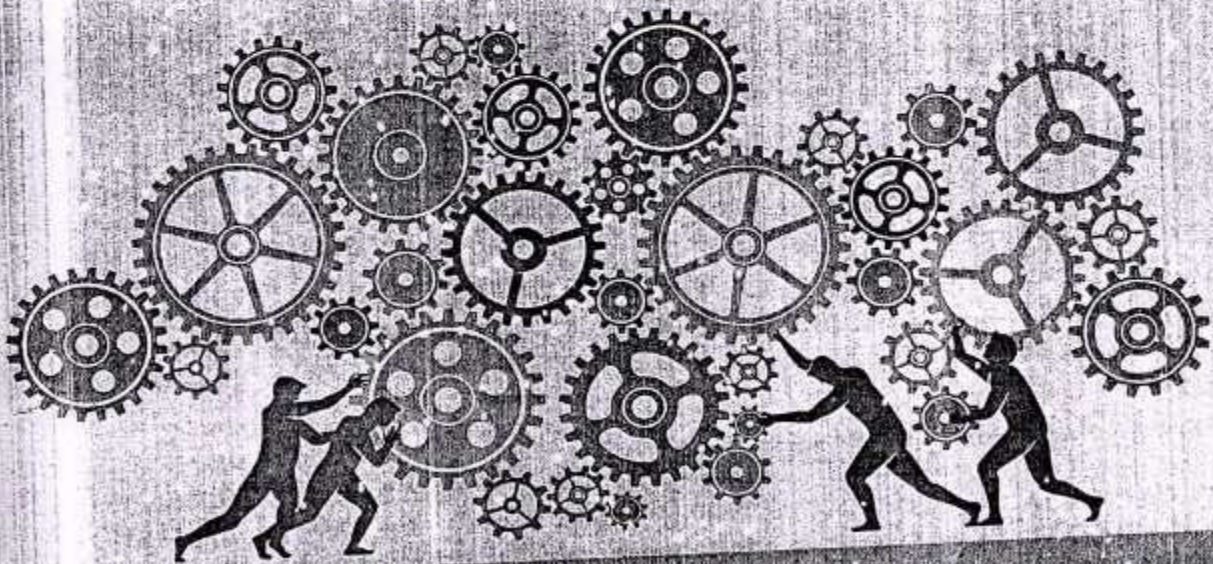


AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
ISSN 2277-5730

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - II

IMPACT FACTOR
/ INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com





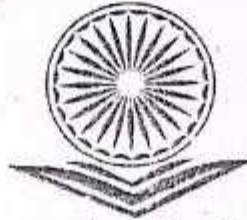
ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I Marathi Part - II January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole .
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF MARATHI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२६	मराठी दलित कविता आणि संविधान मूल्ये प्रा. डॉ. आनंद वारके	१२०-१२६
२७	बहुसंस्कृतीवाद आणि मानवाधिकार प्रा. डॉ. टी. एस. पाटील	१२७-१३३
२८	महत्व ऐतिहासिक पर्यटनाचे...! प्रा. सुनिल सुखदेव लोखंडे	१३४-१३७
२९	विशेष गरजा असणाऱ्या बालकांच्या शिक्षण प्रक्रियेमधील समस्या एक अभ्यास प्रा. घुगे डी. डी. प्रा. डॉ. राजेश के. यादव	१३८-१४१
३०	ग्रामीण कष्टकरी स्त्रियांचे चित्रण विनायक विलास सरदेसाई	१४२-१४५
३१	'उपल्या' दलित साहित्य, चळवळ, नि राजकारणावर प्रकाश टाकणारी कादंबरी डॉ. संजय फांबळे	१४६-१५१
३२	बहुसंस्कृतीवादामध्ये कोल्हापूर पर्यटनाचे ऐतिहासिक महत्व : एक अभ्यास रणजित रंगराव पाटील	१५२-१५४
३३	ग्रामीण कादंबऱ्याची विविध भाषिण अंगे : एक आढावा डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार	१५५-१५७



३३. ग्रामीण कादंबऱ्याची विविध भाषिग अंगे : एक आढावा

डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

ग्रामीण कादंबऱ्याची विविध भाषिग अंगे ह्या विषयाचे संशोध करतांना प्रथम प्रमाण बोली, भाषा बोली, काळ, प्रदेश आणि निवेदन पध्दती या अंगाने विचार करणे अभिप्रेत असते. खरं तर 1960 नंतर मराठी वाङ्मयातील ग्रामीण कादंबरीने ग्रामीण साहित्यात भाषिग कृती म्हणून अत्यंत मौलिक योगदान दिले आहे. भाषा हे संस्कृती संचित असते. आणि ग्रामीण संस्कृती भाषिग अंगाने स्त्रीयांनी जपून ठेवली आहे. कारण की, कुटुंबाचा प्रमुख कणा म्हणजे 'स्त्री' होय. ग्रामीण भाषा व शैलीचा खस बाज आणि ग्रामीण अस्सलता भाषेच्या विविध अंगाने स्त्रीयांनीच जोपासली आहे. म्हणून ग्रामीण कादंबरीत विविध भाषिग अंगे ग्रामीण संस्कृतीत रुजविली गेले असे वाटते. ग्रामीण कादंबरीत अस्सल ग्रामीणता भावभावणासह मनाला भिडवण्यासाठी ग्रामीण कादंबरीत तीचा वापर विविध अंगाने केला आहे.

ग्रामीण कादंबरी किंवा त्यातील ग्रामीण भाषा ही लेखकाने अनुभवलेल्या ग्रामीण जीवनातून प्रेरणा घेऊन लिहिलेली असते. म्हणून ती विविध भाषिग अंगाने निवेदित केल्या जाते. कारण की, साहित्यकलेशी निगडीत असलेले भाषा हे माध्यम मोठे वैशिष्टपूर्ण आहे. त्या शिवाय कादंबरीतील ग्रामीण पात्र जिवंत ठेवता येत नाही. म्हणून ग्रामीण कादंबऱ्यातील विविध भाषिग अंगाची दिवड खरोखर दखलपात्र आहे. म्हणून ग्रामीण कादंबऱ्यामधून विविध भाषिग अंगे कादंबरीकारांनी निवडलेली आहेत. भाषिग अंग व त्याचा आढावा घेणे हे संशोधनाचे मुख्य प्रयोजन आहे. म्हणून ती विविध भाषिग अंगे पुढील प्रमाणे व्यक्त करता येतात.

ग्रामीण कादंबऱ्यातील विविध भाषिग अंगे

ग्रामीण कादंबऱ्यात विविध लेखकांनी विविध कादंबऱ्यामधून विविध भाषिग ढंग, अंगभूत शैली युक्त नमुन्याचा वापर केला आहे.

अण्णाभाऊ साठे व ग्रामीण भाषेतील भाषिग अंग

अण्णाभाऊ साठेच्या कादंबऱ्यातील भाषा नागरसंवाद आणि ग्रामीण भाषा यांचा भिलाफ आढळतो. त्याच्या भाषा शैलीला सांगली जिऱ्हातील धारणाकाठच्या बोलीची झालर आहे. पण त्यातून साठे टसका नक्कीच जाणवतो. उदा. 'रानगंगा' या कादंबरीतील सीता आणि चिमाजी यांच्यातील संवाद...

"पायरी सोडू नको"

"माझी पायरी माझ्या पायाखाली आहे." सीता संताप्त होऊन म्हणाली.

"पण तुमची पायरी कुठं आहे?"

"सीता तो खेसकला. 'मी ही आपली पायरी सोडलेली नाही."



“मग प्रभावतीला एकान्ती गाठून काय करीत होता? मी म्हणत ही नेक जात पवाराची औलाद तेव्हा पायरीवर उभी होती? अन् कोणतं पुण्य करणार होती?”

दरिल संवादातून सांगलीतून सांगली जिल्हातील वारणाकाठच्या अस्सल ग्रामीण संवादाची ठसकेबाज संवादाची फेक वैशिष्ट्यासह लक्षात येते. हेच साठेचे ग्रामीण भाषेचे ठळक वैशिष्ट्य आहे.

उध्दव ज. शेंळके व भाषा

मराठी ग्रामीण कादंबऱ्यामध्ये वऱ्हाडी बोली भाषेचा खास ठसका आणि संवाद मराठी वाचकाच्या गळी शेंळकेंनी उतरविला आहे. ‘धग’ मधील भाषिक संवाद आणि निवेदन पध्दती पुढील प्रमाणे... “मोहरमच्या दिवशी कौतिकानं नामाला अंघोळ घातली. घासून पुसून अंग स्वच्छ केलं. डोक्याला खोबरेल चोपडलं. भांग पाडून दिला. नवं कुडतं घालायला सांगितलं. चड्डी नेसायला लावली. नंतर महादेवाच्या मालातल्या कोऱ्या करकरीत दुपट्याची झोळी केली. ती नामाच्या खांद्यावर अडकून दिली. समजावून सांगितलं. सार काही त्याच्या डोकीत शिरतं नाही हे पहाण्यासाठी विचारू लागली.”

‘किती घर मगसीन?’

‘पाच’

‘अन काय मन्सिनर’

‘हासेन हुसेन धुल्ला... नामा लाजून म्हणाला.

पण का वो मां. पाच घरं न्हाई हिंसलो तं ...?’

नाई बाप्पा. हिडाच लागते. त्याच्यात काये लाज आये. आपल्या देवाचं आफून नाईतर कोन करावं’

अशाप्रकारे वऱ्हाडी बोली भाषेचे वऱ्हाडी संदर्भ नागर वाचकाला अपरिचित व अगम्य अशी बोली स्वतःच्या अंगभूत गोडव्यामुळे शेंळकेंनी वाचकाच्या गळी उतरविले आहे. खरोखर हे भाषिक अंग वैशिष्ट्यपूर्ण आहे.

गोनी. दांडेकरांचे भाषिक अंग

उध्दव शेंळकेंची वऱ्हाडी आणि दांडेकरांची वऱ्हाडी यात फरक आहे. व तो फरक एकमेकांना साजेलसा आहे.

‘पुर्णामायीची लेकर’ मध्ये दांडेकर म्हणतात...

‘लोहारीण बुढीने म्हंटले,

‘वयीरामबाबू हे त तूहं चुकलंच गडया.’

पैकाजीन तिचे म्हणजे उचलून घरले.

‘हो जी. खरंच चुकलं.’

तेक उलीसक पोहं ये त्याले काहून धिऊन गेला तु वावरात.

..... लोहारीण बुढीने म्हंटले

‘तु त येकलाच जाता.’

‘हो त काय.’

‘मोठया मानसाले भूत घोयसत नाही. सहेजासहजी’

‘नाही घोयसत.’



तुझ्या संग लहानावाबू होता. म्हणुनच भुताची इतकी शांती झाली
'नाही त होती काय.'

'त धाकल्या बाबुले नेल. हया तुहा भलक्यासा अपराध झाला.'

'हो त काय. पक्काच अपस्याध झाला.'

अशाप्रकारे गो.नी. दांडेकरांनी कादंबरीमध्ये भाषिक अंगाचे वर्णन केले आहे.

शंकर पाटीलयांच्या 'टोरफुला' मधील भाषा

शंकर पाटील यांच्या कादंबऱ्यामध्ये कोल्हापूरी बोलीभाषेचा साज चढविलेला दिसतो. 'टोरफुला' मधील थोरल्या पाटलांची पत्नी, पाटील वारल्यानंतर अशी म्हणते की, पंत भावाचा नि गाजा हयाचे विचार झालाय. चांगला एकादा बदली पाटील नेमायवा आणि सगळ वस्तान बस्तुरतवर आपून आपलं भावाकड जाऊन न्हायचं ...कसं?'

वरील संवादांमध्ये निपाणी मिसळ कोल्हापूरी ग्रामीण भाषेचा मिलाप आहे. त्याच प्रमाणे र.वा. दिघे यांचे सगर्पक उदा. देता येते.

र.वा. दिघे यांच्या 'आई आहे शेतात' या कादंबरीतील भाषा

ग्रामीण कादंबरीतील विविध भाषिक अंगे अभ्यासतांना र.वा. दिघे यांच्या ग्रामीण बोली भाषेची खालील अंगे सगुणा गोराच्या नृत्याचं वर्णन करतांना म्हणते... "बहिनी बाय काय सांगू त्याच्या ना चा ची शोभा! चंद्रम्यावाणी पिसार फुलवितो. काय जुलवते काय आणि लांडो-यामधून रिगणं घेतो काय. मग निळकंठ लहरावून एकदा इकडं एकदा तिकडं गिरकी घेई".

वरील संवादातून सगुणाच्या तोंडून दिघेनी ग्रामीण बोली भाषेचा वापर अतिशय खुबीने केला आहे. हेच त्यांच्या ग्रामीण भाषेचे अंगभूत वैशिष्ट आहे.

ना.धो. महानोर यांच्या 'गांधारी' मधील भाषा

ना. धो. महानोर हे मुळातच सौंदर्यवादी कवी आहेत. पण त्यांनी काव्यात्म लेखनाचा वापर 'गांधारी' मध्ये गावरान गुलाबी गंधाळ ग्रामीण भाषेची निखळ परखरण केली. ती पुढील प्रमाणे "नाग मैथुनात नग्न. लालचर देह थोर नग्न. सगळे अंगाग विळख्यात सळसळून उठणारी उत्तेजित शरिरं. आसंमंत विरून बिथरलेले जडभार डोळे. वासना शरीरभर वरत जाणारी". अशाप्रकारे वरिल संवादातून महानोर हे काव्यमय ग्रामीण शैलीत काव्यात्मरूप वापरून बोली भाषेचा नमुना धाचकाला दर्शवून देतात. अशाप्रकारे ग्रामीण कादंबऱ्यांचे विविध भाषिक अंगे वरिल वर्णन केलेल्या विविध अंगांचा आढावा घेतला आहे.

संदर्भग्रंथ

1. 'अण्णामाऊ साठे : 'रानगंगा' मॅजेस्टिक प्रकाशन प्रसार चेंबर्स, मुंबई-4, आवृत्ती 3 री. 1986, पृ.क्र. 50.
2. उध्दव शेळके : 'धग' पॉप्युलर प्रकाशन-मुंबई, आवृत्ती 3 री. 1983 पृ.क्र. 32.
3. गो.नी. दांडेकर : 'पुर्णामायची लेकर'
4. शंकर पाटील : 'टोरफुला', सुवर्ण प्रकाशन, नंदाशिव पेठ, पुणे-30, आवृत्ती 2 री 1984 पृ.क्र. 14.
5. र.वा. दिघे : 'आई आहे शेतात', लोकळ प्रकाशन-पुणे-2, आवृत्ती 3 री, 1950, पृ.क्र. 37.
6. ना.धो. महानोर : 'गांधारी' पॉप्युलर प्रकाशन. मुंबई-34, आवृत्ती 1 ली-1982, पृ.क्र. 34.



Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

AJANTA

ISSN 2277 - 5730

Volume - VIII, Issue - I-January -March -2019.

Impact Factor - 5:5 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

डॉ. लिहीणार बाळासाहेब बाबुराव

As a Recognition of the Publication of the Paper Entitled
वास्तववादी साहित्य समीक्षेच्या दृष्टीकोनातून "वारी" कथेची समिक्षा

Ajanta Prakashan,

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877 Tel. No.: (0240) 2400877.
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor: Vinay S. Hatole

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN





मराठवाडा शिक्षण प्रसारक मंडळ संचलित,
देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद
आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ
औरंगाबाद यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित
“आजची मराठी समीक्षा”

एक दिवसीय

राष्ट्रीय चर्चासत्र

दिनांक २८ फेब्रुवारी २०१९

*** प्रमाणपत्र ***

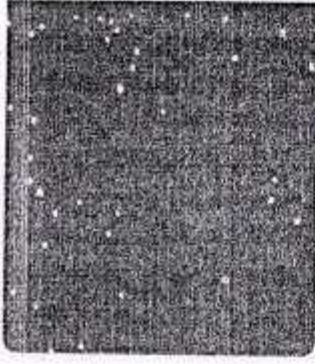
श्री./श्रीमती/प्रा./डॉ./ डॉ. लिहीणार बाळासाहेब बाबुराव संस्था/महाविद्यालयाचे नाव मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, ता. करमाड, जि. औरंगाबाद. यांनी देवगिरी महाविद्यालय आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित केलेल्या 'आजची मराठी समीक्षा' या विषयावरील राष्ट्रीय चर्चासत्रात बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय प्रवर्तक / निबंधवाचक / खुलेसत्र निबंधवाचक / प्रतिनिधी म्हणून सहभाग नोंदवला. चर्चासत्रातील त्यांचा सक्रिय सहभाग मोलाचा ठरला. या राष्ट्रीय चर्चासत्रात त्यांनी वास्तववादी साहित्य समीक्षेच्या दृष्टीकोनातून "वारी" कथेची समीक्षा विषयावरील निबंधाचे वाचन केले. त्याबद्दल हे प्रमाणपत्र सन्मानपूर्वक प्रदान करण्यात येत आहे.



डॉ. लालत अधाने
चर्चासत्र समन्वयक



प्राचार्य डॉ. शिवाजीराव थोरे
संयोजक



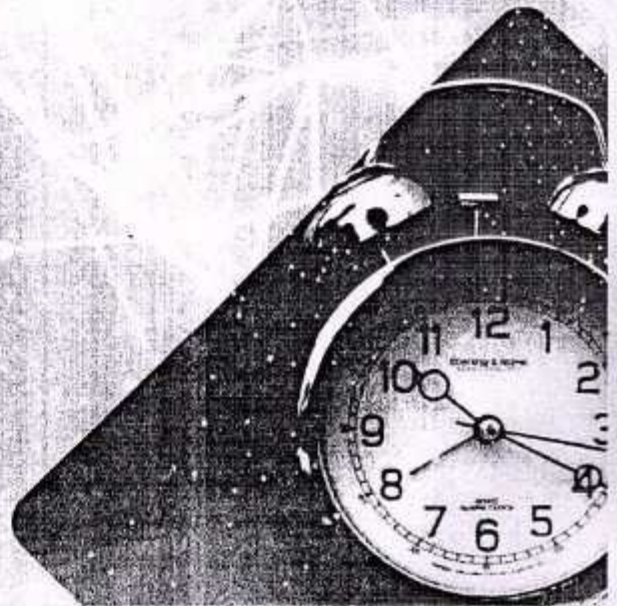
Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - IV
Impact Factor / Indexing
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan





ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

Marathi Part - IV

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

307 37



VOLUME - VIII, ISSUE - 1 - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI PART - IV

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२७	समीक्षा, संकल्पना आणि स्वरूप प्रा. डॉ. अपर्णा अ. पाटील	१४७-१५०
२८	स्त्रीवाद आणि स्त्रीवादी समीक्षेची मूलतत्त्वे गणेश रं. राठोड	१५१-१५४
२९	मराठी ग्रामीण साहित्य समीक्षेची सद्यःस्थिती (संदर्भ-कथा व कादंबरी) प्रा. डॉ. विठ्ठल हरिभाऊ जंबाले	१५५-१५९
३०	मराठी समीक्षा : काही निरीक्षणे प्रा. डॉ. गणेश मोहिते	१६०-१६७
३१	वास्तववादी साहित्य समीक्षेच्या दृष्टीकोनातून "वारी" कथेची समीक्षा डॉ. लिहीणार बाळासाहेब बाबुराव	१६८-१७१

३१. वास्तववादी साहित्य समीक्षेच्या दृष्टीकोनातून "वारी" कथेची समीक्षा

डॉ. लिहीणार बाळासाहेब बाबुराव

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, ता. करमाड, जि. औरंगाबाद.

वार

"वा

हया

काय

दृष्टी

मांड

"वा

मांड

मांड

जिवं

अनु

हृदय

त्या

पंढर

हुबेहु

वार

देवा

त्या

त्यां

बघत

"न

MA

प्रास्ताविक

मराठी वाडःमयाच्या वाडःमयीन प्रवाहामध्ये अनेक साहित्य प्रवाह रेखाटल्या गेले आहेत. त्या रेखाटलेल्या साहित्य प्रकारांपैकी कथा हा वाडःमय प्रकार आणि त्यातील "वास्तववादी साहित्य समीक्षा" संशोधनाचा या दृष्टीकोनातून आढावा घेतला आहे. कारण की, मराठी ग्रामीण कथेची सुखातचं मुळात ह.ना. आपटेच्या (काळ तर मोठा कठीण आला.) १९९८ या कथेपासून सुरवात मानल्यात येते. ह.ना. आपटेच्याच कथेपासून मराठी-कथा, कादंबरी इ. वाडःमय प्रकारापासूनच वास्तववादी काळाची स्पष्ट जाणव होते. पण ह.ना. आपटे बरोबरच दुसरा मानाचा मान "श्री. म. माटे" ह्या कथाकारांना द्यावा लागतो. म्हणून ह्या विषयी आनंद यादव असे सुचवितात की, "ग्रामीण जीवनातील अनुभूतीना ललित वाडःमयात पहिल्यांदा स्थान मिळाले ते मराठी वाडःमयाच्या "वास्तववादी" काळात या वास्तववादाचा काळ पहिल्यांदा हरिभाऊ आपटे यांच्या कथा-कादंबऱ्यातून साि हत्वात आला. १ अशा प्रकारे त्यांनी वास्तववादाची दखल घेतली आहे.

वास्तववादी साहित्य समीक्षेच्या दृष्टीकोनातून वारी व्यंकटेश मांडगुळकर कथेची समीक्षा ह्या लेखात केली आहे. कारण की, यांच्या ह.ना. आपटे, श्री.म.माटे, वामन चोरधेड, बी. रघुनाथ हयांच्या नंतर व्यंकटेश मांडगुळकर हे वास्तव वादी प्रवृत्तीचा मराठी कथेत जाणिवपूर्वक अतिशय वास्तवरूपाने विस्तार करतात. माणदेशी माणसे सोबतीला घेऊन मांडगुळकरांनी प्रभावीपणे ग्रामीण कथेला वास्तववादी प्रवाहात आणून प्रवाहीत केले आहे. म्हणून वास्तवादी साि हत्य ही संकल्पना अभ्यासने गरजेचे समजून हा विषय संशोधनासाठी निवडलेला आहे. म्हणून विषयाच्या दृष्टीने वास्तवाद म्हणजे काय हे सांगणे महत्वाचे ठरते. म्हणून वास्तवादाची व्याख्या पुढील प्रमाणे सांगता येते.

वास्तवादाची व्याख्या

1. "आपल्या विषयी सृष्टीचे अि स्तव अमू शकते हे सत्य वास्तव वस्तुनिष्ठतेने जगणे म्हणजे वास्तवाद. " २ - भालचंद्र नेमाडे.
2. "This literary doctrine which gains ground everyday and leads to faithful imitation not of the master works of art but of the originals offered by nature could very well be called realism." 3 - Mercure Franceas.
3. "वास्तवाद म्हणजे कल्पनेच्या भरान्या न मारता सामान्यतः जीवनात जे आढळते ते जसेच्या तसे मांडणाचा प्रयत्न" ४ - यशवंत कळमकर

अशा प्रकारे वास्तवादाची व्याख्या बरिल समीक्षकांच्या मते स्पष्ट करता येते. त्यांच्या व्याख्यांच्या अनुशांगाने वास्तवादी शब्दाचा अर्थ आणि त्याचे स्वरूप काय ते पुढील प्रमाणे स्पष्ट करता येते.

वास्तवादाचा अर्थ व त्याचे स्वरूप

वास्तव या शब्दाचा अर्थ (खरे) असा आहे. जस आहे तसे मांडणे म्हणजे वास्तव वाद होय. साधारणपणे १८५७ पासून "वास्तवाद" ही संकल्पना वाडःमयात मांडण्यात आली आहे. वास्तवासाठी (सत्यासाठी) केलेला वाद म्हणजे वास्तवाद होय. हयालाच इंग्रजीमध्ये Realism असे म्हणतात. हया शब्दाला पर्यायी शब्द म्हणून वास्तववाद ही संकल्पना मराठी वाडःमयात कायम झाली. वास्तववाद म्हणजे केवळ जसेच्या तसे निवेदनात मांडणे हयाला वास्तवाद असे म्हणतात. हाच वरिल घटकाच्या दृष्टीकोनातून वास्तवादाचा अर्थ व त्याचे स्वरूप स्पष्ट करता येते. वास्तवतेच्या अर्थाचा व स्वरूपाचा धागा पकडून व्यंकटेश माडगुळकर यांच्या "वारी" हया कथेची वास्तववादी साहित्य समीक्षा हया संशोधन लेखात मांडली आहे.

"वारी" व्यंकटेश माडगुळकर यांच्या कथेचा वास्तववादी समीक्षात्मक आढावा.

व्यंकटेश माडगुळकर हे माणदेशी माणसाचा दुःखी, कष्टी, प्रामाणिक, सुष्ट, दृष्ट, भोळा वास्तव मुखवटा घेऊन मांडगुळकर मराठी वाडःमयला वास्तवतेची ओळख करून देतात. माणदेशातील माणसाचे वास्तव जगणे व भोगणे मांडगुळकरांनी आपल्या कथा संग्रहामध्ये अतिशय दखलपात्र वास्तव रूपाने मांडले आहे. त्यांच्या कथेतील अनुभव वास्तव व जिवंत असल्यामुळे त्यांची कथा वास्तवादी भूमिकेत मराठी वाडःमयात कथा हया वाडःमय प्रकार सरस ठरते. या घटकाच्या अनुशंगाने मांडगुळकरांच्या वारी या १९५६ साली प्रकाशित झालेल्या पंढरपुरच्या "अर्जुना" या दलित वारकऱ्यांचे वास्तवादी हदयाला धिडणा-या वारकऱ्याची मानसिकता व मन त्यांनी शब्दबद्ध केले आहे.

"संत चोखामेळा" ज्या प्रमाणे पंढरपुरच्या विठ्ठलाला दैवत माणूस आपण अस्पृश्य असूनही दखल घ्यावयाला लावते. त्याच प्रमाणे वारी मधील "अर्जुना" ही म्हतारपणी विठ्ठलाचे दर्शन व्हावे. असीध अपेक्षा मुलगाव सुनेजवळ व्यक्त करतो. व पंढरपुरला विठ्ठलाच्या दर्शनासाठी जातो. त्या अर्जुनाच्या मनाची तगमग, घालभेल, प्रचंड श्रद्धा व्यंकटेश मांडगुळकरांनी अतिशय हुबेहुब वास्तव रूपाने कथेत मांडली आहे. ती वास्तव श्रद्धा व वास्तवादी ओढ विश्वास व्यक्त करतांना. मांडगुळकर "वारी" या वास्तववादी कथेत लिहतात... की, चोखामेळांच्या समाधीपासी एक पोरगा कपाळाला बुक्का लावून बसलेला आसतो. तो पोरगा देवाचं दर्शन घ्या म्हणतो, आणि अर्जुना म्हणतो की, चोखाबाची निष्ठावान भक्ती मला माहित आहे. ती निस्सिम भक्ती होती. त्याच भक्तीची प्रतित्ती व्यक्त करतांना मांडगुळकर "वारी" या कथेत संवाद लिहतात...

"मग अर्जुनाने कापूर लावला. सांखर ठेवली. डोस्कं टेकून तो चोखोबाच्या पाया पडला. एक तांबडा पैसा ओवाळून त्याने त्या पोरापूढे केला. तेव्हा तो म्हणाला "बाबा" हरिजमांना देवळात जाण्याची परवानगी आहे. तूम्ही आत जा, देवदर्शन घ्या.

अर्जुनाने मुखवटा फिरवून मागे पाहिले. तेव्हा पायरीवरचा नामा प्रसन्न चेहऱ्याने बघत होता. गळ्यात माळा घालून बघत होता. विठोबाला ...

"तु माझी पक्षिणी, मी तुझे अंडत" म्हणून आळविणारा, " घालील लोटांगण वंदीन चरण" म्हणत राडळात नाचणारा, "न पढावे वेद नको, शास्त्र बोध। नामाचं प्रबंध पाठ करा।" अशी उच्चरवाने आरोळी ठोकणारा हा नामा आणि

"डोईचा पदर पडला खांदयावरी

"भरल्या बाजारी जाईन यी

म्हणणारी ती त्याची ओळी जनी धन्य धन्य"५



वरील संवादातून अर्जुनच्या मनातील चोखोबांच्या समाधिचा त्याच्या मनात किती उच्च प्रतिचा आणवत वास्तवाती निवेदनावरून स्पष्टपणे दिसून येते. स्वतःच्या मनाला अजुना किती ईमानदार व प्रामाणिक असता. ह्याच वास्तवरूपाने वर्णन व्यंकटेश मांडगुळकरांनी केले आहे. आपल्या अंधोळीने संताच मेळा अमंगळ होईल म्हणून अर्जुना नदीच्या पार खाल्याच्या पात्रात जातो. व अंधोळ करतो. हे वास्तववादी अर्जुन पात्र मांडगुळकरांनी अतिशय वास्तव रूपाने रेखाटले आहे. अर्जन बाहेरूनच हात जोडतो. बाहेरूनच तो गरूडखांबाला मिठीही मारता तो असे म्हणतो की, ...

"देवा, मी आत येनं खरं न्हवं.

मी म्हार, वंगळ जातीचा हे हाडपयलंच

बाटलेलं तें धिउन मी तुझ्यापाशी कसा येउ

देवा, ते माज्याच्यानं व्हनार न्हाई. सरकारनं आमा लोकास्नी तुज्याशी जाण्यास परवानगी दिली खरं, पण जानारे जातील! पण देवा, मी मातुर येनार न्हाई न्हाई ! मी माझी पायरी सोडणार न्हाई वाड वडील वागत आलं, तसाच मी बी वागन. देवा आपली लायकी न्हाई."

म्हान्या अर्जुनाच्या डोळयातून पाण्याच्या धारा लागल्या. त्या पुसत-पुसत तो बोलला...

"देवा. आता माज भरतं आलया, मला कसनुस वाटतंया. हयावर पुन्हा तुझ्याकडं येनं माज्याच्यान व्हनार न्हाई. हे तुजं शेवटचं दर्सन!"

एवढे बोलून अर्जुना खाली पडला. बराच वेळ पडला. लोक म्हणू लागले." अरे म्हातारा मेला का काय ?"

पर अर्जुना उठला आणि चिरगुटाने डोळे पुशीत वरचे वर मागे बघत. पेठेत गेला. पोरांसाठी त्याने चिरमुरे घेतले. सुनेसाठी कुंकू घेतले आणि मग सावकाशीने तो परत फिरला, आपल्या गावी येण्यासाठी निघाला."६

किंवा

"व्हय व्हयं, तो चोखा म्हार पाक आतं जाऊन देवाच्या पायावर, डोस्कं ठेवून आला. या गांधी बाबाच्या राज्यात इटाळचंडाळ पाक केला. त्या पुण्यावान बाबानं आमा लोकास्नी देव दावला. पयलं आमा लोकांची सावली दिवून कुनी अंगावर घे न्हतं. रस्त्यावर थुकायची दिवून बंदी! गळ्यात लोटकं बांधून त्यात थुंकायचं. त्यो काळ-पाक गेला. म्हार लोकांचा वनवास चुकला!"

"व्हय चुकला! तुमी जा मामाजी

इटुबारायालां बगून या"

सुनेची लेकांची परवानगी मिळाली... पाठीशी थोंगडयाची खोळ टाकून कमरेला धोतर गुंडाळून अर्जुना पंढरीला जाण्यास निघाला. लोकाने त्याला आठचा र आणे खर्चायला दिले.

वरचेवर "येतू र" "येतू र" करित तो घरातच घुटमळू लागला. मग कितीही विटले तरी हे असेच आहे. अर्जुनाचा पाय लवकर घरातून निघना. मग धाकला नातू आला आणि धोतराला लोंबकाळात म्हणाला.



"आमाला डाळं चिरमुर बत्तास आन बर का!"

महतास महणाला,

व्हय, आनीन माझ्या लेकराला!"

आणि पून्हा लेक आणि सून त्यांना बोलता,

जातू मी हयाला नीट बगा.

मी लगीं म्हागारी येतूचं"७

अशाप्रकारे "वारी" या कथेतून व्यंकटेश मांडगुळकर यांनी वास्तववादी कथानकात विठलाचा दर्शनासाठी व्याकूळ झालेला "अर्जुना" अतिशय खरोखर वास्तवरूपाने रेखाटला आहे.

वरिल संवादावरून अर्जुनाच्या मनातील प्रमाणीकपणा, निष्ठा आणि स्व-अस्तित्वाची मर्यादा अतिशय मनोभावे अर्जुनाच्या म्हाताऱ्या वारकऱ्यांच्या माध्यमातून व्यंकटेश मांडगुळकर वरिल संवादातून व्यक्त करतात.

समारोप

सदरिल संशोधनामध्ये व्यंकटेश मांडगुळकर यांनी वारी मधील अर्जुना खरोखर वास्तवरूपाने समीक्षेच्या दालनामध्ये जसाच्या-तसाच उभा केला आहे. ज्या अनुभवातून, जाणिवेतून आणि वास्तव भूमिकेतून अर्जुना मांडगुळकरांना जाणवला त्याच प्रमाणे त्यांनी अतिशय मर्यादापूर्वक वास्तववादी रूपाने कथेत मांडला आहे. वास्तवात जसा अर्जुना आहे. तसाच म्हणजेच व्यंकटेश मांडगुळकरांनी रोजच्या व्यवहारिक दुर्लक्षिलेल्या स्वभाव गुणांचे दर्शन वारी मध्ये त्यांनी वास्तववादी विवक्षित डोळ्यां दृष्टीकोनातून घडलेले समाज दर्शन वास्तवरूपाने वारी मध्ये अर्जुना च्या माध्यमातून रेखाटले आहे.

संदर्भसूची

१. आनंद यादव , ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि समस्या, मेहता पब्लिशिंग पुणे, तृतीय आवृत्ती जुलै १९९३, पृ.क्र. १०
२. भालचंद्र नेमाडे, टिका स्वयंवर, पृ.क्र. ११८
३. Rane Wellek: concepts of eroticism yale university press, New haven and London १९६४ IInd Ed. P. २२७
४. यशवंत कळमकर, वाडःमयीन वाद संकल्पना व स्वरूप संपादित, पृ.क्र. ११
५. आनंद यादव (ध्यवस्थापक) ग्रंथनिर्मिती केंद्र यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक, प्रकाशक डॉ. प्रकाश अतकरे, नाशिक पुनर्मुद्रण ऑगस्ट २०१४, पृ.क्र. ३९
६. उपरोक्त - पृ.क्र. ३९, ४०
७. उपरोक्त - पृ.क्र. ३८

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



Swami Vivekanand Vidyaprasarak Mandal's College of Commerce
One Day National Conference on
**Human Concerns and Issues in Literature, Social Sciences,
Commerce, Science and Technology**
(An Interdisciplinary Approach)

28th January 2019

ORGANISED BY

DEPARTMENT OF COMMERCE

DEPARTMENT OF COMMERCE, BORIM, PONDA, GOA - 403401.

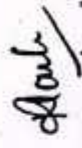
SWAMI VIVEKANAND VIDYAPRASARAK MANDAL'S COLLEGE OF COMMERCE, BORIM, PONDA, GOA - 403401.
(Affiliated to Goa University)



This is to certify that Mr./Mrs./Miss./Dr. डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार of मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, ता. करमाड, जि. औरंगाबाद. has participated and presented a paper on “ग्रामीण कथेतील स्त्री चित्रणाची : विविधता” in the One Day National conference on

“Human Concerns and Issues in Literature, Social Sciences, Commerce, Science and Technology” on 28th January 2019. His or her paper has been included in the conference bearing the AJANTA-ISSN - 2277 - 5730 with 5.5 Impact Factor.


Dr. (CA) Subrahmanya Bhat
Principal (Convener)


Ms. Priyanka Naik
Co-ordinator

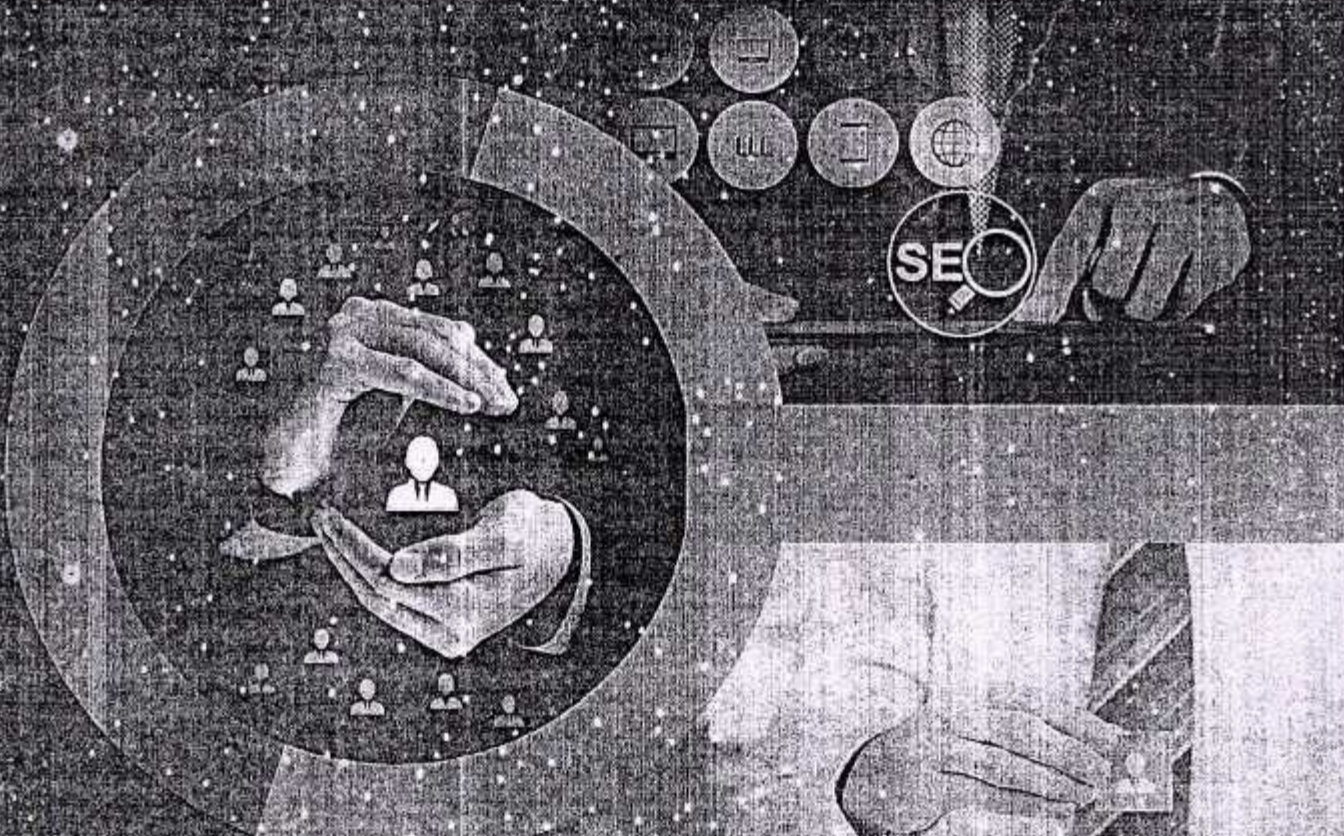


UGC
(40776)



ISSN-2277-5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume-VIII, Issue-I
January - March -2019
English Part-II/
Marathi / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjfactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

January - March - 2019

English Part - II / Marathi / Hindi

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF MARATHI

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	ग्रामीण साहित्य आणि ग्रामीण साहित्य चळवळीचे महत्व डॉ. प्रा. जयश्री देशमुख	१-३
२	वि. का. राजवाडेंचे इतिहास लेखनशास्त्र श्री. विलास आत्माराम देऊलकर	४-७
३	मराठवाड्याच्या ग्रामीण साहित्यातील स्त्रीदर्शन डॉ. राखी सिद्राम सलगर	८-१०
४	एकविसाव्या शतकातील स्त्री श्रीमती शेख जहारा अब्दुल रहिम	११-१३
५	ग्रामीण कथेतील स्त्री चित्रणाची : विविधता डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार	१४-१६
६	शेतीमधील मानवी चिंता आणि समस्या डॉ. फोले संभाजी कोंडनाजी	१७-२१
७	२०१० नंतरच्या मराठी स्त्रीवादी कवितेतील आत्मभान (निवडक कवियत्रींच्या संदर्भात) योगिता चोडणकर	२२-२८
८	स्त्रीवादी साहित्य डॉ. रंजना पाटील	२९-३३

५. ग्रामीण कथेतील स्त्री चित्रणाची : विविधता



डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार

मराठी विभाग प्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, ता. करमाड, जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

मराठी वाङ्मयाच्या समग्र दालनामध्ये मराठी साहित्यात अनेक साहित्य प्रकाराचे लिखाण झाले आहे. त्यापैकी ग्रामीण साहित्य हा एक वाङ्मय प्रकार आहे. ग्रामीण वाङ्मय प्रकारापैकी या शोधनिबंधांमध्ये ग्रामीण कथेतील स्त्रीचित्रणाची विविधता व त्यांच्या बहुआयामी स्त्री चित्रांचा आढावा या लेखात घेतला आहे. ग्रामीण स्त्री ही ग्रामीण कुटूंबाची मुख्य बाजू आहे. ग्रामीण परिस्थिती चांगली असेल तर ठिक नाही तर ग्रामीण स्त्रीच्या वाट्याला दुःख व कष्टी जीवन येते ते जगणे व भोगणे व सोपनातुन ती सहन करते. त्या जगण्या भोगण्याचे चित्रण अनेक ग्रामीण कथाकारांनी कथांमधून चित्रण केले आहे.

ग्रामीण स्त्री-चित्रण करणा-या कथाकारांमध्ये व्यंकटेश मांडगुळकर, शंकर पाटील, उध्दव शेळके, आनंद यादव, द. ता. भोसले, रा. र. बोराडे इत्यादी ग्रामीण मुख्य कथाकारांचा उल्लेख करावा लागतो. स्त्रीला ग्रामीण भागात वडील, भाऊ, पती नंतर मुलगा या बंधिस्त सभिकरणामध्ये जीवन व्यथित करावे लागते. लग्नाआधी माहेर, नंतर सासर घर त्यातील तिच्या नशिबाचे भोग, दुःख, वेदना तिला नाईलाजाने सहन करावे लागते. ग्रामीण भागात ग्रामीण वातावरणामुळे स्त्रीच्या वाट्याला आलेले दुःख वरील ग्रामीण कथाकार ग्रामीण कथेत शब्दबद्ध करतात.

ग्रामीण कथेतील स्त्री-वर्गाच्या वाट्याला आलेले दुःख-वेदना-भोग

1. व्यंकटेश मांडगुळकर

व्यंकटेश मांडगुळकरांनी माणदेशीरी ग्रामीणता ग्रामीण कथेमध्ये वास्तव रूपाने उभी केली आहे. माणदेशातील अस्सल ग्रामीणता, संस्कार, संस्कृती ते वास्तव्य अनुभवातुन मांडतात. व्यंकटेश मांडगुळकरांभोवती घडणा-या घटना, प्रसंग, व्यथा, दुःखी-कष्टी माणसे त्यांच्या लेखकमनाला बोलावतात व दुःखाच्या ओझ्याखाली दबलेली सौषिक माणसे त्यांना लिहायला प्रवृत्त करण्यात (1) म्हणुन व्यंकटेश मांडगुळकरांची ग्रामीण कथा त्यामुळे व्यक्तिचित्रीत किंवा व्यक्तिकेंद्रीत वाटत नाही. तर स्व-अनुभवातील माणदेशी माणसाची ग्रामीण, सामाजिक, सांस्कृतिक आणि प्रादेशिक अस्सल ग्रामीण वास्तव कथा वाटते. म्हणुन त्या ग्रामीणतेबद्दल डॉ. सावदेकर म्हणतात, त्याप्रमाणे व्यंकटेश मांडगुळकरांच्या साहित्यात निसर्ग चवीत बदल म्हणुन पेरलेला नसतो तर निसर्ग प्रेमातुन उमटलेली दृष्टी त्यांच्या साहित्यामागे उभी असते.2 उमटलेली दृष्टी व दुःख ते "जांभळाचे दिवस" या कथेतील चमनला ग्रामीण वातावरणामुळे तिच्या वाट्याला कसे दुःख येते. ते ती भोगते. कारण नवरा काळा ती सुंदर असते. ती सासर सोडते. माहेरी राहते. पण ती मनात दुःखी कष्टी असते. अशा प्रकारे ग्रामीण कथेतील ग्रामीण चमनाच्या वाट्याला आलेली दुःख व्यंकटेश मांडगुळकरांनी व्यक्त केले आहे.



2. शंकर पाटील

शंकर पाटील अतिशय वास्तव अनुभव कथन करणारे प्रसिध्द ग्रामीण कथाकार आहेत. ग्रामीण जीवनाचा आणि त्यातील संवेदनशीलता हे त्यांच्या कथेचे केंद्रबिंदु आहेत. शंकर पाटील हे अतिशय प्रामाणिक कथाकार आहेत ते स्व-अनुभव, वास्तव पातळीवर मांडतात म्हणुन त्यांच्या संदर्भात अरविंद वामन कुळकर्णी नोंदवितात, "ग्रामिण परिसरातील विशिष्ट अशा मानवी मनाची गुंतागुंत, त्याचे तिथल्या जीवनाशी जुळलेले अनेक पदर, तिथल्या मातीने त्या जीवनाला व माणसाला दिलेली समिश्र परिणामे यांची अनेक पातळ्यांवरील अनुभूती आणि त्यांची रूपसिध्दी या पुढच्या टप्याला मात्र शंकर पाटील यांनी प्रथम प्रारंभ केला."३ प्रामुख्याने शंकर पाटील यांच्या ग्रामीण कथेतुन शेतकरी, शेती, कुटूंब त्यांच्या व्यथा, वेदना, दु:ख, भोग- ते उदा. आभाळ, वळीव, गारवेल, उन्न, मागणं हया कथेतुन स्त्रीचे जगणे, भोगणे अतिशय वास्तवरूपाने उभे करतात. त्यातील हरबाची बायको, दु:खी-भागा-(वळीव) भुजंगमधील-जनाई इत्यादी स्त्रीया बहुआयामी चित्रणातुन दु:ख व्यक्त करतात.

3. उध्दव शेळके

'उध्दव शेळके' हे ग्रामीण कथेत त्यातील परिसर, संस्कृती, वास्तव-चालीरिती, प्रथा, परंपरा आणि त्याच वरोवर लोकजीवन व समाजाचे वास्तव दर्शन घडवितात. म्हणुन त्यांच्या बाबतीत आनंद यादव लिहतात., "उध्दव शेळके हे त्या दृष्टीने व्यक्तेश मांडगुळकरांच्या माडीला मांडली खेदुन बसल्या सारखे वाटतात"४ विशेष करुन शेळके यांच्या कथेत विदर्भातील गरिब-श्रमजीव माणसाचे दु:ख स्त्री-संघर्ष त्यांच्या कथेत येतात. जसे की, "पावसाळ मधील शिक्षण अधिक आठ-कथा मधील तात्याची बायका", 'अंगतिकता' मधील रंगी इत्यादी स्त्री पात्राची दु:ख, कष्ट, भोग, संघर्ष, व्यथा, वेदना उध्दव शेळके अतिशय पोटतिडकीने कथेत मांडले आहे.

4. आनंद यादव

'आनंद यादव' यांच्या ग्रामीण कथेत रंगविलेली ग्रामीण पात्र हे कागल भागातील आणि कोल्हापुर परिसरातील आहेत. यादवांची कथा ग्राम संस्कृतील शेत, ग्रामीण जीवन, शेतमजुरी या समस्ये भोवती फिरतांना दिसते. त्यांनी ग्रामीण प्रतिमा व प्रतिके हे वास्तव रूपात मांडुन, त्यांच्या जीवनातील मार्मिक ते आशययुक्त व्यक्त करतात. त्यांच्या कथेतील दैन्य व दारिद्रयाने पिचलेले मजुर व कामगार यांची व्यथा व वेदना ते 'धुनं' फाट्याचं पानी 'धरजाबई' 'घातमोडे' खळाल (मुधा) मधील नरसुची बायको म्हणुन डॉ. सौ. कल्पना वोरकर म्हणतात की, "आनंद यादव यांच्या कथेतील दैन्य व दारिद्रयाने पिचलेले मजुर व कामगार वरिष्ठांच्या सहवारात राहुनही स्वतःची अलिप्तता राखतात. स्वतःच स्वतःच्या पायाभर उभे राहतात. बरिष्ठाविषयी त्यांच्या मनात जरूर तेवढा आदर आहे. ते राखुनही ती स्वत्व जोपासतात"५ यादव हे ग्रामीण कथेतुन स्व-सत्वाबरोबर शेतीची, शेतमजुराची, श्रमजीवी, माणसांची कथा व त्यांच्या वाटयावर माणसाचे दु:खभोग ते भोगतांना दिसून येतात. त्याप्रमाणे घरात दारिद्रय असतांनाही सामज्यसपणे कुटूंबामध्ये तडजोड करण्याचा प्रयत्न करतात व काटकसरीने संसार सांभाळतांना स्त्री सहनशीलतेने दु:ख गिळुन घेतात.



5. रा. रं. बोराडे

रा. रं. बोराडे हे मराठवाडयातील ग्रामीण कथाकार, एक अष्टपैलु प्रतिभावंत लेखक आहेत. त्यांच्या मराठवाडयातील कृषिजीवन, मजुरी, दारिद्र्यस, भुक, दुःख, वेदना इत्यादी बोराडेचे लेखन विषय आहेत. त्यांनी 'पेरणी', 'मळणी', 'ताळमेळ', 'नातीगोती', 'बोळवण', 'वाळवण' 'वरात', 'माळरान', 'राखण' 'गोधळ', 'बुरुज', 'वानवळा' इत्यादी कथा संग्रहातुन ग्रामीण स्त्रियांच्या दुःखभोगांचे चित्रण केले आहे. म्हणुन या संदर्भात बोराडे म्हणतात, 'ग्रामीण स्त्रीच सुख-दुःख, तिच्या वेदना-व्यथा माझ्या इतक्या समर्थपणे अन्य कुणीही ग्रामीण साहित्यिकांनी मराठीत आणलेल्या नाहीत' 6 यावरून बोराडेची लेखन वृत्ती ही ग्रामीण गागांच्या नाळेसी एकनिष्ठ जोडलेली आहे. हे दिसुन येते.

समारोप

अशा प्रकारे ग्रामीण कथेतील स्त्री-चित्रणाची विविधता सांगातांना ग्रामीण कथेतील स्त्री-वर्गाच्या वाटयाला आलेल्या दुःख-वेदना-भोग व सुख हयाचे वर्णन हया शोध निबंधामध्ये केले आहे. हे ग्रामीण दुःख-वेदना व्यक्त करतांना व्यंकटेश मांडगुळकर, शंकर पाटील, उध्दव शेळके, आनंद यादव आणि रा. रं. बोराडे इत्यादी ग्रामीण कथाकारांनी स्त्री-वेदना, सुख-दुःख नशीबाचे भोग अतिशय वास्तव पातळीवर अस्सल ग्रामीण बोलीभाषामध्ये कथन केले आहेत. ग्रामीण स्त्रियांच दुःख त्यांच्या, व्यथा-वेदना त्यांच्या साहित्यात अतिशय पोटतिडकीने मांडतात वरील ग्रामीण कथाकारांनी वाडमयात ग्रामीण कथेतील स्त्री चित्रणाची विविधता मांडली आहे.

संदर्भ ग्रंथसूची

1. 'डॉ. सौ. कल्पना बोरकर', 'स्वातंत्रोत्तर मराठी ग्रामीण कथा आणि स्त्री' -स्वरूप-प्रकाशन औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती, 6 डिसेंबर 2015, पृ.क.200
2. 'डॉ. आशा सावदेकर', 'व्यक्तिवेध', लाखे प्रकाशन-नागपुर 2011, पृ.क.112
3. 'अरविंद वामन कुलकर्णी', 'महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका', ग्रामीण साहित्य विशेषांक, 1980, पृ.क.10
4. 'डॉ. आनंद यादव', 'ग्रामीण साहित्य: स्वरूप आणि समस्या', मेहता पब्लिशिंग, पुणे, तृतीय आवृत्ती-जुलै 1993 पृष्ठ क. 21
5. 'डॉ. सौ. कल्पना बोरकर', 'स्वातंत्रोत्तर मराठी ग्रामीण कथा आणि स्त्री', स्वरूप-प्रकाशन, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती 6 डिसेंबर 2015 पृ.क. 203
6. 'रा. रं. बोराडे', 'ग्रामीण साहित्य: चळवळ आणि निर्मिती', पृ.क.94

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

SPECIAL ISSUE
"INDIAN FOREIGN POLICY AND PRESENT SCENARIO"

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - III

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I Marathi Part - III January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



Dr. Babasahab Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

&
Ajjintha Education Society's

Pandit Jawaharlal Nehru Mahavidyalaya, Aurangabad (M.S.) India

JOINTLY ORGANISED INTER-DISCIPLINARY

National Seminar

ON

INDIAN FOREIGN POLICY AND PRESENT SCENARIO

Monday February 18, 2019

Certificate

This is to certify that Mr./Mrs./Prof./Dr. यशोवन्त मककर भाटे participated / delivered a plenary lecture as Resource Person / Chairperson / Presented a paper entitled भारत - पाकिस्तान संबंध.

.....
in National Seminar on "INDIAN FOREIGN POLICY AND PRESENT SCENARIO" held at Ajjintha Education Society's Pandit Jawaharlal Nehru Mahavidyalaya, Aurangabad (M.S.).

Dr. Pandit S. Nalawade

Convener

Dr. Ganesh M. Agnihotri

Principal



CONTENTS OF MARATHI PART - III

अ.क्र.	लेख-आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ-क्र.
१	भारत - चीन संबंध प्रा. राख अरुण महादेव	१-२
२	भारत पाकिस्तान संबंध प्रा. संजय हराळे	३-८
३	दक्षिण आशिया : प्रादेशिक एकीकरणाची आवश्यकता आणि त्यापुढील आव्हाने दिवेक बी. आवारे	९-१५
४	भारत-ऑस्ट्रेलिया नागरी अणुकरार : एक दृष्टिक्षेप डॉ. प्रमोद भगवानराव जाधव माधुरी कचरू पवार	१६-१७
५	सिंधू काळातील व्यापार विषयक परराष्ट्र धोरण प्रा. डॉ. गणेश ह. घुगे	१८-२१
६	ब्रिक्स बँक - एक अभ्यास डॉ. व्ही. एच नागरे	२२-२६
७	भारताचे बदलते परराष्ट्र धोरण विशेष संदर्भ - अमेरिका डॉ. विलास आघाव	२७-३६
८	भारताचे परराष्ट्र धोरण : एक दृष्टिक्षेप डॉ. काळे आर. के.	३७-४०
९	भारत - दक्षिण आफ्रिका संबंध आणि वाटचाल प्रा. डॉ. अजय पाटील	४१-४३
१०	भारत - अमेरिका राजकीय संबंध डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे	४४-४६
११	भारतीय परराष्ट्र धोरणा पुढील आव्हाने प्रा. लक्ष्मण एफ. शिराळे	४७-५१
१२	भारत - पाकिस्तान संबंध प्रशांत मलकाप्पा माटे	५२-५५



१२. भारत - पाकिस्तान संबंध

प्रशांत मलकाप्पा माटे
संशोधक विद्यार्थी.

प्रस्तावना

१९४७ नंतर भारताची दोन राष्ट्रांत विभागणी झाली. भारत व पाकिस्तान हे आंतरराष्ट्रीय पातळीवर स्वतंत्र राष्ट्र म्हणून उदयास आले. पाकिस्तानच्या निर्मितीपासुनच भारत आणि पाकिस्तान यांच्यातील संबंध कधीच मैत्रीचे राहिले नाहीत. सुरुवातीपासुनच त्यांच्यात भीतीचे वातावरण तयार झाले.

भारत आणि पाकिस्तानचा इतिहास प्रामुख्याने संघर्षाचाच राहिलेला आहे. भारत आणि पाकिस्तान सतत अघोषित युद्धाच्या स्थितीत राहत आलेले आहेत. विभाजनानंतर बऱ्याच समस्यांचे समाधान दोन्ही देशांच्या दरम्यान झालेले आहे. परंतु कश्मीरची समस्या ही द्विपक्षीय संबंधात फार मोठी समस्या राहिलेली आहे. भारत आणि पाकिस्तान यांच्यात १९४८, १९६५ व १९७१ मध्ये आतापर्यंत तीन वेळा युद्ध झालेले आहेत.

भारत व पाकिस्तान यांच्यात ऐतिहासिक तारुंड समझौता व सिमला करार झाल्यानंतर सुद्धा यांच्यातील संबंध सुधारलेले नाहीत. पाकिस्तानने अमेरिकेकडुन मिळालेल्या आर्थिक मदतीचा वापर भारता विरुद्ध केलेला आहे. भारत व पाक यांच्यातील संबंधात जेव्हा-जेव्हा शांततेविषयी चर्चा केली जाते. तेव्हा पासुन भारतात मोठ्या प्रमाणात दहशतवादी कारवाया घेता जातात. १९९९ मध्ये वाजपेयी सरकारने पाक संघर्ष सुधारण्यासाठी लाहोर बस यात्रा केली. अनेक महत्त्वपूर्ण घोषणा करण्यात आल्या. परंतु थोड्याच दिवसात जुलै १९९९ मध्ये कारगिल संघर्ष घडवून आला.

२००० मध्ये भारत व पाकिस्तान यांच्यातील संबंधात मोठ्या प्रमाणात कटुता निर्माण झाली. भारताचे विमान पाकिस्तान स्थित दहशतवाद्यांनी काठमांडू येथुन अपहरण केल्या गेले. भारत व पाक यांच्यातील संबंधात मोठ्या प्रमाणात चढउतार होताना दिसतात. जुलै २००१ मध्ये भारत व पाक यांच्यातील बहुचर्चित 'आग्रा शिखर वार्ता' निष्प्रभ ठरली. एप्रिल २००३ मध्ये वाजपेयींनी श्रीनगर दौऱ्यावर असताना दोन्ही देशांचे संबंध वाढविण्यावर भर दिला होता परंतु आतंकवादी कारवाया शांततेच्या मार्गात अडथळा निर्माण करताना दिसुन आल्या.

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंग यांच्या काळात दोन्ही देशातील संबंध सुधारण्यासाठी एप्रिल २००५ मध्ये बस सेवा प्रारंभ केल्या. मनमोहन सिंग यांनी आंतरराष्ट्रीय पातळीवर सार्क नाम परिषदे दरम्यान वेळोवेळी पाकिस्तान सोबत शांततेसाठी चर्चा करण्यात पुढाकार घेतला आहे.

२६ नोव्हेंबर २००८ च्या मुंबई हल्ल्यानंतर भारत व पाक यांच्या संबंधातील दरी वाढल्या गेली. भारताने आंतरराष्ट्रीय पातळीवर दहशतवादासंबंधी प्रश्न उठवलेला आहे.



२०१४ मध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या शपथविधी कार्यक्रमाच्या निमित्ताने दोन्ही देशांमध्ये संबंध पुढाकार घेतला आहे.

थोडक्यात, भारत व पाकिस्तान यांच्यातील संबंध हे सतत चढ-उतार होतांना दिसून येतात. कश्मिरची समस्या व दहशतवाद या संबंधातील सर्वात मोठी अडचण निर्माण झालेली आहे. दोन्ही देशातील संबंध हे राजकीय नसून सांस्कृतिक, आर्थिक अशा व्यापक स्वरूपाचे आहेत. त्यामुळे दोन्ही देशांचे संबंध भाविष्यात सुधारणे गरजेचे आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे

भारत व पाकिस्तान संबंधाचा संशोधन करतांना काही उद्देश डोळ्यासमोर ठेवण्यात आले आहे.

१. भारत-पाकिस्तान संबंधात काश्मीर समस्याच्या संदर्भात अभ्यास करणे.
२. आशिया खंडात शांतता प्रस्थापित होण्यात भारत-पाक संबंध अडथळा आहे किंवा नाही याचा अभ्यास करणे.
३. भारत-पाक संबंधामुळे भारताच्या सांस्कृतिक, शैक्षणिक व आर्थिक क्षेत्रावर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.
४. भारत-पाक संबंध सुधारण्यासाठी महत्त्वपूर्ण उपाययोजना करणे.

संशोधन पध्दती

प्रस्तुत विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी दुय्यम साधन सामग्रीचा वापर करण्यात आला असून तथ्य संकलनासाठी विविध संदर्भग्रंथ, मासिके, साप्ताहिके विविध परराष्ट्र धोरण विषयक अहवाल, ई.पी.डब्ल्यू. व महत्त्वपूर्ण वेबसाईटचा वापर करण्यात आला.

संशोधनाचे विश्लेषण

भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर भारताचे पहिले पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरूंच्या विचारांनी भारताचे परराष्ट्र धोरण निर्धारणात मोठ्या प्रमाणात प्रभाव होता. नेहरूंनी शांततेच्या मार्गाने पाकिस्तान बरोबर चर्चा करण्यास प्रारंभ केला. नेहरू व पाकिस्तानचे पंतप्रधान लियाकत अलीखान यांच्यात इ.स. १९५० मध्ये दोन्ही देशांतील अल्पसंख्याकांच्या प्रश्नावर वाटाघाटी झाल्या होत्या. तसेच त्यांच्यात त्यासंबंधी एक करारही झाला होता. परंतु पाकिस्तान सरकारची प्रमाणिक इच्छा द्विपक्षीय संबंधात सकारात्मकता केव्हाच नव्हती.

इ.स. १९६२ च्या चिनी आक्रमणानंतर भारतापुढे काही गंभीर समस्या निर्माण झाल्या. या पराभवामुळे भारताच्या क्षमतेविषयी सर्वांच्या मनात शंका निर्माण झाल्या त्यातच १९६५ मध्ये पाकिस्तानने भारतावर जम्मू-काश्मीरच्या नैऋत्येकडील सीमांवर जोरदार आक्रमण केले. संयुक्त राष्ट्रांच्या सुरक्षा समितीने २२ सप्टेंबर १९६५ रोजी दोन्ही राष्ट्रांत युद्धबंदी घडवून आणली.

ताश्कंद करार

भारत व पाकिस्तान यांच्यात मध्यस्थी करण्याचा सोव्हियत युनियनचा प्रस्ताव दोन्ही देशांनी मान्य केला. तत्कालीन रशियाचे अध्यक्ष ब्रेझनेव्ह व कोसिजीन यांनी भारताचे पंतप्रधान लालबहादूर शास्त्री व पाकिस्तानचे पंतप्रधान आयुबखान



यांच्यात इ.स. १९६६ मध्ये ताश्कंद येथे करार करण्यात आला. या करारानंतर लालबहादूर शास्त्रींचे दुःखद निधन झाले. या करारानंतर भारत व पाकिस्तान यांच्यात द्विपक्षीय संबंध सुधारतील असे वाटत होते. परंतु पाकिस्तान कडून वारंवार कराराचे उल्लंघन होत होते.

१९७१ चे भारत - पाकिस्तान युद्ध

१९७० नंतर पाकिस्तानातील अंतर्गत परिस्थिती अत्यंत बिकट झाली होती पाकिस्तानच्या राज्यकर्त्यांनी पूर्वं पाकिस्तानचा नेहमी दुजाभावाची वागणूक दिली होती त्यामुन पूर्वं पाकिस्तानात असंतोष मोठ्या प्रमाणात होता त्यातुनच १६ डिसेंबर १९७१ रोजी युद्ध सुरु झाले. अकरा दिवसांच्या युद्धानंतर स्वतंत्र बांग्लादेश अस्तित्वात आले.

त्यातुनच सिमला करार २८ जुलै १९७२ मध्ये भारताच्या पंतप्रधान इंदिरा गांधी व पाकिस्तानच्या पंतप्रधान झुल्फिकार अली भुट्टो यांच्यात 'सिमला करार' घडवुन आला. सिमला कराराचे महत्वाचे फलित म्हणजे, भारत व पाकिस्तान यांनी या करारान्वये आपपसातील वादग्रस्त प्रश्न परस्पर विचारविनिमयातुन सोडवण्याचे मान्य केले. युद्धबंदीच्या दिवशी अस्तित्वात असलेल्या प्रत्यक्ष सीमारेषेस दोन्ही देशातील नियंत्रण रेषा म्हणुन मान्यता देण्याचे दोन्ही देशांनी मान्य केले.

दोन्ही देशांनी सांस्कृतिक-आर्थिक व वैज्ञानिक क्षेत्रात परस्परांनी सहकार्य करण्यास मान्यता दिली.

भारताच्या अणुचाचण्या व पाकिस्तानची भूमिका

मे १९९८ मध्ये भारताने पोखरणच्या वाळवंटात पाच अणुचाचण्या घेतल्या भारताच्या अणुचाचण्या नंतर पंधरा दिवसांतच पाकिस्तानने ही अशाच प्रकारच्या अणुचाचण्या घेतल्या भारताचे पंतप्रधान अटलबिहारी वाजपेयींनी संसदेमध्ये अणुचाचण्या विषयी निवेदन देतांना म्हटले होते की, "भारत सर्वप्रथम कोणत्याही देशाविरुद्ध अणुचाचणीचा प्रयोग करणार नाही". परंतु पाकिस्तानचा अणुकार्यक्रमाविषयी भारतालाच नव्हे, तर जगाच्या दृष्टिने अत्यंत धोकादायक आहे.

भारत-पाकिस्तान सीमावाद

भारत व पाकिस्तान यांच्यामध्ये प्रत्यक्ष नियंत्रण रेषा व आंतरराष्ट्रीय सीमारेषेवर पाकिस्तानकडुन शास्त्रसंधीच्या उल्लंघनाचे प्रकार गेल्या काही दिवसांपासुन मोठ्या प्रमाणात वाढले आहे. भारत व पाकिस्तान मध्ये जम्मू-कश्मीर राज्यात ७७८ कि.मी. लांबीची प्रत्यक्ष नियंत्रण रेषा व १९८ कि.मी. लांबीची आंतरराष्ट्रीय सीमारेषा आहे. या दोन्ही सीमारेषेवर गेल्या सहा माहिण्यात पाकिस्तानकडुन शास्त्रसंधीचे उल्लंघनांच्या ९६ घटना घडल्या आहेत.

नरेंद्र मोदी सरकारच्या काळात भारताचे परराष्ट्र धोरण हे शांततेच्या मार्गाने द्विपक्षीय संबंध सुधारण्यासाठी प्रयत्नशील आहे.

निष्कर्ष

भारत-पाकिस्तान यांच्यातील संबंधाचा अभ्यास करतांना काही निष्कर्ष काढण्यात आले.

१. भारत व पाकिस्तान यांच्या संबंधात सुधारणा घडुन येण्यामध्ये काश्मीर प्रश्न हा मोठा अडथळा असल्याचे दिसून आले.



२. भारत व पाकिस्तान यांच्यातील द्विपक्षीय संबंध हे बदलत्या सरकारानुसार बदलत गेल्याचे दिसून आले.
३. दोन्ही देशातील सांस्कृतिक, शैक्षणिक, वातावरण हे सलोख्याचे नसल्याचे दिसते, तसेच आर्थिक क्षेत्राच्या वाढीचे देखील दोन्ही देशातील संबंधाचे वाईट परिणाम झाल्याचे दिसते.
४. दोन्ही देशातील संबंध बिघडण्यामध्ये पाकिस्तानची असलेली बिश्वासघाती भूमिका कारणीभूत असल्याचे दिसून येते.

उपाय

भारत-पाकिस्तान संबंध हे सुधारून दोन्ही देशातील परराष्ट्र व्यापार संबंध सुधारण्यासाठी पुढील प्रमाणे उपाययोजना करणे गरजेचे आहे.

१. भारत पाकिस्तान संबंधांच्या संदर्भात कळीचा मुद्दा बनलेला कश्मीर प्रश्न हा चर्चेच्या माध्यमातून तात्काळ सोडवावा जेणेकरून दोन्ही राष्ट्रातील परराष्ट्र व्यवहार सुधारण्यास मदत होईल.
३. भारत पाकिस्तान संबंध सुधारून दोन्ही देशांच्या आर्थिक व्यवहारात वाढ होण्यासाठी तसेच सांस्कृतिक, शैक्षणिक संबंध सुधारण्यासाठी पाकिस्तानने वारंवार केले जाणारे शस्त्रास्त्र संधीचे उल्लंघन तसेच पाक पुरस्कृत दहशतवाद थांबवावा. अन्यथा येणाऱ्या काळात कर्जबाजारी पाकिस्तानाला याची खूप मोठी किंमत मोजावी लागेल.

संदर्भग्रंथ

१. देवळाणकर शैलेंद्र (२०१६), "मोदी कालखंडातील भारताचे परराष्ट्र धोरण सात्यत्य आणि स्थित्यंतर", सकाळ प्रकाशन, पुणे.
२. दीक्षित जे. एन. (२०११), "युद्ध आणि शांतता काळात भारत-पाकिस्तान", चिनार पब्लिशर्स, पुणे.
३. Mohanty Biswaranjan, "Foreign Policy of India in the २१ Century", New Century Publications, New Delhi.
४. नाईक विजय (२०१५), "साऊथ ब्लॉक दिल्ली शिष्टाहचे अंतरंग", रोहन प्रकाशन, पुणे.
५. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक), संपादक महेंद्र जैन, उपकार प्रकाशन, आग्रा, पंजाब.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 155 | Mar 2019 | ISSN – 2248-7143



INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

**CONTEMPORARY
ISSUES IN INDIA
(SOCIAL SCIENCE)**

- GUEST EDITOR -

Prin. Dr. Ashok A. Kakade

- CHIEF EDITOR -

Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -

Prof. Sanjay T. Salve

Printed By : **PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON**

Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 155 • Mar. 2019 • ISSN – 2348-7143



INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

CONTEMPORARY ISSUES IN INDIA (SOCIAL SCIENCE)

... Organized by ...

Sillod Shikshan Sanstha Aurangabad's

Siddharth Arts, Commerce & Science College,

Jafrabad, Dist. Jalna - 431206 (M.S.) India.

... Guest Editor ...

Principal Dr. Ashok A. Kakade

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Executive Editors ...

Prof. Sanjay T. Salve

... Co-Editors ...

Dr. S. L. Medhe | Dr. V. N. Patil

Dr. K. S. Patil | Prof. U. M. Wazarkar

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON



Sillod Shikshan Sanstha Aurangabad's

SIDDHARTH ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, JAFRABAD
Dist. Jalna (M.S.) ISO 9001:2008

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad Sponsored

One Day
National Conference on
CONTEMPORARY ISSUES IN INDIA
(Social Science)
Tuesday 5th March, 2019



DEPARTMENT OF ARTS

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs. *Prashant Makappa. Mathe*

from *Sillod, Dr. Babasaheb Ambedkar University, Aurangabad.*

has participated in the National Conference on **Contemporary Issues in India** Organised by Siddharth Arts, Commerce & Science College, Jafrabad Dist. Jalna on 5th march 2019. He/She has presented a

research paper Titled *अस-रास्य रीति*

He/She has also Chaird a Session / Chief Guest / delivered lecture on

..... as a resource person on 5th march 2019. His/her participation is appreciated.

Salve
Prof. Sanjay T. Salve
Organizing Secretary

Makappa
Dr. Kakade A.A.
Principal
Siddharth Arts, Commerce & Science College, Jafrabad



६३.	ई-स्रोत : एन. लिस्ट कन्सोर्टिया.....	१६०
	- प्रा. पठाडे ए.एल.	
६४.	उच्च शिक्षण आणि उपयोजित योग अभ्यास	१६२
	- डॉ. प्राजक्ती नि. वाघ	
६५.	भारतीय लोकप्रशासनासमोरील आव्हाने.....	१६४
	- सुभाष पोले	
६६.	अनुसूचित जातींच्या समस्या आणि वंचितीकरण.....	१६६
	- डॉ. राजेंद्र बगाटे	
६७.	भारतातील गरिबी - एक चिंतन	१७०
	- प्रा. शरद अंबादास पवार	
६८.	नक्षलवाद- एक विदर्भासमोरील आव्हान	१७२
	- राजेंद्र जाणू हिवाळे, भागवत अंकुश करडकर	
६९.	जन सामान्यांच्या इतिहास लेखणातील नव्या संभावना.....	१७४
	- डॉ. शैलेश राऊत	
७०.	शेतकऱ्यांचा प्रश्न व सरकारची भूमिका.....	१७५
	- सहयोगी प्रा. सौ. प्रतिभा टावरी	
७१.	भारतातील राष्ट्रीय व प्रादेशिक राजकीय पक्षांमधील सत्तासंघर्ष.....	१७९
	- प्रा. शरद बाबुराव सोनवणे	
७२.	भारतातील दारिद्र्य : एक ज्वलंत समस्या	१८१
	- डॉ. दिनेश यादवराव पारखे	
७३.	केंद्र-राज्य संबंध.....	१८४
	- प्रशांत मलकाप्पा माटे	
७४.	आधुनिक ग्रंथालयामध्ये ई-बुक्सची आवश्यकता	१८६
	- अमोल साहेबराव बाघमारे	
७५.	मुलभूत हक्क आणि भारतीय संविधान.....	१८८
	- डॉ. संभाजी संतोष पाटील	
७६.	भारतातील बेरोजगारी एक समाजिक समस्या.....	१९२
	- संतोष निकाळजे मुरलीधर	
७७.	स्वयंसहाय्यता गट : महिला सवलीकरणाचे एक प्रभावी माध्यम	१९४
	- डॉ. प्रकाश तुकाराम शिंदे	
७८.	शेतकरी आत्महत्या एक सामाजिक चिंतन.....	१९७
	- का. प्राचार्य डॉ. भिमराव प्र. उबाळे	
७९.	ई-अध्ययनाचे शिक्षणात महत्व, भूमिका व कार्य.....	२०२
	- कु. जयश्री प्रल्हाद शिंदे	
८०.	पंचायत राज संस्था पुढील आव्हाने!.....	२०५
	- डॉ. एकनाथ सोपानराव सुर्वे	
८१.	महाराष्ट्रातील सार्वजनिक वितरण व्यवस्था व तक्रार निवारण.....	२०७
	- प्रा.डॉ. बालासाहेब किलचे,	
८२.	दहशतवाद : एक ज्वलंत समस्या.....	२१२
	- प्रा. लक्ष्मण एफ. शिराळे	
८३.	विकासात जलस्रोतांच्या व्यवस्थापनाची भूमिका	२१५
	- डॉ. बिरंगणे एस. एस	
८४.	भारतातील स्त्री-पुरुष गुणोत्तर - एक अभ्यास	२१७
	- डॉ. महादेवी वैजनाथ फड, कावळे एस.टी.	

केंद्र-राज्य संबंध

प्रशांत मलकाप्पा माटे
संशोधक विद्यार्थी (राज्यशास्त्र विभाग)

प्रस्तावना :

भारताला १९४७ मध्ये स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर भारताला भौगोलिक, सांस्कृतिक, विविधता मोठ्या प्रमाणात असल्यामुळे भारतामध्ये सर्व घटकांना एका सुत्रात समावून घेण्याचे मोठे आव्हान न भारताच्या राज्यघटने समोर होते. त्यादृष्टिने भारताच्या घटनाकारांनी कमीत कमी राज्य असतील यादृष्टिने घटना निर्मित करण्यावर भर दिला.

आज भारतामध्ये २८ घटक राज्ये आहेत. परंतु अमेरिके सारख्या देशात सांस्कृतिक विविधता नसतांना सुद्धा या देशामध्ये ५० घटक राज्ये आहेत. भारतामध्ये २१ व्या शतकामध्ये छोट्या राज्यांची मागणी ही वाढतांना दिसून येते. ही मागणी वाढण्याची अनेक कारणे आहेत. त्यामध्ये प्रामुख्याने आर्थिक विकास प्रामुख्याने दिसून येतो.

केंद्र-राज्य सरकार आपापल्या धारेणानुसार विकास करण्या संबंधी महत्त्वाची भूमिका पार पाडत असतात. केंद्र सरकारची भूमिका ही प्रामुख्याने राज्यांच्या विकासासाठी अत्यंत महत्त्वाची असते. राज्य सरकारच्या विकासामध्ये केंद्र सरकारची महत्त्वाची भूमिका असल्याचे आजपर्यंतच्या अभ्यासातून दिसून येते.

भारतीय घटनेतील कलम एक ची सुरुवात होते, भारत राज्यांचा एक संघ असेल भारतीय राज्यघटनेत कोठे ही संघराज्य हा शब्द आलेला नाही. भारतीय घटनाकारांनी भारताची विविधता, क्षेत्रफळ लक्षात घेऊन संघराज्य पध्दतीचा समन्वय साधण्याचा प्रयत्न केला आहे. डी.डी. बसु यांच्या मतानुसार भारताने संविधान हे पूर्ण पणे एकात्मक नाही तसेच ते पूर्ण पणे संघात्मक नाही तर ते दोन्हीचे मिश्रण आहे. डॉ. आंबेडकर यांच्या मते, या इंग्रजी शब्दाचा अर्थ संघराज्य असाच अपेक्षित होता. आपल्या राज्यव्यवस्थेत संघराज्याचेच गुण अधिक आहेत. असे के.सी. व्हियर म्हणतात. म्हणून त्यांनी भारताला निमसंघराज्यात्मक म्हटले आहे.

भारताच्या घटनाकारांनी केंद्र-राज्य संबंध हे चांगल्या पध्दतीने राज्य कारभार करण्यासाठी घटनेत बऱ्याच तरतुदी करण्यात आल्या. परंतु गेल्या ६० वर्षा मध्ये केंद्र-राज्य संबंध हे बिघडल्याचे दिसून येते. यात प्रामुख्याने घटनेतील ३५६ कलमांचा मोठ्या प्रमाणात सत्तेसाठी गैरवापर केल्याचे दिसून येते. केंद्र-राज्य संबंधामध्ये केंद्राचे चुकीचे धोरण हे प्रामुख्याने राज्यातील तणाव निर्माण करण्यास कारणीभूत होते.

योजना आयोगाची भूमिका केंद्र-राज्य संबंध बिघडण्यास कारणीभूत होती. इ.स. १९६९ मध्ये चौथ्या योजना आयोगाला काही घटक राज्यांनी औपचारिक रित्या अस्वीकार केला.

केंद्र-राज्य संबंधाचा अभ्यास करण्यासाठी भारत सरकारने १९८३ मध्ये सरकारिया आयोग नियुक्त केला होता. तसेच २००५ मध्ये सुद्धा एक आयोग नियुक्त करण्यात आला होता.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

केंद्र-राज्य यांच्यातील संबंधाचा अभ्यास करताना काही उद्देश डोळ्यासमोर ठेवण्यात आले आहेत पुढील प्रमाणे.

१. केंद्र-राज्य संबंधातील कलम-३५६ च्या तरतुदीचा अभ्यास करणे.
२. केंद्र-राज्य संबंधामध्ये पक्षांची भूमिका अभ्यासणे.
३. केंद्र-राज्य संबंधात येणाऱ्या अडचणींचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी दुय्यम साधन सामग्रीचा वापर करण्यात आला असून तथ्य संकलनासाठी विविध संदर्भ ग्रंथ, मासिके, साप्ताहिके, विविध शासकीय अहवाल व महत्त्वपूर्ण वेबसाईटचा वापर करण्यात आला.

संशोधनाचे विश्लेषण :

पुढील मुद्द्याच्या आधारे सदर विषय विश्लेषित केला आहे.

राज्यघटनेतील कलम -३५६ :

केंद्र-राज्य संबंधाच्या बाबतीत सर्वात वादग्रस्त कलम ३५६ आहे. घटनेच्या ३५६ कलमा नुसार राज्य शासन घटने नुसार राज्य कारभार करीत नसेल तर राज्यपाल च्या मार्फत राष्ट्रपतीची खात्री झाली असेल तर अशा राज्यात राष्ट्रपती राजवट लागू करण्याचा अधिकार हे कलम देते. डॉ. आंबेडकरांनी घटना परिषदेमध्ये या अधिकाराचा वापर अखेरचा मार्ग म्हणून करावा अशी अपेक्षा होती. असे असतांना कलम ३५६ चा वापर मोठ्या प्रमाणात झाला.

१९५२ते १९६६ या काळात केंद्रात काँग्रेसची सत्ता होती. या काळात ११ वेळेस या कलमाचा वापर करण्यात आला १९६७ ते १९७१ मध्ये पर्यंत प्रांतातील सरकारे बरखास्त करण्यासाठी या कलमाचा वापर १४ वेळेस झाला. १९७५ मध्ये ४२ व्या घटनादुरुस्तीने कलम ३५६ ला न्यायालयात आव्हान देता येणार नाही अशी तरतुद करण्यात आली.

१९७७ मध्ये केंद्रात जनता पक्षाची सत्ता स्थापन झाली. त्यानंतर या कमलाचा वापर होणार नाही असे वाटत होते. पण जनता पक्षाच्या दोन वर्षांच्या काळात या कलमांचा वापर १६ वेळेस झाला. १९८० मध्ये इंदिरा गांधी त्यानंतर राजीव गांधी व व्ही.पी. सिंग, पंतप्रधान चंद्रशेखर यांनी कलम ३५६ चा वापर पक्षीय दृष्टिकोणातून केला.

१५ ऑक्टोबर १९९६ मध्ये भारतातील सर्व मुख्यमंत्र्यांची आंतरराज्य समितीची बैठक झाली. केंद्रात प्रादेशिक पक्षाचे सरकार सत्तेवर आले. केंद्राची भिती नव्हती मुख्यमंत्र्यांनी प्रामुख्याने चंद्राबाबु नायडु व करुनानिधी यांनी कलम ३५६ च्या गैरवापर कायमचा तोडगा काढल्यावर गरज प्रतिपादन केली.



गुजरात विधानसभेत गोंधळ झाला व कलम ३५६ चा वापर केंद्र सरकारने केला. यावेळी लोकसभेत झालेला गोंधळा बाबत सभापती संगमा म्हणतात, मी या सभागृहाचा सभापती आहे याची मला लाज वाटते.

२००३ च्या वाजपेयी सरकारमध्ये कलम ३५६ या कलमाचा वापर कमी प्रमाणात झाला होता. कारण केंद्रातील सरकार हे प्रामुख्याने प्रादेशिक पक्षांच्या पाठिंब्यावर अवलंबून होते.

केंद्र-राज्य संबंधामध्ये पक्षांची भूमिका :

स्वातंत्र्योत्तर काळात प्रामुख्याने केंद्र-राज्य संबंधामध्ये राष्ट्रीय पक्ष म्हणून काँग्रेस पक्षाचे वर्चस्व होते. १९५२ ते १९६७ पर्यंत भारतातील जबळपास सर्वच घटक राज्यात काँग्रेस पक्षाचे सरकार होते. केंद्रात व राज्यांत काँग्रेस पक्षांचे सरकार असल्यामुळे केंद्र-राज्य संबंधावर गांभीर्याने चर्चा झाली नाही. केंद्र सरकारने विविध भाषा, अनेक धर्म, विविधता असलेल्या देशात केंद्र-राज्य संबंध कसे असावे हे कधीच विचारात घेतले नाही. काही घटक राज्यांतील नेत्यांनी केंद्रातील सत्ताधारी नेत्या समोर स्वहित साधण्यासाठी स्वाभिमानाचा बळी दिला. प्रांतातील लोकांना ही मानहानी प्रादेशिक अस्मितेच्या पाठिंब्यावर आंध्र प्रदेशात तेलगुदेसम हा पक्ष सत्तेवर आला.

केंद्र-राज्य संबंधावर प्रकाश टाकणारे उदाहरण म्हणजे पश्चिम बंगाल मधील मार्क्सवादी पक्षाचे सरकार, या संदर्भात ज्योती बसु यांनी म्हटले की, राज्यांना कमकुवत ठेवून केंद्र कधीच शक्तिशाली होणार नाही राज्यातील लोकशाही प्रक्रियेने निर्वाचित सरकारचा केंद्राने आदर केला त्यांचा उपहास केला नाही. त्यांना घटने प्रमाणे काम करू दिले तरच भारताचा सर्वांगीण विकास होईल. आम्ही प्रभावी प्रांताच्या बाजूने आहोत याचा अर्थ आम्ही कमकुवत केंद्राच्या बाजूने नाहीत.

पक्ष हितामुळे केंद्र-राज्य संबंध बिघडण्यास कारणीभूत होते. पंजाब मध्ये अकाली दल संपवण्यासाठी काँग्रेसने भिन्नवालेस मदत केली. त्यामुळे अकाली दल संपला नाही. उलट प्रादेशिक, फुटीरतावाद वाढीस लागला. इतर राज्यांत आसाम, मिझोराम, नागालँड इत्यादी राज्यात काँग्रेसने पक्ष हितासाठी प्रादेशिक पक्षांना हिंसाचारात्मक मार्ग स्वीकारण्यास भाग पाडले.

त्याचाच परिणाम १९९६ च्या निवडणुकीत दिसून येतो. केंद्रात प्रादेशिक पक्षाचे सरकार अस्तित्वात आले. प्रादेशिक पक्षाचे केंद्रातील सरकार म्हणजे केंद्र-राज्य संबंध विकसित न केल्याचा परिणाम आहे.

निष्कर्ष :

केंद्र-राज्य संबंधाचा अभ्यास केल्यानंतर काही निष्कर्ष पुढील

प्रमाणे दिसून आले.

१. केंद्र-राज्य संबंधामध्ये कलम-३५६ चा वापर केंद्रातील सत्तेवर असलेल्या सरकारने आपल्या स्वार्थासाठी याचा उपयोग केल्याचे दिसून येते.
२. केंद्र-राज्य राज्य संबंधामध्ये राष्ट्रीय पातळीवरील पक्षांनी आपल्या स्वार्थासाठी प्रादेशिक पक्षांवर एकत्रित येण्याची गरज निर्माण केल्याचे दिसून येते.
३. केंद्र-राज्य संबंधामुळे राज्यांचा विकास होण्यावर प्रतिकूल परिणाम झाल्याचे दिसते.

शिफारसी :

केंद्र-राज्य संबंधाचा अभ्यास केल्यानंतर काही शिफारसी करण्यात आल्या त्या पुढीलप्रमाणे.

१. केंद्र-राज्य संबंध हे चांगल्या प्रकारे निर्माण होण्यासाठी घटनेतील कलम-३५६ वापर करण्यासाठी काही जाचक अटी घालण्यात याव्यात जेणे करून या कलमाचा वापर सत्तेतील सत्ताधारी पक्ष याचा वापर आपल्या स्वार्थासाठी करणार नाही.
२. केंद्र-राज्य सरकार मध्ये चांगल्या प्रकारे समन्वय राहिल व केंद्राचे वर्चस्व कमी होईल याकडे प्रभावितपणे कायदे केले पाहिजेत.
३. केंद्र-राज्य संबंधामुळे राज्यांच्या विकासावर कोणताही परिणाम होणार नाही यासाठी विशेष तरतुद केली पाहिजे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. शीलवन्त सिंह सारिका (२०१५), भारतीय शासन एवं राजनीति, नेक्सीज नेक्सीस प्रकाशन, गुर्गांव.
२. भाकरे आर.बी. (२०१५), भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, इशिका पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर.
३. आरोडा एन.डी. (२०११), राजनीति विज्ञान-राज्य सिविल सेवाओं परिक्षाओं हेतु, टाटा मेकग्रो हिल पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
४. फाडिया बी.एल. (२०१३), भारत में लोकप्रशासन,साहित्य भवन, आग्रा.
५. कुलकर्णी बी.बाय. (२०१३), भारतीय संविधान शासन व राजकीय प्रक्रिया, एज्युकेशनल पब्लिशर्स, औरंगाबाद.
६. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक), संपादक महेंद्र जैन, उपकार प्रकाशन, आग्रा, पंजाब.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD

42



ISSN 2279 - 0489
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GENIUS

Volume - VI

Issue - II

February - July - 2018

ENGLISH - V / MARATHI

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 47100



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

**IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 4.954
www.sjifactor.com**

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF MARATHI



अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	जागतिकीकरणाच्या युगात उच्च शिक्षणातील आव्हाने व मानवी मुल्यांचा न्हास: एक चिकीत्सक अभ्यास प्रा. श्रीमती इंदू चंद्रकांत साळुंके	५०-५५
१४	कौशल्यावर आधारित शिक्षण व गांधीजींचे शिक्षण विषयक विचार प्रा.डॉ. सुषमा देशपांडे	५६-५८
१५	अध्यापक शिक्षा में नवीन द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन एवं अनुभूत समस्याएं: एक गुणात्मक अध्ययन डॉ. आकांक्षा सिंह विभा यादव	५९-६४
१६	उच्च शिक्षणातून रोजगाराची संधी प्रा. सोनवले राजकुमार रंगनाथ	६५-६८
१७	व्यावसायिक शिक्षणाचे महत्व व विकास डॉ. प्रतिभा श. उन्हाळे	६९-७२
१८	बामु विद्यापीठा अंतर्गत वस्तीगृहात राहून पदव्युत्तर शिक्षण घेणाऱ्या विद्यार्थीनींच्या आत्महत्याविषयक दृष्टिकोणाचा अभ्यास शारदा पाटील डॉ. यू. पी. भडंगे	७३-७५
१९	व्यावसायिक शिक्षण एक दृष्टिक्षेप प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड	७६-७८

व्यावसायिक शिक्षण एक दृष्टिक्षेप

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड

लोकप्रशासन विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता.जि.औरंगाबाद.

मनुष्य, समाज व राष्ट्राच्या जीवंतपणाचे लक्षण प्रगती किंवा विकास आहे. विकास ही सतत चालणारी प्रक्रिया आहे. विकास हा सर्वांगीण, संतुलीत होणे आवश्यक आहे. माणसाच्या सर्वांगीण, संतुलित विकासाचे शिक्षण हे अतिशय महत्वपूर्ण साधन आहे. शिक्षणाशिवाय विकास अशक्य आहे परंतु त्यासाठी गुणवत्तापूर्ण, कौशल्याधिष्ठित, रोजगाराभिमुख व्यावसायिक शिक्षण आवश्यक आहे. सध्याचे जग हे ज्ञानाधिठीत आहे. ज्ञान हे आपल्याला शिक्षण, अनुभव व कृतीतून मिळते. वाचन, लिखाणातून माहिती मिळते त्या माहितीचा उपयोग दैनंदिन जीवनात कोठे व कसा करायचा हे शिक्षणाद्वारे कळते. मिळालेली माहिती दैनंदिन जीवनात प्रगतीसाठी विकासासाठी उपयोगात आणणे म्हणजेच ज्ञान होय. ज्ञान देण्याचे उच्चशिक्षण हे एक महत्वाचे माध्यम आहे. शिक्षण ही शांतता व सामाजिक विकासाची गुरुकिल्ली असल्याचे युनीसेफने आपल्या अहवालात म्हटलेले आहे. आर्थिक समावेशनात रोजगार आणि दारिद्र्य निर्मुलनानंतर शिक्षण हा एक महत्वाचा घटक आहे.

उच्चशिक्षणाद्वारे राष्ट्राची पर्यायाने पूर्ण विश्वाची प्रगती होणे अपेक्षित आहे परंतु सद्यस्थितीत अनेक उच्चशिक्षित जगाच्या व राष्ट्राच्या विकासात अनेक विध्वंसक कृती (दहशतवाद, नक्षलवाद, प्रांतवाद, जातीवाद इ.) घडवून आणत असल्याचे जगासामोरील चित्र आहे. शिक्षणातून बेरोजगारी त्यातून गुन्हेगारी, आत्महत्या वाढत आहेत. स्पर्धेच्या युगात कोणत्याही आव्हाना सामोरे जाणारे व कोणत्याही संकटांना धैर्याने पेलण्याची क्षमता वाढवणारे, कोणत्याही परिस्थितीत संयम, सहनशिलता ढळू न देणाऱ्या उच्चशिक्षणाची गरज आहे. गांधीजींच्या विचाराप्रमाणे आपले हृदय, डोके व हात समृद्ध करणारे शिक्षण हवे त्यासाठी व्यावसायिक, रोजगाराभिमुख, सक्षमपणे जीवन जगण्यास शिकवणाऱ्या शिक्षणाची गरज आहे त्यातून राष्ट्रविकासातील अनेक समस्या सुटतील.

विद्यापीठ शिक्षण आयोगाने (१९४८-४९) व्यावसायिक शिक्षणावर भर देवून शिक्षण हे निरंतर जीवन जगण्याचे, स्वयंविकासाचे माध्यम असल्याचे आपल्या अहवालात नमुद करून त्या आधारे व्यावसायिक तांत्रिक शिक्षणासाठी भारतीय औद्योगिक संस्थेची (IIT) स्थापना करण्यात आली. पुढे १९६४-६६ च्या कोठारी आयोगाने शिक्षणाचे व्यावसायीकरण व तांत्रिकीकरण करावे अशी शिफारस करून व्यावसायिक व तांत्रिक शिक्षणाला पाठबळ दिले त्यानंतर १९८६ च्या राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाने शिक्षणाचे व्यावसायीकरण करण्यावर भर दिला आहे. या सर्व आयोगांच्या शिफारशीच्या आधारे देशात व्यावसायिक शिक्षणासाठी विविध प्रकारचे पदवी, पदव्युत्तर, पदवीका, डीप्लोमा व प्रमाणपत्र कोर्सेस सुरु झाले.

८६ च्या राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार उच्चशिक्षण घेणाऱ्यांना एखादा पर्याय उभा रहावा या उद्देशाने व्यावसायिक शिक्षणावर भर देवून माध्यमिक शिक्षणाचे व्यावसायीकरण ही महत्वाकांक्षी योजना सुरु करण्यात आली. कृषि अभियांत्रिकी, व्यवसाय, आरोग्य, गृह इ. विविध क्षेत्रांमध्ये उच्च माध्यमिक स्तरावर दोन वर्षांचे विविध कोर्सेस सुरु करण्यात आले. या योजनेअंतर्गत १५० पेक्षा अधिक प्रकारचे व्यावसायिक कोर्सेस सुरु असून एकावेळी १०.०३ लाखापेक्षा अधिक विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षण घेत आहेत. १९९३ मध्ये केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षण संस्था स्थापन करण्यात येवून ही संस्था केंद्र, राज्यशासन व केंद्रशासित प्रदेशात व्यावसायिक शिक्षणाबाबत मार्गदर्शन करत आहे.

ग्रामीण तसेच शहरी युवक व नागरिकांना व्यावसायिक प्रशिक्षण देणाऱ्या श्रमिक विद्यापीठांची पुनर्रचना करून त्यांचे रूपांतर सन २००० मध्ये जनशिक्षण संस्थान मध्ये करण्यात येवून ही संस्थाने आर्थिक व सामाजिकदृष्ट्या मागास भागातील निरक्षर, अकुशल व बेरोजगार तरुणांना व्यावसायिक शिक्षण देण्याचे काम करत आहेत. ही संस्थाने स्वयंसेवी संस्थांकडून सुरु केली जातात परंतु शासन त्यांना आर्थिक मदत करत असते. सध्या २७१ पेक्षा अधिक जनशिक्षण संस्थाने देशात कार्यरत आहेत. अशा विविध संस्थांकडून देशात व्यावसायिक शिक्षण देण्याचा प्रयत्न केला जात असला तरीही देशात बेरोजगारीची संख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे. बेरोजगारांची संख्या कमी करण्यासाठी व्यावसायिक शिक्षण अधिक प्रभावी व रोजगाराभिमुख करण्याची आवश्यकता आहे.

भारतातील व्यावसायिक शिक्षण त्रिस्तरीय पध्दतीने आहे. पदवी व पदव्युत्तर स्तरावर आय. आय. टी. एन. आय. टी. अभियांत्रिकांचे अथवा तंत्रशास्त्रज्ञांचे शिक्षण. पदवीका स्तरावर पॉलिटेक्नीक महाविद्यालयातील शिक्षण अथवा प्रमाणपत्र धारक आय. टी. आय. ट्रेनींग स्कुलमधील कुशल, अर्धकुशल प्रशिक्षित तरुण इ. विविध स्तरावर व्यावसायिक शिक्षण दिले जाते.

२०११ च्या जनगणनेनुसार १५ ते ६४ वर्ष वयोगटातील ६४ टक्के लोकसंख्या देशात आहे. हा वयोगट कार्यकारी लोकसंख्येचा गट आहे. तो देशविकासात महत्त्वपूर्ण योगदान देतो. १८ ते २४ वर्ष वयोगटातील तरुणांची देशात १२ टक्के लोकसंख्या आहे. या तरुण वयोगटाला योग्य ज्ञान, कौशल्य विकासाचे प्रशिक्षण देवून देशविकासासाठी त्यांच्या क्षमतेचा सर्वसमावेशक वाढीत सहभाग वाढवण्यासाठी ११ व १२ व्या पंचवार्षिक योजनेपासून भर देण्यात येत आहे. असे असून देखील आपल्या देशात आज देखील जागतिक दर्जाचे गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता वाढवण्यासाठी कौशल्ययुक्त व्यावसायिक तरुणांची कमतरता आहे. व्यावसायिक शिक्षण देण्यासाठी भारतात आजमितीस १७ पेक्षा अधिक विभाग कार्यरत आहेत. या विविध विभागांतर्गत प्रशिक्षणाची क्षमता वार्षिक २५ लाखापर्यंत आहे. भारतात दरवर्षी २.८० लाख तरुणांची वाढ होत आहे यापैकी साधारणतः १.२८ लाख तरुण श्रमक्षेत्राकडे वळतात म्हणजेच रोजगाराकडे वळणाऱ्या ८० टक्के तरुणांना व्यावसायिक शिक्षण मिळू शकत नाही त्या तरुणांना व्यावसायिक शिक्षण देणे आवश्यक आहे त्याशिवाय व्यावसायिक शिक्षण प्रभावी होणार नाही.



- व्यावसायिक शिक्षण अधिक प्रभावी करण्यासाठी देशांतर्गत जागतिक दर्जाचे, गुणवत्तापूर्ण उपादेय शिक्षण करणारे व्यावसायिक शिक्षण देणाऱ्या प्रत्येक राज्या-राज्यात दर्जेदार व्यावसायिक शैक्षणिक संस्था उभारणे.
- कालानुरूप, कालसुसंगत व्यावसायिक अभ्यासक्रमांची आखणी व अमलबजावणी करून पारंपारिक व्यावसायिक अभ्यासक्रमात नवनवीन कौशल्य वृद्धिंगत करणारे अभ्यासक्रम तयार करणे.
- उच्च माध्यमिक स्तरावर व्यावसायिक शिक्षण वाढवण्यासाठी विद्यार्थ्यांत रुची, आवड निर्माण करणारे व्यावसायिक अभ्यासक्रम तयार करणे. या स्तरावर विद्यार्थ्यांची कलचाचणी, अभिवृत्ती, अभिक्षमता चाचणी करून त्यांना त्यांच्या क्षमतेप्रमाणे व्यावसायिक अभ्यासक्रम निवडीसंदर्भात मार्गदर्शन व समुपदेशन करणे.
- जनशिक्षण संस्थांची संख्यात्मक वाढ करून त्यांना अधिकाधिक दर्जेदार व प्रभावी करणे.
- अकुशल, निरक्षर तरुणांना त्यांच्या अंगी असलेली कौशल्य विकसित करणारे व्यावसायिक अभ्यासक्रम राबवणे.
- विविध प्रमाणपत्र स्वरूपाचे व्यावसायिक अभ्यासक्रम आखणे.

संदर्भ

- १) नरवणे मीनल - भारतातील शैक्षणिक आयोग व समित्या, नित्य नूतन प्रकाशन, पुणे.
- २) Chitnis, Suma, Altbach, Philip.c - Higher Education Reforms in India New Delhi, 1993.
- ३) पवार ना.ग - भारतीय शिक्षणातील आधुनिक विचार प्रवाह, नित्य नूतन प्रकाशन, पुणे.
- ४) ठोंबरे सतीश, शिंदे प्रकाश - भारतातील शैक्षणिक प्रशासन, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद. २०१५.
- ५) देसले किरण जी. - अर्थशास्त्र, दीपस्तंभ प्रकाशन, जळगाव २०१६.
- ६) University News - July 2011, 2013.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

42



MAH/MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

UGC Approved
Sr.No.62759

Vidyawarta®

April To June 2018
Issue-22, Vol-09

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



April To June 2018
Issue-22, Vol-09

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Ph-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg No.U74120 MR2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com



MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

UGC Approved
Sr.No.62759

Vidyawarta®

April To June 2018
Issue-22, Vol-09

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

- | | |
|--|-----|
| 13) REVISITING HISTORY IN AMITAV GHOSH'S <i>THE GLASS PALACE</i>
Dr. S. Nagalakshmi, Madurai, Tamilnadu. | 62 |
| 14) FDI Trends in Indian Pharmaceutical Sector
P. Jaipal, TU, NZB. | 66 |
| 15) Impact of Demonetization on Trade and E-Business
Dipti Clifton Menezes | 70 |
| 16) TRADITION & MODERNITY IN INDIAN SOCIAL LIFE
Dr. Jakir Hussain Laskar, Kolkata | 74 |
| 17) नवापूर तालुक्यातील आदिवासी जमातींचे मनोरंजन व खेळ
प्रा.डॉ. भामरे नानाजी दगा, अक्कलकुवा जि. नंदुरबार (महाराष्ट्र) | 83 |
| 18) प्राथमिक शिक्षकांची अंवांतर वाचन अभिरूची व अध्यापन अभियोग्यता-....
डॉ. राजेश चंदनपाट, गडचिरोली. | 87 |
| 19) महाराष्ट्र शासनाच्या शालेय पोषण आहार योजनेचा बीड जिल्ह्यातील प्राथमिक शाळेतील....
श्रीमती सुजाता विक्रम सानप, जालना, महाराष्ट्र | 90 |
| 20) वीरशैव लिंगायत धर्माचे संस्थापक महात्मा बसवेश्वर
प्रा.डॉ.रुद्राक्षे चंद्रकांत द., लोणी, प्रवरानगर | 97 |
| 21) कोल्हापूर संस्थानातील शाहू महाराजांची शेती आणि सिंचन व्यवस्थेचे अध्ययन
प्रा.डॉ. एन.बी. पोहकर, ता. औंढा नागनाथ, जि. हिंगोली | 99 |
| 22) सावित्रीमाई फुले यांची कविता
प्रा. दिलीप घोनमोडे, आरमोरी, जि. गडचिरोली | 102 |
| 23) महात्मा गांधीजींचा अहिंसात्मक विचार
प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड, करमाड, ता.जि.औरंगाबाद. | 108 |
| 24) माहूरचा मोगल कालीन ऐतिहासिक अभ्यास
प्रा.डॉ. दत्ता यु. जाधव, माहूर, जी. नांदेड. | 109 |

'महात्मा गांधीजींचा अहिंसात्मक विचार'

प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड
(लोकप्रशासन विभाग)
राजीव गांधी महाविद्यालय,
करमाड, ता.जि.औरंगाबाद.

आपल्याला जर काही कार्ये पार पाडावयाची असतील तर आपण केवळ दुसऱ्याच्या बुद्धिचे समाधान करून भागणार नाही तर आपल्याला त्याचे अंतःकरण हलवावे लागेल. बुद्धिचे आवाहन डोक्याला असते परंतु दुसऱ्याच्या अंतःकरणात क्लेश भोगल्याने प्रवेश मिळतो आत्मक्लेशाने मानवाच्या आंतरिक ज्ञानाची द्वारे उघडली जातात. त्यासाठी आत्मक्लेश हा महत्वाचा असून सत्यःहाच ईश्वर आहे व त्याची प्राप्ती करण्याचा अहिंसा हा मार्ग आहे म्हणून या दोन तत्वाचा मी कधीच त्याग करणार नाही असे गांधीजींनी म्हटले आहे. आपणास महत्वाच्या कार्ये पूर्तीसाठी आत्मक्लेश महत्वाचा असतो. आत्मक्लेश म्हणजे आपण आपल्या आत्म्याच्या आवाजापर्यंत जाणे होय. त्यासाठी आपल्याला कठोर तपश्चर्या करावी लागते. तपश्चर्येतूनच आपण आपला आतील आवाज ऐकू शकतो. यातूनच आपल्याला आपले परिपूर्ण ज्ञान मिळते.

गांधीजींच्या मते 'आत्मक्लेश हा क्रोध मत्सर रहित असावा. आत्मक्लेश हा क्रोध वा कोणाचा द्वेष करण्यासाठी करू नये: त्यांनी पुढे असेही सांगितले की, आपल्या आयुष्यात काही क्षण असे येतात की आपल्याला सदसद्विवेक बुद्धिचा सर्वश्रेष्ठ आदेश ऐकावा लागतो. त्या आदेशामुळे आपल्याला आपल्या अतिशय जवळच्या वस्तूंचा त्याग सहन करावा लागतो, अनेकवेळा दुःख सहन करावे लागते पण तो आदेश पाळावाच लागतो. सरसद्विवेकबुद्धि म्हणजेच आपले आंतरिक मन आपल्या मनाशी संवाद साधून आपणास योग्य कृती करावी लागते त्या कृतीमुळे आपले आप्तजन दुरावतील परंतु आपण आपल्या आंतरिक मनाद्वारे घेतलेल्या निर्णय व कृतीवर कोणत्याही परिस्थितीत ठाम राहणे आवश्यक असते.

जे आपल्यावर प्रेम करतात, त्यांच्यावर आपण प्रेम करणे ही अहिंसा नाही याउलट जे आपला द्वेष करतात, त्यांच्यावर प्रेम करणे ही अहिंसा आहे. प्रेमाचा हा नियम प्रत्यक्ष आचरणात आणणे कठिण आहे, पण महान व दिव्य गोष्टी कठिणच असतात. इश्वरकृपेने या अत्यंत कठिण गोष्टी मनातून उरवले तर त्या सहज होऊ शकतात. प्रेम करणावर प्रेम कोणीही करते याउलट जे आपला द्वेष, मत्सर करतात त्यांच्यावर प्रेम करून त्यांना जिंकणे त्यांचे मन परिवर्तन घडवून आणणे गांधीजींनी अहिंसा सांगितलेली आहे प्रत्यक्षात या गोष्टी अतिशय कठिण आहेत परंतु आपल्या मनाने उरविले तर निश्चितच आपण त्या सहजपणे आचरणात आणू शकतो. या कृतीमुळे जगातील क्रोध, हिंसा निश्चितच कमी होईल जगात शांतता नांदेल.

हिंसा करणे हा पशुचा, जनावरांचा धर्म आहे तर अहिंसा हा मानव जातीचा धर्म आहे. पशुला शारीरिक बळाशिवाय दुसऱ्या बाबी माहित नसतात याउलट मनुष्याने आत्म्याचे आंतरिक ओळखणे यातच मानवाचे मोठेपण आहे. मानवाचा उद्धार हा अहिंसेने होईल, हिंसेने होणार नाही. भित्र्या माणसाला अहिंसेचा उपदेश कळणार नाही. हिंसा ही शौर्याची पराकाष्ठा आहे. हिंसेच्या तालमीत तयार झालेल्या लोकांना अहिंसेचे श्रेष्ठत्व सिद्ध करून दाखवण्यात अडचणी येत नाही भित्र्या माणूस अहिंसा वृत्ती तेव्हाच धारण करू शकतो जेव्हा तो भित्र्या वृत्तीचा त्याग करेल त्यासाठी मनातील भित्रेपणा संपवणे आवश्यक ठरते. गांधीजींचे स्पष्ट मत होते की, जगात सर्वत्र हिंसात्मक वातावरण असले तरीही मी मला इश्वराने दिलेल्या अहिंसात्मक शस्त्राचा त्याग करणार नाही. कोणत्याही स्थितीत अहिंसा सोडणार नाही. जीवनातील कोणत्याही कठिण प्रसंगी व संकटाच्या वेळी मी अहिंसात्मक तत्व सोडणार नाही. या तत्वाचा त्यांनी आयुष्यभर अवलंब केला. प्रसंगी त्यांच्यावर टिका झाली, त्यांची हत्या झाली तरीही ते अहिंसा तत्व आयुष्यभर जगले. त्यामुळे ते अहिंसे पुजारी ठरलात.

अहिंसेमध्ये अंतिम अपयश किंवा पराभव नसतो. अहिंसात्मक वृत्तीच्या व्यक्तीने आपल्या आसपास राहणाऱ्या प्रत्येक माणसाची मैत्री व विश्वास संपादन केला पाहिजे. खरा अहिंसक आपल्या वाणीत व वर्तनात नम्र असतो. त्याच्या नेत्रातून पावित्र्य पसरते. त्यामुळे एखादा नवखा माणूस, एखादी अबला, एखादे मुलूही सहजप्रवृत्तीने त्याला मित्र म्हणून ओळखते. अहिंसक वृत्तीचा मनुष्य हा देवमाणूस आहे त्याच्यावर आपण विश्वास ठेवावा ही भावना सामान्य माणसात निर्माण होते. समाजातील सर्व वर्गांचे सहकार्य अहिंसक सेवक मिळवू शकतो. प्रेमाच्या अहिंसक बळावर लोकांचे

सहकार्य स्वखुरीने मिळते. या अहिंसक प्रवृत्तीमुळे समाजातील अनिष्ट घातक प्रवृत्ती करणारे लोक देखील तुम्हाला आपला मित्र, म्हणून स्वीकरतील तेव्हा खऱ्या अर्थाने त्या व्यक्तीने अहिंसक वृत्ती धारण केली आहे अशी अहिंसात्मक वृत्तीच्या व्यक्तीबाबतची गांधीजींची भूमिका होती. ही भूमिका सद्यस्थितीत ती अतिशय उपयुक्त आहे.

सारांश :-

महात्मा गांधीजी हे अहिंसेचे पुजारी होते. त्यांनी आपल्या हयातीत आयुष्यभर या तत्वाचा काया, वाचा मनाने स्वीकार करून हे तत्त्व ते जगले. त्यांनी कधीही अहिंसेचा त्याग केला नाही त्यांनी इश्वर प्राप्तीचा अहिंसा हा मार्ग असल्याचे सांगितले. अहिंसा हे शौर्याचे साधन आहे. या साधनाद्वारे हिंसक बाईट प्रवृत्तीच्या व्यक्तीला अहिंसक बनविणे आवश्यक ठरते. अहिंसा ही काया वाचा मनाने असावी. आपण आत्मक्लेशातून अहिंसेपर्यंत पोहोचू शकतो. अहिंसा प्रवृत्तीच्या व्यक्ती सर्वत्र स्वीकार्य असतात. सामान्य माणसांना अशा व्यक्ती आपला मित्र, वाली असल्याचे वाटतात. समाजातील क्रोध, मत्सर, हिंसा समुळ उच्यटन करण्यासाठी गांधीजींच्या अहिंसा तत्वाची सद्यस्थितीत नितांत गरज आहे. अहिंसा तत्वाचा सर्वत्र अवलंब झाला तर निश्चितच समाजात सुवत्ता, शांतता नांदेल.

संदर्भ -

- 1) Gandhi M.K.-My Experiments With Truth, Ed. १९५८.
- 2) Shukla Chandrashekhar-Gandhiji as we know him, vora & co.Bombay, Ed.१९४५.
- 3) भारदे बाळासाहेब-गांधी विचार दर्शन जीवन साधना खंड-३ महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी, पुणे तिसरी आवृत्ती-१९९४.
- 4) Prabhu R.K. & Rao W.R-The Mind Of Mahatma Gandhi Oxford University Press, Ed.१९४५.

□□□


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TO. & DIST. AURANGABAD.

माहूरचा मोगल कालीन ऐतिहासिक अभ्यास

प्रा.डॉ. दत्ता यु. जाधव
इतिहास विभाग प्रमुख

श्री रेणुकादेवी महाविद्यालय, माहूर, जी. नांदेड.

माहूरचा मध्ययुगीन काळाचा विचार करत असताना माहूर या काळात विदर्भात मोडत होते. माहूर नगर वर्तमान काळात मराठवाड्यात असून विदर्भाच्या सीमेवर आहे. विदर्भातील पुर्वकडील गोंडवनातील गोंडराजे, एलिचपूरचे इमादशाही घराणे, नागपूरचे भोसले राजे, सिंदखेडचे जाधव घराणे आणि माहूर-वाशिमचे उदाराम घराणे. या सर्व घराण्यांनी माहूरवर राज्यकारभार केलेला होता. या राज्यघराण्यांनी महाराष्ट्रातील विदर्भाचे आणि मराठवाड्याचे ऐतिहासिक, राजकीय, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन समृद्ध केलेले आहेत. नैसर्गिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्ट्या विदर्भाचे दोन विभाग पडतात. वर्धा नदीच्या पश्चिमेकडील प्रदेशाला वऱ्हाड म्हणतात. पुर्वकडील प्रदेशाला 'गोंडवन' किंवा 'झाडेपट्टी' म्हणून ओळखले जाते. दोन्ही प्रदेशाना मिळवून विदर्भ म्हणतात. बहामनी सुलतनाच्या काळात दक्षिण वऱ्हाड व उत्तर वऱ्हाड असे राजकीय उदिष्टाने दोन भाग केले होते. माहूर प्रांत यादवाच्या काळात पुर्वकडील राजकीय महत्त्वाचे केंद्र होते. माहूरला दक्षिण वऱ्हाडची राजधानी म्हटले जात होते. बहामनशाहीच्या काळात महमद गवानानी माहूरला एक स्वतंत्र प्रांत बनविला होता. या प्रांतावर खूदावंद खानाची नेमणूक केली होती. प्राचीन आणि मध्ययुगीन काळात माहूरवर अनेक निरनिराळ्या राजघराण्यांनी राजकारभार केलेले होते. सतराव्या शतकात माहूरवर राजे उदाराम घराण्यांनी राजकारभार करून माहूरला महत्त्वाचे राजकीय केंद्र बनविले होते. उध्दव रामजी देशमुख उदाराम घराण्याचा संस्थापक मूळ पुरूष होता.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ



ISSN: 2394 5303

Impact Factor 5.011(IJIF)

Printing Area™ International Research Journal

April 2018 Issue-42, Vol-02

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-42, Vol-02

Date of Publication
14 April 2018

Editor
Dr. Babu g. Gholap
 (M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
 (M.A. Ph.D.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.

Reg.No.U/4120/MH2013/PIG/251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
 At Post Limbaganesh, Tal. Dist. Beed
 Pin-431126 (Maharashtra) Cell: 07588057695, 09850203295
 harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com



http://www.vidyavarta.blogspot.com
http://www.vidyavartajournal
https://sites.google.com/site/vidyavartajournal

- | | |
|--|-----|
| 14) शंकराव खरातांच्या कादंबरीतून दिसून येणारे समाज जीवन
प्रा. शोभा शंकराव भुरभुरे | 77 |
| 15) तेलुगु आणि मराठी भाषा काही निरीक्षणे
दत्तायम उध्दव राठोड | 76 |
| 16) नारायणि नमो श्शुते या कथासंग्रहातील संस्कार व जीवनदृष्टी.
सौ. मानसी मंगेश चव्हाण | 79 |
| 17) यशवंतराव चव्हाणांची प्रशासकीय कार्यपद्धती
प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड | 82 |
| 18) छत्तीसगढ़ और बिम्बाजी (१७५७-१७८७ ई.)
निखिल घोरे, डॉ. आर.आर. साहू | 84 |
| 19) भारतीय समसामयिक लैंगिक मुद्दे-महिलाओं, दिव्यांगों और
डॉ. अंजू सिंह | 87 |
| — 20) चौहान शासकों की वंशावलीरणथम्भौर के विशेष संदर्भ में
डॉ. अर्चना तिवारी | 93 |
| 21) "मूल्य शिक्षा तथा मुल्यों के विकास में समाज एवं शिक्षक की भूमिका"
डॉ. रकेश कुमार वर्मा | 99 |
| 22) रिलीजन और धर्म : विश्लेषणात्मक अध्ययन
सोनी यादव | 103 |
| 23) भारत की शिक्षा व्यवस्था : परिवर्तन एवं निरंतरता के विशेष सन्दर्भ में
अभिनव तिवारी | 108 |
| 24) जनजातियों का इतिहास एवं लोक नृत्य-गीत
मृणालिनी तिवारी | 113 |
| 25) सवाद विधि एवं परम्परागत विधि की प्रभाविता का कक्षा ९वीं के
प्रा पल्लवीबेन जे डाभी | 117 |
| 26) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता पर
डॉ दीप्ति गौड़ | 122 |

यशवंतराव चव्हाणांची प्रशासकीय कार्यपद्धती

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड
(लोकप्रशासन विभाग)
राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड
ता. जि. औरंगाबाद

यशवंतराव चव्हाणांचे व्यक्तिमत्व अष्टपैलू होते. त्यांच्या व्यक्तिमत्वाचा पैलू म्हणजे ते एक कुशल, कर्तव्यदक्ष व मुरब्बी प्रशासक होते. त्यांच्याकडे कुशाग्र बुद्धीमत्ता, प्रभावी आकलनशक्ती, त्वरित निर्णय घेण्याची क्षमता व घेतलेला निर्णय प्रत्यक्षात अंमलात आणण्याचे कौशल्य व चातुर्य, कल्पकता, शोडक्यात व योग्य तेच प्रेमळ शब्दात सांगण्याची हातोटी, लोकराज्यात लोकांच्या सुख, दुःखा विषयीची जाणीव व ती दूर करण्याची तळमळ व कार्यकुशलता. प्रशासनावर वचक आणि वेळप्रसंगी प्रशासनास सांभाळून घेण्याची मनोवृत्ती, कोणत्याही प्रश्नाच्या मुळ कारणांचा शोध घेण्याची वृत्ती, अधिकाऱ्यावर विश्वास टाकून आपल्याला पाहिजे त्या प्रकारे त्यांच्याकडून काम करून घेण्याची हातोटी, संयमी व क्षमाशिलवृत्ती, प्रशासन आणि निवड प्रक्रियेच्या कार्यात अहस्तक्षेपवाद इ. महत्वपूर्ण गुणांमुळे यशवंतराव एक कुशल राजकारण्या बरोबरच उत्कृष्ट व कुशल प्रशासक होते. त्यांनी आपल्या प्रशासकिय गुणवत्तेचा प्रस्ताव महाराष्ट्राच्या व देशाच्या महत्वाच्या प्रशासकिय खात्यावर पाडलेला आहे. यशवंतरावांनी राज्याला आणि देशाला स्वच्छ, पारदर्शी व जनता भिमुख प्रशासन दिले. प्रशासनात शिस्त, कार्यक्षमता आणली. त्यांनी सत्तेच्या गैरवापर केल्या असे त्यांचे विरोधक सुध्दा त्यांच्या विरुद्ध बोलू शकणार नाहीत हीच त्यांची प्रशासकिय क्षमतांची पावती आहे.

संशोधन पध्दती :

“यशवंतराव चव्हाणांची प्रशासकिय कार्यपध्दती” हा संशोधन लेख संशोधनाच्या वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा आधार घेवून पूर्ण केला आहे. संबंधीत लेखांसाठी यशवंतरावांचे लेखन साहित्य कृष्णाकाठ, सह्याद्रीचे वारे, युगांतर, ऋणानुबंध इ. बरोबरच इतर लेखकांनी त्यांच्या संबंधी लिहीलेल्या साहित्याचा आधार घेतला आहे. संबंधीत संशोधन यशवंतराव चव्हाणांच्या प्रशासकिय कार्यपध्दतीशी संबंधीत आहे.

यशवंतराव चव्हाणांची प्रशासकिय कारकीर्द गृहमंत्री मोरारजी देसाई (मुंबई प्रांत) यांच्या खात्यात संसदीय सचिव म्हणून नेमणूक झाल्यापासून सुरू झाली. प्रशासनाचे धडे, प्रशासनातील कार्यक्षमता, शिस्त, मोरारजी देसाईकडून मिळाली. मोरारजी देसाईंचा त्यांनी संपादन केलेला विश्वास त्यांना पुढे दीर्घकाळ उपयुक्त ठरला. मुंबई प्रांताचे मुख्यमंत्री बाळासाहेब खेर यांच्या तडजोड करण्याच्या प्रशासकिय गुणांचा प्रभाव यशवंतरावावर कायम राहिला.

यशवंतराव चव्हाणांकडे मनाचा मोठेपणा, आंतरीक चांगुलपणा, सौजन्यशिलता आणि गुणग्राहकता होती ते नेहमी प्रशासकिय अधिकारी कर्मचाऱ्यांशी सौजन्याने वागत व कार्यपुर्तीसाठी मनाचा उदारपणा दाखवून काम करवून घेत. कोणतीही बाब असो ती कटूता निर्माण न होवू देता सामोपचाराने सोडविली जावी अशी त्यांची भूमिका होती. विरोधकांशी सौजन्याने वागण्याची व त्यांच्या मतांचा आदर करण्याची त्यांची मनोधारणा वाखाणण्याजोगी होती. सर्वांना सोबत घेवून पुढे जाण्याच्या व सहकाऱ्यावर तसेच अधिकारी, कर्मचाऱ्यावर विश्वास टाकून काम करून घेण्याच्या त्यांच्या पध्दतीमुळे त्यांच्या सहकाऱ्यांना व अधिकारी कर्मचाऱ्यांना त्यांच्याबद्दल आदर प्रेम व आपलेपणा वाटत असे. सहकारी आत्मविश्वासाने कामे करत.

यशवंतरावांना कामाबद्दल आस्था व चिंता होती. कोणत्याही प्रकारचे काम करण्यासाठी अधिकारी कर्मचाऱ्यावर दडपण नसे. काम सुरळीत चालू असताना कधीही कोणत्याही कामात ते हस्तक्षेप करीत नसत. प्रशासकिय निर्णय अधिकाऱ्यांशी सल्लामसलत, चर्चा



विचार विनियमयातून घेतला जाई. निर्णय सर्वांगीण विचार-विनिमयातून होत असे. यशवंतरावांनी आपल्या सहकाऱ्यांना अधिकारी कर्मचाऱ्यांना एखादी भूमिका, मत जर पटत नसेल तर ते स्पष्टपणे मांडावे असा विश्वास त्यांनी दिला होता. प्रशासकिय कामांत सुसंवाद राखण्याची त्यांची प्रवृत्ती स्पष्टपणे दिसते.

यशवंतरावांनी आपल्या कार्यक्षेत्रात लोकशाही स्वरूपाचे वातावरण ठेवले होते. त्यांचा परिणाम म्हणून सहकारी अधिकारी-कर्मचारी उत्साहाने कामे करत. निष्ठाही दुहेरी असावी 'Loyalty is a two way street' या तत्वाप्रमाणे तुम्ही मला निष्ठा, विश्वास द्या, मी तुम्हाला विश्वास, निष्ठा देतो असे सांगून ते अधिकारी कर्मचाऱ्यांशी विश्वासाने वागत. यशवंतराव एखादा प्रश्न, समस्या हाती घेतली की ते सुटपर्यंत त्याच प्रश्नावर लक्ष केंद्रीत करत त्यानंतरच दुसरा प्रश्न, समस्या हाती घेत. त्यामुळे सर्व समस्या, प्रश्न सुव्यवस्थितपणे सोडवले जात. यशवंतराव प्रशासकिय क्षमता, कार्यपध्दतीत सुधारणा करण्यासाठी विस्तृत व सखोल, बहुआयामी वाचन करत. त्यांचा वाचनाचा व्यासंग दांडगा होता. यशवंतराव सर्व अधिकारी कर्मचाऱ्यांना समानतेने वागत. कोणाला कमी किंवा कोणाला प्रमाणापेक्षा अधिक महत्व न देता सर्वांकडूनच काम करून घेत. चुकूनही कोणत्याही अधिकारी, कर्मचाऱ्यांशी कडवटपणाने बोलत नसत किंवा तुसडेपणाने वागत नसत. त्यामुळे सलोख्याचे वातावरण निर्माण होत असे. यशवंतराव प्रशासनात जेवढे कडक होते तितकेच ते मवाळ देखील वागत. त्यांच्यात क्षमाशिलवृत्ती होती. चांगल्या तऱ्हेने काम करणाऱ्या अधिकाऱ्यांना काही वेळा चुकीच्या प्रसंगी समजावून घेण्याची वृत्ती त्यांच्याकडे होती. यशवंतराव प्रशासकिय कार्य विलंब, दिरंगाई टाळण्यासाठी सतत कार्य करत. प्रवासात, घरी फाईलींचा निपटारा करत. जनतेच्या प्रश्नाबाबत विरोधकांशी सन्मानाने वागण्याची, चर्चा करून मार्ग काढण्याची यशवंतरावांची कार्यपध्दती होती. यशवंतरावांनी सांभाळलेल्या प्रत्येक खात्याच्या प्रशासकिय कामकाजात कुशलता, पारदर्शीपणा आणला.

सारांश :

यशवंतराव चव्हाणांनी सांभाळलेल्या प्रत्येक खात्यात अधिकारी कर्मचारी व पदाधिकाऱ्यात सलोख्या सुसंवाद निर्माण केला होता. त्यांनी अधिकारी कर्मचाऱ्यांना निष्ठा, विश्वास दिला होता व अधिकारी कर्मचाऱ्यांनी त्यांना विश्वास, निष्ठा दिली होती. त्यामुळे कामे विनाविलंब होत. यशवंतरांनी अधिकारी कर्मचाऱ्यात विश्वासाचे, सहकार्याचे, सलोख्याचे, निर्भय वातावरण निर्माण केलेले होते. प्रशासकिय निर्णय चर्चा, विचार विनियमयातून होत असे, अधिकारी-कर्मचाऱ्यांच्या कामाने विनाकारण हस्तक्षेप होत नसे त्यामुळे अधिकारी कर्मचारी उत्साहाने कामे करत. यशवंतरावांनी आपल्या प्रशासकिय कार्यपध्दतीतून प्रशासन स्वच्छ, पारदर्शी व जनताभिमुख बनविले होते.

संदर्भ सूची :

- १) चव्हाण यशवंतराव — 'युगांतर' कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे १९७०
- २) चव्हाण यशवंतराव — 'सहयाद्रीचे वारे' संचालक — प्रसिध्दी विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई प्रथमावृत्ती १९६२
- ३) पाटील विनायक — 'यशोधन: यशवंतराव चव्हाण यांचे निवडक विचार' साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद दुसरी आवृत्ती १९८६
- ४) चव्हाण शेषराव — 'यशवंतराव चव्हाण आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार: विमल पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद १९९०
- ५) कायदे पाटील गंगाधर बी.— 'यशवंतराव चव्हाण' चैतन्य पब्लिकेशन्स, नाशिक प्रथमावृत्ती २०००

□□□

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

UGC Approved
Sr.No.43053

43.50



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII

Issue - III

July - September - 2018

Marathi Part - II / Hindi Part - II

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed., M.L.A.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)



CONTENTS OF MARATHI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	प्रशासनातील वाढता प्रष्टाचार डॉ. बिरंगणे एस. एस.	१-५
२	शासनाचे क्रिडा धोरण प्रा. सपकाळ आर. आर.	६-१०
३	दलित कवयित्रींची कविता आणि सद्यस्थिती डॉ. युवराज धबडगे	११-१५
४	डॉ. ए. पी. जे. अब्दूल कलाम यांचे वाचन डॉ. घ. ना. पांचाळ	१६-१७
५	प्रक्रियात्मक लोकशाही आणि निवडणूक प्रक्रिया प्रा. डॉ. आर.बी. वनारसे प्रा. डॉ. एफ.बी. सलामपूरे	१८-२४
६	भारतातील स्त्रीयांचा सामाजिक समस्येचा अभ्यास डॉ. पुरुषोत्तम रामटेके	२५-२८
७	अहमदनगर महानगरपालिकेच्या कारभारातील १५ वर्षे आणि महानगरपालिकेच्या सन २०१८ सालातील निवडणूकीचे पडघम शेख जब्बार खालील	२९-३४
८	भारतातील शिक्षणाची सद्यस्थिती डॉ. राजाराम रा. जाधव	३५-४२
९	उच्चशिक्षित व्यक्तींची बेकारी एक ज्वलंत समस्या - समाजशास्त्रीय दृष्टीक्षेप (संदर्भ - बीड शहर) डॉ. सुनंदा एकनाथराव आहरे	४३-५०
१०	ताण - तणाव व्यवस्थापन आणि कार्यक्षमता : एक चिंतन विद्या आनंदराव शिंदे	५१-५६
११	ह. ना. आपटे यांचे कादंबरीविश्व प्रा. डॉ. विलास खूणे	५७-५९
१२	मराठवाड्यातील कृषी उत्पादन आणि उत्पादकता प्रा. काशिदे यादव मधुकर	६०-६३
१३	मुद्रित माध्यमासाठी लेखन कौशल्य प्रा. डॉ. अनिता परभतराव खंडागळे	६४-७२

43050



VOLUME - VII, ISSUE - II - JULY - SEPTEMBER - 2018
 AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१४	सखी पुरवणीतून हाताळले जाणारे महिला विषयक विषय सविता चंद्रकांत वाकडे	७३-७५
१५	बौद्ध धम्म आणि कांशीराम भगवान नारायणराव वीर	७६-७८
१६	भारतातील पर्यटनाचा इतिहास: एक विश्लेषण प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड	७९-८१
१७	भारतातील वस्तू व सेवा कर प्रणालीचे अवलोकन भुस्से परमेश्वर सुभाषराव	८२-८४
१८	अण्णाभाऊ साठे यांच्या लोकवाङ्मयातील आशय अभिव्यक्तीने साधलेला विनोद प्रा. अर्चना चव्हाण	८५-९१
१९	मागास प्रवर्गासाठी राज्य शासनाच्या विविध योजना व मराठी वृत्तपत्रे भास्कर जनार्धन निकाळजे	९२-९४
२०	संशोधन अहवाल प्रा. डॉ. मोरे माधव माणिकराव	९५-९९
२१	बहामनी सुलतानांचे सामाजिक कार्य प्रा. डॉ. सय्यद मुजीब मुसा	१००-१०२



१६. भारतातील पर्यटनाचा इतिहास: एक विश्लेषण

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड

लोकप्रशासन विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद.

मानव हा बुद्धिजीवी प्राणी आहे तो आपल्या बुद्धीमत्तेच्या व कल्पकतेच्या आधारावर नेहमी ज्ञान संपादन करतो. ज्ञानाच्या आधारावर त्याने स्वतः बरोबर समाजाचा विकास साधला आहे. वर्तमान काळात विकास साधत असताना भूतकाळातील समाजाचा सर्वांगीण विकास कसा झाला असेल याचे ज्ञान घेण्याचा प्रयत्न तो वारंवार प्रयत्न करतो. जिज्ञासेतून प्राचिन समाजाची सांस्कृतिकता व विकास पाहण्याचा सातत्याने प्रयत्न करीत असताना कुतूहलापोटी, उत्सुकतेने किंवा जिज्ञासेसाठी तो विविध ठिकाणची प्राचिन कला, शिल्पे, वस्तू संग्रहालय, पुरातन क्षेत्र असे विविध ठिकाण तो पाहतो त्यांना भेटी देत असतो.

प्रत्येक प्रदेश, प्रांत, क्षेत्राची सांस्कृतिकता भिन्न भिन्न प्रकारची आहे व प्रत्येक क्षेत्राचा विकास सांस्कृतिकतेच्या आधारावर झालेला दिसून येतो आणि जिज्ञासा म्हणून व्यक्ती विकास कसा झाला असेल हे शोधण्याचा प्रयत्न मानव करतो. प्राचीन वास्तुकला, शिल्पे मोठ्या प्रमाणात डोंगर, दरी, कपारे समुह व नदीकाठी निर्माण केलेली दिसून येतात. आजच्या काळात या ठिकाणाकडे पाहत असताना त्या वास्तूची साँदर्यता परिसरामुळे अधिकच फुललेली दिसून येते. इतकेच नव्हे तर वास्तुशिल्पाच्या कोरीव काम व रंगकामामुळे व्यक्तीचे आकर्षण त्या काळातील सामाजिक विकासाकडे पाहण्याचे व जाणण्याचे अधिक होते. यामुळे आजच्या स्थितीत जग पर्यटनाकडे आकृष्ट झालेले आहे. एका प्रदेशातून दुस-या देशात जाणे किंवा एका ठिकाणाहून दुस-या ठिकाणी जाणे आणि त्या ठिकाणावरील लोकांची सांस्कृतिकता व भिन्नता पाहणे. तेथील ग्रंथालयीन ज्ञानभांडार मिळविणे व आत्मसात करणे हा प्रमुख उद्देश पर्यटनाचा असतो. केल्याचे देशाटून, मनुजा ष्हाणपण येत असे" या व्यक्ती प्रमाणे पर्यटनामुळे स्वतःच्या व्यक्तीमत्वात व ज्ञानात देखील भर पडते.

भारतात असंख्य अशी पर्यटनस्थळे आहेत यात प्रामुख्याने लेण्या, किल्ले, सरोवरे, समुद्रकिनारे हिमाच्छादित प्रदेश, थंड हवेची ठिकाणे, टेकड्या, जंगल, वने, धबधबे, धार्मिक स्थळे, कला, उत्सव व संस्कृती यांचा समावेश होतो. भारतीय संस्कृतीत "पर्यटन" शब्द पर्य+अटन या दोन धातुसाधीत शब्दापासून तयार झालेला आहे. पर्य-म्हणजे वातावरण व अटन म्हणजे जाणे. म्हणजेच एका वातावरणातून दुस-या वातावरणात जाणे व परत मुळ ठिकाणी येणे यालाच पर्यटन म्हंटले जाते.

पर्यटन हा शब्द पर्यटनाच्या स्थितीवरून निष्चित केला जातो. पर्यटनाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पर्यावरण विशयक दृष्टीकोणातून स्पष्ट होतो. म्हणूनच पर्यटनाला सामाजिक व्यवस्थेची संज्ञा देखील दिली जाते. यात लोकात अंतर्गत संबंध जोडले जातात व त्यांच्या परस्पर गरजा व सेवांना उत्तम प्रतिसाद देखील दिला जातो. तसेच गरजा पूर्ण करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न होतो. पर्यटनाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक दृष्टीकोणातून पर्यटन अनेक प्रकारात विभागलेले आहे. यात मनोरंजन व करणमणुकीसाठी केलेले पर्यटन, विविध संस्कृतीचा परिचय करून



घेण्यासाठी केलेले पर्यटन, ऐतिहासिक स्थळे पाहणे व त्याचा शोध घेण्यासाठी केलेले पर्यटन, एका वातावरणात दुस-या वातावरणात जाण्यासाठी केलेले पर्यटन, तिर्थाटन तसेच साहस जिज्ञासेमुळे केलेले पर्यटन इ. अनेक प्रकारच्या पर्यटन या प्रकारात समावेश होतो.

प्राचिन काळी मानवाने अन्नाच्या शोधासाठी जी मटकंती केली होती अन्नाच्या शोधासाठी तो अनेक ठिकाणी मटकंती करत होता तेथूनच पर्यटनास सुरुवात झाली. त्यानंतर मध्ययुगीन काळात अनेक परकिय आक्रमणे झाली या माध्यमातून आपली सत्ता इतर देशात प्रस्थापित करणे व आपली संस्कृती व आपला व्यापार यातूनच प्रत्येक देशाच्या प्रांताच्या स्वातंत्र्यानंतर सांस्कृतिक व व्यापार विशयक देवाण घेवाण सुरु झाली. यातूनच पर्यटनाचा देखील विकास झाला. ब्रिटीशांनी विविध ऐतिहासिक स्थळे शोधली तसेच देशातील अनेक थंड हवेची ठिकाणे, भूपसस जंजपवदधे विकसीत केली. आधुनिक काळात पर्यटनात प्रचंड बदल झालेला आहे. पर्यटनात अनेक नवनवीन संकल्पना अॅग्रीकल्चर, इंडस्ट्रीअल, मेडीकल टुरीझम, अॅडव्हेन्चर, रिसर्च अशा विविध शाखा विकसीत होत आहेत.

ब्रिटीश काळात पर्यटनाची संकल्पना बदलू लागली. भारतात हिल स्टेशनचा विकास ब्रिटीश कालखंडात झाला. अठराव्या शतकाच्या सुरुवातीला प्रवासाचे स्वरूप बदलले आणि प्रवास हा मनोरंजनासाठी होवू लागला. एकोणीसाव्या शतकात रेल्वे मार्गाचा आरंभ म्हणजे पर्यटनाच्या इतिहासातील एक महत्वाची घटना आहे. या माध्यमातून भारतात पर्यटन करणे अधिक सुखकारक झाले पुढे दुस-या महायुद्धानंतर मोटार प्रवासात मोठ्या प्रमाणात वाढझाली व यामुळे पर्यटनास गती मिळाली. सद्यस्थितीत देशात होत असलेला व झालेला हवाई, विमान वाहतुकीच्या विकासामुळे पर्यटनास गती मिळत आहे.

सद्यस्थितीमध्ये व्यक्ती धकाधकीच्या, ताणतणाच्या जीवनातून मुक्त होण्यासाठी, आनंदासाठी, मनाला विरंगुळा मिळवण्यासाठी नवनविन बाबीचा शोध घेण्यासाठी खेळ उद्योगधंद्याच्या निमित्ताने पर्यटन केले जात आहे. आज शाळा, महाविद्यालय, कार्यालये वार्षिक व अभ्यास सहलीच्या माध्यमातून पर्यटन केले जात आहे. आजच्या संगणक युगात व्यक्ती इंटरनेटच्या व विविध संकेतस्थळांच्या माध्यमातून देखील जगातील पर्यटन स्थळांची माहिती मिळवत आहे व त्या आधारे पर्यटन करत आहे.

पर्यटन हे जगाच्या आर्थिक, राजकिय, सामाजिक, सांस्कृतिक विकासाच्या दृष्टीने एक महत्वाचे साधन आहे. पर्यटनही एक राश्ट्रीय एकात्मता आणि आंतरराश्ट्रीय बंधुत्वाची गुरुकिल्ली आहे. पर्यटनाद्वारे राश्ट्र-राश्ट्रात बंधुत्व आणि एकात्मतेची भावना रुजवली जाते. आजच्या आधुनिक काळात पर्यटन हा जगातील विकसीत होणारा एक महत्वाचा उद्योग आहे. पर्यटनाच्या माध्यमातून प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरित्या कुशल, अकुशल, सुशिक्षित अशिक्षित अशा सर्व लोकांना रोजगार मिळतो. पर्यटन हा कोणत्याही देशासाठी महत्वाचा उद्योगच नाही तर त्या माध्यमातून अनेक उद्योग निर्माण होतात. जगातील अनेक देशांची अर्थव्यवस्था पर्यटनावर अवलंबुन आहे. देशाची अर्थव्यवस्था पुर्णपणे बदलून टाकण्याची क्षमता पर्यटन उद्योगात आहे. भारतात गोवा, केरळ इतर राज्यांची अर्थव्यवस्था पुर्णपणे पर्यटनावर अवलंबुन आहे. पर्यटनाच्या माध्यमातून विकसीत आणि विकसनशील देशातील आर्थिक दरी कमी होते. विशेषतः विकसनशील देशाचा पर्यटनाच्या माध्यमातून सामाजिक आणि आर्थिक विकास होतो. त्याचबरोबरच पर्यटनाद्वारे सरकारला मोठ्या प्रमाणावर अर्थप्राप्ती व परकीय चलन मिळवून देण्यासाठीचा हा एक महत्वाचा उद्योग आहे.

आजच्या आधुनिक काळात पर्यटन करणे हा एक अंतर्गत जीवनाचा महत्वाचा भाग बनलेला आहे.



संदर्भ सूची

- 1) Bhatia A.K. - International Tourism Fundamental Practices, sterling Publishers Ltd. New Delhi, 1995
- 2) Bhatia A.K. - Tourism in India History & Development Steling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi, 1978
- 3) Ghosh Biswanath - Tourism & Travel Management Vikas Publication House Pvt. Ltd. New Delhi, 2005
- 4) Breat Richie - Travel Tourism & Hospitality Research, 1984
- 5) घारपुरे विद्वत् - पर्यटन भूगोल, पिंपळापुरे अँड कं. पब्लिशर्स, नागपूर 2001
- 6) झा.डी.एन. - शर्माली कृष्णमोहन-प्राचिन भारत का इतिहास दिल्ली, 2002

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TO. & DIST. AURANGABAD.

MAH/MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

44
Vidyawarta[®]
Peer-Reviewed International Publication

February 2019
Special Issue-01



MAH/MUL/ 03051/2012


ISSN :2319 9318



Special Issue – Vol. I

VIMUKTA - NOMADIC CASTES – TRIBES AND OTHER
BACKWORD CLASS: PRESENT CONDITIONS,
DEVELOPMENT AND CHALLENGES.

Guest Editor
Dr.R.D.Rathod
Dr.B.K.Shep
Dr.K.M.Bhange

 "Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com



Index

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

01) Nomads -Bajara: Multi Dimensional Migration Theories Professor Ashok S. Pawar, Aurangabad	10
02) Vasant Rao Naik's Contribution in The Development of Banjara Community Dhanaji Wamanrao Arya, Ambajogai	13
03) Chief Minister Vasant Rao Naik: The Father of Green Revolution in Maharashtra Dr. Ramesh D. Rathod, Parli-Vaijnath	15
04) Problems faced by Marginalized Group Dr. Malini Nair, Pune	17
05) VASANT RAO NAIK:- AN ARCHITECT OF MODERN MAHARASHTRA Rupasi Das, Aurangabad	21
06) महाराष्ट्रातील कृषी विकासामध्ये वसंतराव नाईक यांचे योगदान प्रा.डॉ. भगवान डोंगरे, जि. जालना	22
07) महाराष्ट्राच्या विकासात वसंतराव नाईक यांचे योगदान डॉ. किशोर उत्तमराव राऊत, अमरावती	25
08) नव महाराष्ट्राचे शिल्पकार वसंतराव नाईक : कांतीकारी कार्य व सुसंस्कृत नेतृत्व प्राचार्य डॉ. प्रकाश जाधव, जि. बीड	28
09) आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार वसंतराव नाईक डॉ.गणपत राठोड, अंबाजोगाई	31
10) हरितक्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक : जीवन आणि कार्य डॉ.किशन मनोहर पवार , वडवणी जि.बीड	33
11) हरितक्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक : जीवन आणि कार्य प्रा. राठोड बी.जे., पाटोदा	35
12) महाराष्ट्राच्या जडणघडणीत वसंतराव नाईक यांचे योगदान प्रा.डॉ. विलास आघाव, हिंगोली	37
13) वसंतराव नाईक एक दूरदृष्टी नेतृत्व :शासकीय पद व कार्य प्रा. विकास वसराव आडे, जि. गोंदिया	41



- 77) मटक्या विमुक्त जाती मधील वडार समाजातील स्त्रीयांच्या कौटुंबिक व सामाजिक समस्याचा अभ्यास
सोनवणे अमोल गणेशराव, परभणी ||188
- 78) भारतातील हरितक्रांती -- एक अभ्यास
प्रा. संजय रणखंबी & प्रा. आदिनाथ नागरगोजे, परळी वै. ||191
- 79) हरीतक्रांतीचे प्रणेते - वसंतराव नाईक आणि महाराष्ट्राची जडणघडण
डॉ. विनोद बाबुराव बोरेसे, जि. औरंगाबाद ||193
- 80) हरितक्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक यांचे जीवन कार्य
प्रा.चाटे नारायण संभाजीराव & प्रा.गायकवाड राहुल मारोतीराव, ता.परळी.जि.बीड ||195
- 81) हरितक्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक : जीवन आणि कार्य
बोकडे भगवंत चंद्रकांत, लातूर ||197
- 82) महाराष्ट्राच्या विकासात वसंतराव नाईक यांचे योगदान
नागनाथ दाजिबा सालुंके, जि. बीड ||199
- 83) मटक्या विमुक्त जमाती : कारणे आणि परिणाम
प्रा. धारवाडकर दीपक सुधाकर सेनगांव जि.हिंगोली ||201
- 84) हरित क्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक
प्रा.डॉ. कालिदास दिनकर फड, करमाड ता.जि.औरंगाबाद ||203
- 85) हरितक्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक : जीवन आणि कार्य
डॉ. विक्रम राठोड, जि.जालना ||205





"हरित क्रांतीचे प्रणेते वसंतराव नाईक"

प्रा.डॉ. कालिदास दिनकर फड

लोकप्रशासन विभागप्रमुख

राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड त.जि.औरंगाबाद

महाराष्ट्राच्या सर्वांगीन विकासाला दिशा देण्याचे कार्य ज्या थोर विभूतींनी केले, त्यात स्व. वसंतराव नाईक यांचे योगदान अतिशय महत्वपूर्ण आहे. वसंतराव नाईक यांची नाळ ग्रामीण भागाशी जोडलेली होती. शेती हा त्यांच्या जीव्हाळ्याचा विषय होता. ते शेतीत रममाण होत. शेती, शेतकऱ्यांचे प्रश्न सुटले पाहिजेत. याबाबतीत ते सतत जागरूक असत. आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण यांच्या मंत्रिमंडळात नाईक साहेबांनी सहकार व कृषीमंत्री म्हणून अतिशय महत्वपूर्ण कार्य केले. महाराष्ट्राच्या कृषी - उद्योग समाजरचनेचा पाया त्यांच्या कृषीमंत्री पदाच्या कारकीर्दीत घातला गेला.

नाईक साहेबांनी आपल्या कृषीमंत्री पदाच्या कारकीर्दीत शेतकऱ्यांत नवचैतन्य निर्माण करून त्यांच्यात शेती, शेतीचे प्रश्न, शेतीचे स्वरूप याबाबतीत जाणीव जागृती निर्माण केली. त्यांनी आपल्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कारकीर्दीत शेती संदर्भात अनेक महत्वपूर्ण निर्णय घेतले. त्याचाच परिणाम शेतीची उत्पादन क्षमता वाढली व शेतकऱ्यांचे जीवनमान उंचावले.

वसंतराव नाईकांनी सलग ११ वर्षे राज्याचे मुख्यमंत्री म्हणून अतिशय प्रभावीपणे कार्य केले. आपल्या मुख्यमंत्री पदाच्या कारकीर्दीत समाजातील सर्व समाजघटकांना सोबत घेऊन त्यांनी कार्य केले. समाजातील उपेक्षित, वंचित, विकासाच्या प्रवाहापासून दूर असलेला घटक त्यांच्या जिव्हाळ्याचा होता. त्यांना विकासाच्या मुख्य प्रवाहात आणण्याचे काम नाईक साहेबांनी आपल्या कारकिर्दीत केले. वंचित, उपेक्षितांना न्याय देण्याचे कार्य त्यांनी केले. त्यांच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कारकिर्दीत महाराष्ट्रभर अनेक सकटे आली. त्यात ही नैसर्गिक संकटांची अधिक भर होती. त्या सर्व संकटांचा त्यांनी अतिशय धैर्याने, संयमाने सामना करून सकटग्रस्तांना दिलासा दिला. यातूनच त्यांच्या खऱ्या प्रशासकीय नेतृत्वाचा परिचय येतो.

वसंतराव नाईक हे खऱ्या अर्थाने शेतकऱ्यांचे मुख्यमंत्री होते. मुळात शेतकरी असल्यामुळे शेती, शेतकरी, शेतमजूर हे त्यांच्या जिव्हाळ्याचे विषय होते. त्यांनी हे सर्व प्रश्न अनुभवले होते. त्यामुळे शेती हा व्यवसाय अतिशय पवित्र असून शेतकरी हाच अन्नदाता आहे. या व्यवसायातील व्यक्ती हा अतिशय प्रामाणिकपणे, काबाडकष्ट करतो. त्यामुळे त्याच्या श्रमाला प्रतिष्ठा मिळाली पाहिजे. शेतकऱ्याची प्रतिष्ठा वाढली तरच राष्ट्राची प्रतिष्ठा वाढेल. या भावनेतून त्यांनी प्रत्यक्ष कार्य केले. शेतमजूर, भूमिहीन, कसणारे, शेतकरी यांना त्यांनी जमीनी मिळवून दिल्या. 'कसेल त्याची जमीन' या तत्वानुसार महाराष्ट्रात कमाळ जमीन धारण कायदा लागू करून भूमिहीनांच्या उपजीवीकेचा प्रश्न सोडवला. भारतीय शेती ही अतिशय पारंपारिक पद्धतीने केली जाते. त्यामुळे शेतीची उत्पादनक्षमता व उत्पादन वाढविण्यासाठी शेतीला आधुनिक तंत्रज्ञानाची जोड

12. भटक्या जमातीच्या लोकांना कायम निवासस्थानाची सोय करावी कारण हे एकाच ठिकाणी राहत नसल्यामुळे त्यांना बँकेचा कर्जपुरवठा व शासनाच्या निवास योजनेचा लाभ घेता येत नाही. त्यामुळे ते रोजगार मिळवू शकत नाहीत. दारिद्र्यामुळे ते एकाच ठिकाणी निवासही करू शकत नाहीत. त्यामुळे शासनामार्फत ही व्यवस्था करण्यात यावी.

13. कायदानुसार भटक्या जमातींना सर्व प्रकारचे संरक्षण देण्यात यावे.

वरील सर्व उपाययोजनांबरोबरच भारतीय राज्यघटनेत कलम 14 ते 16, 29,30,325,326 आणि 338 व 339 नुसार अनेक तरतुदी करण्यात येवून भटक्या जमातींच्या सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व राजकीय उत्कर्ष व्हावा याकरीता प्रयत्न करण्यात आले आहेत.

निष्कर्ष :

1. वर्तमान काळात देखील भटका समाज असंघटीत आहे.
2. असंघटीत असल्यामुळे या समाजाच्या समस्या इतर समाजापेक्षा वेगळ्या आहेत.
3. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर सुद्धा भटक्या समाजाच्या जीवनमानात फारशी सुधारणा झालेली नाही.
4. भटक्या समाजाची नव्याने जनगणना करणे गरजेचे आहे.
5. भटक्या समाजाला त्याचे अधिकार आणि घटनात्मक तरतुदी विषयी फारशी माहिती नाही.

संदर्भ सुची :

1- Indian Constitution

www.hrw.org, <http://alserviceindia.com>.

2. भटक्या विमुक्तांची जात पंचायत चव्हाण रामनाथ देशमुख आणि कंपनी प्रा. पूणे 2002

3. विमुक्तायन माने लक्ष्मण यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठाण 1997

4- States of Minority – Dr.B.R. Ambedkar

5. आधुनिक भारत मे सामाजिक समस्याएँ – डॉ. महेशकुमार परदेशी / दीपक धारवाडकर इशिका पब्लिकेशन हाउस,

जयपूर 2016

6. भारतीय समाज समकालीन समस्या : प्रा. दीपक धारवाडकर / प्रा. साहेबराव भालेराव – रुद्राणी पब्लिकेशन हाउस, भोकर 2017



देण्याशिवाय गत्यंतर नाही ही बाब वसंतरावांनी हेरली होती. त्यांच्या या विचारानून व कृतीतून महाराष्ट्रात हरित क्रांती घडून आणली. शेती कसण्यासाठी ट्रॅक्टर व तत्सम आधुनिक साधन सामुग्री व सिंचन सुविधा पुरवून शेतीचे उत्पादन वाढवले. आधुनिक बि-बियाणे, औषधे, खते, अवजारे याद्वारे महाराष्ट्राच्या कृषि क्षेत्राच्या क्षेत्रात प्रचंड वाढवले वसंतराव नाईकांनी घडवून आणले. त्यातूनच महाराष्ट्र राज्याचे अन्नधान्य उत्पादन प्रचंड वाढले व महाराष्ट्र हा अन्नधान्यांच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाला.

"अन्नधान्याच्या बाबतीत महाराष्ट्र स्वयंपूर्ण नाही झाला तर मला जाहीर फाशी द्या" अशी घोषणा करण्यात मुख्यमंत्री समग्र भारत देशात होणे नव्हे, हे शिवधनुष्य त्यांनी यशस्वीपणे पेलून दाखविले. शेतीला पाण्याची अतिशय आवश्यकता आहे. पाण्याशिवाय शेती करणे अवघड आहे. या बाबीची नाईक साहेबांना जाणीव होती. म्हणून ते शेतकऱ्यांना नेहमी म्हणत, "शेती ओलीताखाली आणा" म्हणजेच गावातील पाणी गावातच जिरवा, शेतीतील पाणी शेतीतच जिरवा. शेतकऱ्यांनी पाण्याची स्रोत करण्यासाठी गावातील छोटे ओढे, नाले, नद्या, आडवून पाणी जिरवले पाहिजे. त्यासाठी त्यांनी नाला बंदींग, टेरिसींग, बांध बंधीसीची योजना राबवली. बंधारे बंधून पाणी आडविण्यात येवू लागले. गावात छोटेवा तलावावर कालवे,

पाझर तलाव, विहीरी बांधून पाणी गावातच जिरविण्यात येवू लागले. या कार्यास त्यांच्या कारकिर्दीत मोठ्या प्रमाणावर प्रोत्साहन मिळाले. त्यामुळे सिंचनाचे क्षेत्र वाढले होते.

सिंचनाबरोबरच शेतीला विजही अत्यावश्यक आहे. त्यांच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कारकिर्दीत महाराष्ट्रात शेतीपंपाना विज उपलब्ध करून देण्यासाठी औष्णिक विज निर्मिती केंद्रही सुरु करण्यात आले. तसेच संकरीत बी-बियाणे तयार करण्यासाठी महाराष्ट्र राज्य बियाणे महामंडळाची स्थापना करून नवनवीन बियाणांची वाणे, खते, औषधी शेतकऱ्यांना मिळू लागली. शेतकऱ्यांना शेतीच्या बांधावर ज्ञान मिळावे, शेतीत नवनवीन संशोधन व्हावे, शेतकऱ्यांना आधुनिक शेतीचे प्रशिक्षण मिळावे या हेतून महाराष्ट्रातील कृषि विद्यापीठांच्या स्थापनेत त्यांचा सिंहाचा वाटा होता. यामुळे कृषि विद्यापीठातील संशोधन, ज्ञान शेतकऱ्यांना बांधावर मिळू लागले.

वसंतराव नाईकांच्या दुरदृष्टीतून, कार्यकुशलतेतून शेतकऱ्यांच्या कृषी मालाला योग्य भाव मिळाला. कापूस उत्पादक शेतकऱ्यांचे शोषण थांबावे या हेतून "कापूस एकाधिकार खरेदी योजना" सुरु करून दलालापासून होणारी शेतकऱ्यांची लूट संपवली. त्यांच्याच कारकिर्दीत ज्वारी उत्पादक शेतकऱ्यांना चांगला भाव मिळावा म्हणून "ज्वारी एकाधिकार खरेदी" योजना ज्वारी उत्पादक शेतकऱ्यांसाठी राबविली. असे अनेक शेती व शेतकऱ्यांच्या हिताचे महत्त्वपूर्ण निर्णय व प्रत्यक्ष कार्य वसंतराव नाईकांनी केले म्हणूनच त्यांना हरितक्रांतीचे प्रणेते म्हटले जाते.

सारांश :

'शेती टिकेल तर देश टिकेल.' या दुरदृष्टीच्या दृष्टिकोनातून वसंतराव नाईकांनी शेतकऱ्यांत शेतीच्या प्रश्नांची जाणीव करून एक प्रकारचे शेतकऱ्यात, शेतीसंदर्भात नवचेतन्य निर्माण करून दिले. शेतीचे उत्पादन वाढविण्यासाठी नवनवीन तंत्रज्ञान उपलब्ध करून देवून ते वापरण्यास प्रोत्साहन दिले. आधुनिक बी-बियाणे, खते, औषधांच्या वापरामुळे शेतीचे उत्पादन वाढले. शेतीला सिंचन,

धीज, उद्योगाची जोड मिळाली. शेतकरी, शेतमजूर सुखावला. आधुनिक महाराष्ट्राचा पाया मजबूत होत गेला.

संदर्भ :

1. भावे मधुकर (२०१२), लोकराज्य, विकासाचा महानायक, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मुंबई.
2. स्वामीनाथन एम.एस. (२०१२), लोकराज्य, दुर्दम्य इच्छाशक्ती, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मुंबई.
3. पवार शरद (२०१२), लोकराज्य, कर्तृत्वाचा फळस, शब्दांकन मोहन राठोड, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मुंबई.
4. भावे मधुकर, संपादक (२०११), महानायक, मनीषा पब्लिकेशन, मुंबई.
5. राठोड आत्माराम (१९८९), तांडा, अभिजात प्रकाशन, नागपूर.
6. कर्णिक मधुमंगेश (१९२४), दुत पर्जन्याचा, वसंतराव नाईक कृषी संशोधन व ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान, मुंबई.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MULTI DISCIPLINARY STUDIES



Approved by : University Grant Commission (UGC)

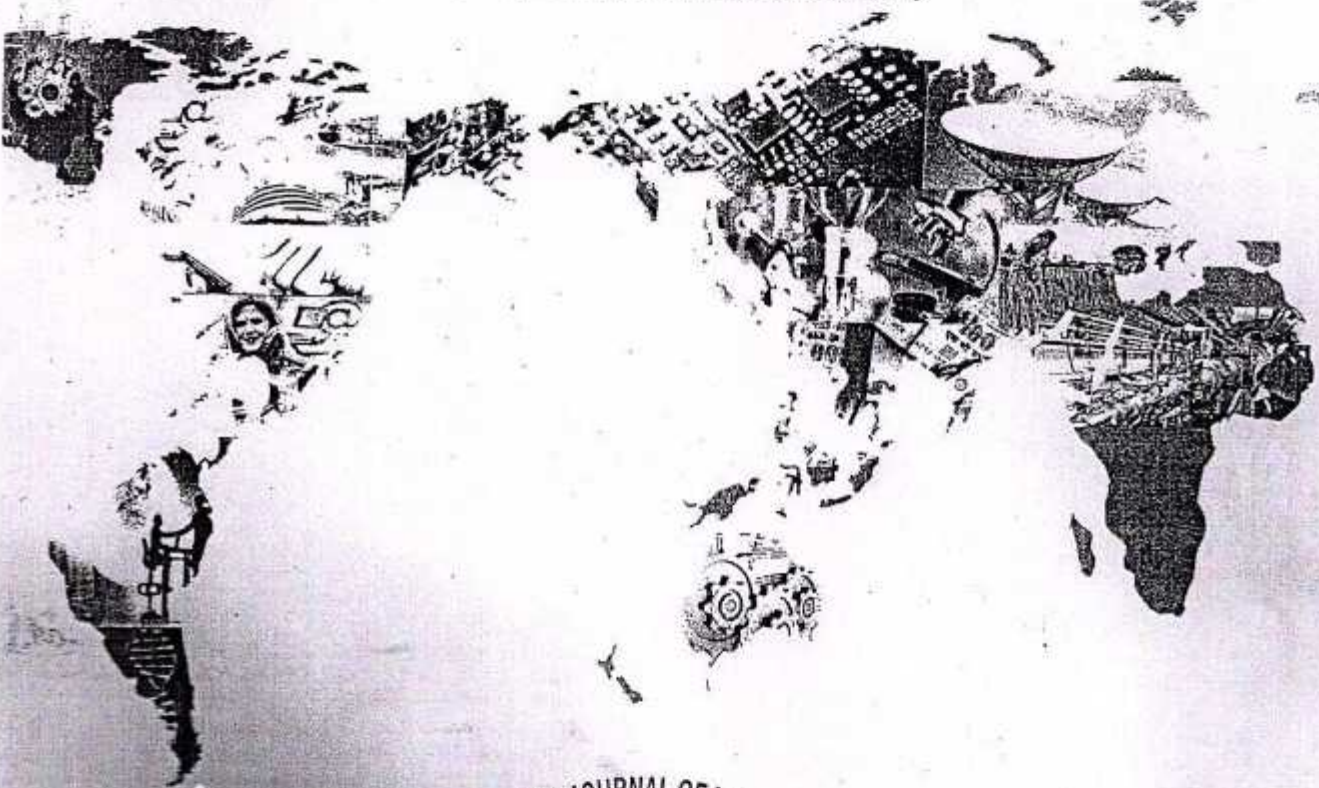
MONTHLY DOUBLE-BLIND PEER REVIEWED REFERRED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL

www.irjms.in

E-mail : irjms2015@gmail.com irjms.in@gmail.com

Vol. IV, Special Issue -II, January, 2019 ISSN (Online): 2454-8499

Impact Factor : 1.3599(GIF), 0.679 (IIFS)



Executive Editor
Prof. Tanaji Jadhav

Chief Editor
Dr. Mahendra Avaghade



अनुक्रमणिका

अ. क्र.	लेखाचे नाव	लेखकांचे नाव
1)	Globalization and Social Collapse in Mahesh Elkunchwar's Play Old Stone Mansion	Dr. Sachin Gadekar
2)	Farmers Suicides in Maharashtra	Dr. Vilas Awari, Suresh Devare
3)	RPI-BM AND AIMIM ALLIANCE- DISCOURSE IN MAHARASHTRA POLITICS	Dr D. S. Shambharkar
4)	Issues in Maharashtra politics	Dr. Bhong Shrinivas Ashok
5)	Maharashtra-A Global Economy	Dr. Wahida Shaikh
6)	Politics of Infrastructure Regulation in Maharashtra	Kalpana Dixit
7)	The Role of Various Social Issues in Maharashtra Politics	Jadhav Babasaheb Kailas
8)	"Women in the democratic framework of electoral politics"	Dr. Meenal. K. Kshirsagar
9)	SABARIMALA JUDGEMENT AND RIGHT TO RELIGION OF WOMEN	Pradhnya P. Sawarkar
10)	The Gender Socialization (Special reference to the Women empowerment in India	Kasturi Dharashivkar
11)	Indian Federation and Internal Security	Dr. A.R. Kadu
12)	Challenges to India's Internal Security (An illegal immigration to India Special reference to The Rohingyas crisis)	Dr. Vidya Raut
13)	INDIA'S INTERNAL SECURITY MANAGEMENT : TRANSFORMING PHASES	Prof. P.P. Dolas
14)	Challenges to India's to Internal Security	Prof. Boyewar Yadav Baburao
15)	What is the importance of Education in Indian Politics?	Dr. Dudhkawade S.R.
16)	Education : New Role of Information Technology	Prof. Dr. Deellpsing Nikumbh
17)	Role of Print-Electronic- Social Media and Political World : A review	Dr. Vaibhav Suryawanshi.
18)	THE ROLE OF EDUCATION IN ECONOMIC DEVELOPMENT	Dr. Rahul Nivruttirao Dhumal.
१९)	महाराष्ट्राची जडणघडण आणि महाराष्ट्रातील लोकदैवत -	प्रा. डॉ. मधुकर श्रीरंग पवार
२०)	अकराव्या महाराष्ट्र विधान सभेतील महिला सदस्यांना सभागृहातील कामकाजा दरम्यान येणाऱ्या समस्यांचे चिकित्सक अध्ययना	डॉ. मनिषा यादव, डॉ. ममता पाशीकर
२१)	महाराष्ट्राचे राजकारण आणि आव्हानात्मक सामाजिक मुद्यांचा राजकीय अभ्यास	डॉ. गोंदकर दत्तात्रय
२२)	बहूजन आणि वंघीताचे प्रश्न : महाराष्ट्र शासना समोरील आव्हान	डॉ. जे. टी. कांबळे
२३)	महाराष्ट्राचे राजकारण आणि प्रादेशिक वाद : एक अभ्यास	डॉ. रमाकांत तिडके



- २४) महाराष्ट्राच्या राजकारणात राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्षाची भूमिका : एक अभ्यास
- २५) महाराष्ट्राच्या राजकारणातील बदलते नेतृत्व
- २६) महाराष्ट्रातील मानवी स्थलांतर आणि विकासाचा प्रश्न
- २७) महाराष्ट्राच्या राजकारणातील बदलती समीकरणे
- २८) आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार : मा. शरद पवार
- २९) महाराष्ट्राचा सामाजिक, आर्थिक आणि राजकीय विकास : वास्तवता
- ३०) भाषावार प्रांतरचना आणि महाराष्ट्र : संयुक्त महाराष्ट्र चळवळीचा विशेष संदर्भ
- ३१) महाराष्ट्रातील राजकीय संस्कृतीचे बदलते स्वरूप
- ३२) महाराष्ट्राच्या राजकारणातील समस्या
- ३३) महाराष्ट्राचे राजकारण आणि जात
- ३४) महाराष्ट्राचे राजकारण : काँग्रेस वर्चस्व ते बहुपक्षीय स्पर्धा
- ३५) महाराष्ट्रातील प्रमुख पक्ष व जातींचा राजकारणातील प्रभाव
- ३६) स्वातंत्र्योत्तर महाराष्ट्रातील दलित नेतृत्वाचा राजकीय व्यवहार
- ३७) महाराष्ट्र राज्याच्या राजकारणातील बदलते नेतृत्व
- ३८) आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार : यशवंतराव चव्हाण
- ३९) महाराष्ट्रातील स्थानिक राजकीय प्रक्रिया
- ४०) आधुनिक महाराष्ट्राच्या सहकार क्षेत्राच्या विकासात यशवंतराव चव्हाणांची भूमिका
- ४१) महाराष्ट्राच्या राजकारणातील प्रभावी घटक
- ४२) महाराष्ट्रातील आदिवासी चळवळ
- ४३) शरद जोशी प्रणित शेतकरी संघटनेचे स्त्री-स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान
- ४४) महाराष्ट्रातील आंबेडकरी चळवळ : एक अवलोकन
- ४५) रोहिंग्या मुस्लिमांचा प्रश्न आणि भारताची भूमिका
- ४६) मराठा आरक्षण
- ४७) महाराष्ट्रातील शेतकरी चळवळ
- ४८) महाराष्ट्रातील विडी कामगार चळवळी समोरील पेचप्रसंग
- ४९) महिलांच्या समस्या आणि वाद
- ५०) महिलांचे मानवी हक्क : एक ऋजुतापूर्वक न्याय
- ५१) भारतीय राजकारणात स्त्रीयांची भूमिका व योगदान विशेष संदर्भ :- महाराष्ट्र राज्य
- ५२) पंचायतराज व्यवस्थेत महिला नेतृत्वाचा सहभाग
- ५३) मंदिर प्रवेश - स्त्री हक्क
- ५४) महिला सवलीकरणात महाराष्ट्राची भूमिका
- ५५) मानवी जीवनातील शिक्षणाचे महत्त्व
- डॉ. तळेकर चंद्रशेखर
- डॉ. सुनिल पिंपळे
- प्रा. डॉ. मोहन चोगुले
- डॉ. रामकिशन लोमटे
- डॉ. बाळ कांबळे, प्रा. प्रदीप जगताप
- डॉ. संजय भोळे, डॉ. के. जी. पोकळे
- स्वप्निल बोधने
- डॉ. राजकुमार सुरवसे
- प्रा. जे. जी. गायकवाड
- डॉ. संभाजी वारुंगळे पाटील
- प्रा. त्रतुराज बुवा
- प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर
- प्रा. किर्तीकर भीमराव
- शेख जम्बार खलील
- प्रा. कांतीलाल सोनवणे
- डॉ. संतोष कायंदे
- डॉ. कलिदास फड
- प्रा. जयश्री शेंडे
- डॉ. आर. के. काळे
- प्रा. पाटील प्रमोद जगन्नाथ
- प्रा. किरण गायकवाड
- दत्तात्रय जाधव
- डॉ. मंजिरी कारेकर
- डॉ. हनुमंत फाटक, प्रा. अविनाश सावळकर
- प्रा. राजू पांडे
- डॉ. दिनकर कळवे
- डॉ. सुवर्णा गुडगे-वेनके
- डॉ. कदम हरिभाऊ
- डॉ. विलास आघाव
- प्रा. डॉ. मनिषा कचवे
- डॉ. प्रभाकर जगताप
- डॉ. संजय तांडे



40



आधुनिक महाराष्ट्राच्या सहकार क्षेत्राच्या विकासात यशवंतराव चव्हाणांची भूमिका

डॉ. कलिदास दिनकर फड

(लोकप्रशासन विभाग)

राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता. जि. औरंगाबाद, मो.नं. ७३८७९९८३८८

प्रस्तावना :

महाराष्ट्रात सहकारी चळवळीला दिशा देणारे जे विचारवंत, राजकीय नेतृत्व व कृतीशील कार्यकर्ते निर्माण झाले त्यात बॅरिस्टर गाडगीळ, वैकुंठभाई मेहता, पद्मश्री विठ्ठलराव विखे यांच्याप्रमाणेच यशवंतराव चव्हाण यांनी सहकार क्षेत्राला वैचारिक बैठक दिली. देशभर भूषणावह ठरणान्या सहकारी चळवळीचे समृद्ध जाळे निर्माण करुन या चळवळीच्या माध्यमातून ग्रामीण भागाचा सर्वांगीण विकास करण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला.

यशवंतरावांच्या मते, 'सहकार चळवळ ही एखाद्या पक्षाची चळवळ नव्हे. तात्विकदृष्ट्या सहकार चळवळ ही मूलतः लोकशाहीची चळवळ आहे हे आपण विसरता कामा नये.' या चळवळीमागील दृष्टिकोन आपण नीट समजून घेतला पाहिजे. आणि लोकशाहीचे हे स्वरूप कोठेही डागाळणार नाही याची आपण काळजी घेतली पाहिजे. जर ते डागळेच तर ते का ? डागळेले याचा आपण वारंवार शोध घेतला पाहिजे. सामान्य आणि शोषित समाजाच्या उपयोगी पडणे हा या चळवळीचा प्राण आहे. खऱ्या अर्थाने आपल्याला ही चळवळ चालवायची असेल तर तिच्याकडे आपण लोकशाहीच्या दृष्टिकोनातून पाहिले पाहिजे. लोकशाहीचे जे सहकार चळवळीचे स्वरूप आहे, ते आपण सुरक्षित ठेवले पाहिजे, जोपासले पाहिजे. सहकार चळवळ ही लोकशाही स्वरूपात चालली पाहिजे. या चळवळीने सामान्य, शोषित समाजाला उपयोगी पडले पाहिजे.

यशवंतरावांनी २६ ऑक्टोबर १९६० रोजी सहकार विषयक कायदा पारित करुन सहकारी चळवळीची मुहूर्तमेढ रोवली. सहकारातून समाजवाद निर्माण करण्याचे त्यांचे ध्येय होते. सहकारी चळवळीच्या माध्यमातून आर्थिक सत्तेचे विकेंद्रीकरण होवून महाराष्ट्राच्या आर्थिक परिवर्तनात भर पडेल असा सार्थ विश्वास यशवंतरावांना होता. तो बऱ्याच अंशी खरा ठरलेला आहे. सहकारी चळवळीचा विकास होत आहे. ही चळवळ अनियंत्रित होवू नये व काही मुठभर लोकांच्या हाती जावू नये यासाठी या चळवळीवर लोकशाही पद्धतीने नियंत्रण ठेवले पाहिजे. या चळवळीतील सत्ता विकेंद्रीत झाली पाहिजे. सहकारी चळवळीच्या सक्षमतैबरोबर ही चळवळ आपल्या उद्देशापासून दूर जावू नये म्हणून नियंत्रण ठेवण्यावरही यशवंतरावांना विशेष कटाक्ष होता.

यशवंतराव सहकार आणि ग्रामपंचायत यांना लोकशाहीची मुलभूत अंगे मानत. सहकार आणि ग्रामपंचायतींचा

विकास व्हावयाचा असेल तर अन्नधान्याचे उत्पादन वाढणे जरूरीचे आहे. सहकार संस्थात केवळ निवडून आलेल्या प्रतिनिधींनीच नव्हे तर तेथील सहकारी अधिकाऱ्यांनी ही या चळवळीकडे लक्ष दिल्यास या चळवळीतील नेतृत्वाचा प्रश्न सुटेल असा त्यांना विश्वास होता. अन्नधान्याचे उत्पादन वाढले तर सहकारी चळवळीचा विस्तार वेगाने होईल. सहकारी अधिकाऱ्यांनी सहकारी चळवळीकडे विशेष लक्ष पुरवावे. त्यामुळे सहकारी चळवळीला योग्य व कुशल नेतृत्व मिळेल. चळवळीच्या विकासाला योग्य गती मिळेल. महाराष्ट्राने सहकाराच्या माध्यमातून देशाला कर्तृत्ववान नेते आणि नेतृत्व दिले आहे. त्याचा पाया यशवंतराव चव्हाण यांच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कालखंडात घातला गेलेला आहे. सहकारी चळवळीत सामान्यातील सामान्यांना सहभागी करुन त्याला या चळवळीच्या प्रवाहात आणले. श्रीमंतांना गरिबांचा विचार करण्यास प्रवृत्त केले. त्यामुळे सहकार चळवळीत सलोखा वाढला. सहकार ही सर्वांच्या सहकारातून वाढावी यावर त्यांचा कटाक्ष होता.

यशवंतरावांनी सहकाराची अनेक दालने सामान्यासाठी खुली केली. शेतीसाठी कर्जपुरवठा करणे, शेतमालाची विक्री करणे, शेतीसाठी व घरगुती उपयोगासाठी लागणाऱ्या वस्तुंची विक्री करणे, शेती विकास, शेतमालावर प्रक्रिया करणे, दुग्धोत्पादकांच्या व दुग्धपुराठा करणाऱ्या संघटना स्थापणे अशी विविध प्रकारची कामे त्यांच्या कार्यकाळात झाली. ग्रामीण भागात सरकारने सर्वोच्च बँका, सहकारी संस्था, प्रांतिक भूविकास बँका अशा संस्थामार्फत कर्जपुरवठ्याची उपाययोजना केली. जलसिंचन योजना, दुग्धसंस्था आणि दुग्धउत्पादकांचे फेडरेशन स्थापन केले. यामुळे सामान्यांना कर्जपुरठा होऊ लागला. शेतीत गुंतवणूक होवून शेतीतील उत्पादन वाढले. ग्रामिण जनता दूध संघाशी जोडली गेली. त्यांच्या आर्थिक



INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES

Vol. IV, Special Issue -II, January, 2019 ISSN (Online): 2454-8499 Impact Factor: 1.3599(GIF), 0.679(IIFS)

स्थितीत सुधारणा झाली. पर्यायाने सहकाराच्या माध्यमातून ग्रामीण भागात सुवता आली.

सहकारी चळवळ राज्यात वाढवण्याच्या यशवंतरावांच्या दूरदृष्टीतून महाराष्ट्रातील साखर कारखान्यांची संख्या अर्धशतक ओलांडून पुढे गेली. अन्य क्षेत्रातील सहकारी संस्था हजारांच्या संख्येने निर्माण झाल्या. भारताच्या सहकारी नकाशावर महाराष्ट्राने अग्रेसरत्व पटकावले. सहकारी संस्थांच्या पद्धतशीर विकासासाठी कायदेशीर तरतुदी करण्यात आल्या. यशवंतरावांनी मुंबई दुध योजनेखाली वरळी येथील दूध डेअरी योजनेचे काम नोव्हेंबर १९६१ रोजी सुरु केले आणि पुढच्या १८ महिन्यात ते पूर्ण करून घेतले. आरे दुग्धालयात डेअरी टेक्नॉलॉजी संस्थेमध्ये पहिला भारतीय दुग्धालय पदवीका (डिप्लोमा) अभ्यासक्रम यशवंतरावांच्या कारकिर्दीत सुरु झाला. संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या अन्न व कृषी संघटनेच्या विद्यमाने डेन्मार्क सरकार आणि भारत सरकार यांनी संयुक्तरीत्या युकारलेला दुधाच्या व्यवसायाबाबतचा दुसरा शिक्षणवर्ग त्यांनी आरे दूधवाडीत आणला. त्यामुळे सहकारी दुग्धव्यवसायात वाढ झाली. महाराष्ट्रातील ऊस, कापूस, तेलबिया या पिकांसाठी त्यांनी सहकारी साखर कारखाने, सहकारी सुतगिरण्या, सहकारी ऑईल मिल, फळप्रक्रिया उद्योग काढण्यासाठी प्रोत्साहन देऊन त्यासाठी शेअर्स व कर्ज गॅरंटी इत्यादी रूपाने शासनाने मोठे पाठबळ त्या कारखानदारीला दिले. दूरदृष्टीच्या यशवंतरावांकडून शेती उद्योगाला चालना मिळाली. शेतीला जोडघंघाची अत्यावश्यक दिशा यशवंतरावांनी दिली. त्यामुळे डेअरी, पोल्ट्री, फळबागा मच्छिमारी या उद्योगांना चालना मिळाली. दूध संघामार्फत दुधावर प्रक्रिया करणारे प्रकल्प उभे राहिले. या व्यवसायांमुळे लहान शेतकऱ्यांबरोबरच शेतमजूरसुद्धा आर्थिक दृष्ट्या स्वतःच्या पायावर उभे राहिले. त्याचबरोबर फलोद्यान प्रकल्प उभे राहिले. सहकारातून खरा समाजवाद उदयास येईल अशी यशवंतरावांची विचारधारा होती. या विचारसरणीमुळेच त्यांना सर्वांचे सहकार्य लाभले व राज्याची सर्वच क्षेत्रात प्रगती झाली. सहकारी साखर कारखाने, सहकारी पद्धतीच्या बाजारपेठा, सहकारी बँका व सहकारी गृहनिर्माण संस्था ही संपूर्ण देशाला त्यांनी दिलेली अनेमोल देणगी आहे.

सहकार चळवळीचा उपयोग दारिद्र्याशी लढण्यासाठी व्हावा, रोजगार वाढवण्यासाठी व्हावा. या संस्थांनी श्रीमंत शेतकऱ्यांच्या हाताखालील खेळणी बनू नये. त्यांनी श्रीमंताना अधिक श्रीमंत करू नये. दुर्बलांना सामर्थ्य देण्याकरिता सहकारी चळवळीचा जन्म झालेला आहे या मुळ प्रेरणेकडे दुर्लक्ष होणार नाही याची त्यांनी काळजी घेतली होती. संस्थांच्या विकासाची

शास्त्रीय चिकित्सा व्हावी, राजकीय सत्तेचे नवे मक्तेदार जर या चळवळीतून निर्माण व्हायचे नसतील तर एकापेक्षा अधिक सहकारी संस्थांचे अध्यक्षपद एकाच व्यक्तीकडे राहू नये. कोणाही व्यक्तीला दोनपेक्षा अधिक कार्यकालासाठी आपल्या पदावर राहता कामा नये. सहकाराच्या माध्यमातून शेवटचा गरीब, सामान्यातील सामान्य माणूस सुखी झाला पाहिजे. सहकार ही श्रीमंताची मक्तेदारी होऊ नये याचीही काळजी त्यांनी घेतलेली होती. त्या माध्यमातूनच गरिबांची उन्नती झाली आहे, होत आहे. सारांश : सहकार क्षेत्र विस्ताराचे, त्याचा ग्रामिण जीवनाच्या आर्थिक परिस्थितीवर अनुकूल परिणाम व्हावा म्हणून शेतीसाठी कर्जपुरवठा शेतमालावर प्रक्रिया उद्योग, कृषि-उद्योग समाजरचनेची उभारणी, दुग्धोत्पादन संस्था काढून त्यांना समाजरचनेची उभारणी, दुग्धोत्पादन संस्था काढून त्यांना कर्जाच्या सोयीकरिता सहकारी बँका, भूविकास बँका यांच्यामार्फत कर्जपुरवठा करण्याची यंत्रणा, यशवंतरावांनी महाराष्ट्रात उभी केली. सावकारी पाशाच्या चक्रव्युहात अडकलेल्या शेतकरी, कष्टकरी वर्गाला मुक्त करण्यासाठी सहकारी पतसंस्था, विविध कार्यकारी सेवा सोसायट्या, सहकारी बँकामार्फत सर्वसामान्यांना कर्ज, खते, बी-बीयाणे आणि दैनंदिन जीवनात लागणाऱ्या वस्तू माफक दरात उपलब्ध होऊन सहकाराच्या माध्यमातून दुर्बल वर्ग, गरीबातील गरीब, सामान्यातील सामान्य माणूस सुखी झाला पाहिजे यासाठी यशवंतरावांनी प्रयत्न केलेले होते. त्यांच्याच यशस्वी प्रयत्नावर आधुनिक महाराष्ट्राच्या सहकार क्षेत्राचा पाया मजबूत भक्कम बनून आज सहकार क्षेत्राचा जलद विकास झालेला आहे.

संदर्भ : चव्हाण यशवंतराव (१९७०), 'युगांतर', कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे.

काळे बाबुराव (१९६५), द्वितीयावृत्ती, 'यशवंतराव चव्हाण', गो.य.राणे प्रकाशन, पुणे.

चव्हाण यशवंतराव (१९६२), प्रथमावृत्ती 'सह्याद्रीचे वारे', प्रसिद्धी विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

केळकर भा.कृ. (१९८५), 'यशवंतराव राष्ट्रीय व्यक्तिमत्व', महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई.

नाईकनवरे विश्वास (२०१०), 'महाराष्ट्र भूषण यशवंतराव चव्हाण', श्री गंधर्ववेद प्रकाशन, पुणे.

कांबळे उत्तम (संपादक) (२०१२), प्रथमावृत्ती 'यशवंतराव चव्हाण नवमहाराष्ट्राचे शिल्पकार', सकाळ प्रकाशन, पुणे.

प्रधान राम (२०००), 'यशवंतराव चव्हाण शब्दांचे सामर्थ्य यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान, मुंबई.

भोळे भा. ल. (१९८५), प्रथमावृत्ती 'यशवंतराव चव्हाण राजकारण आणि साहित्य', साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7142

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidisciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol. (II)

12 January 2012 Special Issue – 92

Recent Trends In Public Administration : Theories, Practice & Future

Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue

Dr. Bidwe T.S.

Assit. Prof. Head of Dept.

Public Administraion

Vasant Mahavidalaya , Kajj, Dist. Beed



SWATIDHAN PUBLICATION

Visit to - www.researchjourney.net





Index

1. पर्यावरणीय आव्हान : समस्या व उपाय
 2. जनसहभागिता एक समस्या
 3. आपत्ती व्यवस्थापन - संकल्पना
 4. आपत्ती व्यवस्थापनात महाराष्ट्र प्रशासनाची भूमिका
 5. भारतातील माहिती अधिकारापुढील समस्या
 6. अवर्षण एक आपत्ती: कारणे, परिणाम आणि उपाय
 7. Disaster Management
 8. पर्यावरणीय जलप्रदुषण समस्या एक भौगोलीक अभ्यास
 9. अवर्षण एक नैसर्गिक आपत्ती
 10. आपत्ती व्यवस्थापन : एक प्रशासकीय आव्हान
 11. पर्यावरणीय आव्हानावर शाश्वत विकास हाच मार्ग
 12. लोकप्रशासनातील पारदर्शकता; माहितीचा अधिकार विशेष संदर्भ
 13. आपत्ती व्यवस्थापन आणि मानव संरक्षण : एक अभ्यास
 14. पर्यावरणीय आव्हान
 15. प्रशासकीय संस्कृती
 16. Concept of Ombudsman (Lokpal)
 17. Environment protection – A legal and judicial perspective
 18. Theory and Practice of Public Administration in Globalized Era
 19. Origin Of Public Private Partnership
 20. Concept of E-Governance
 21. जागतिक लोकसंख्येची वाढ आणि पर्यावण
 22. एनआरएचएम अंतर्गत जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रमांमध्ये टोल फ्री क्रमांक (Referral Transport) सेवेची भूमिका
 23. दुष्काळाची कारणे आणि उपाय
 24. लोकप्रशासनातील नवीन संकल्पना आणि सिध्दांत
 25. नोकरशाहीचे प्रकार (Types of Bureauceacy)
 26. माहिती तंत्रज्ञान आणि प्रशासकीय बदल
 27. भारतीय परिप्रेक्ष्यातून सु-शासन
 28. माहिती तंत्रज्ञानाचा लोकप्रशासनावरील परिणाम : ई-शासन
 29. सायबर सुरक्षितता
 30. लोप्रशासनातील नवप्रवाह आव्हाने आणि संधी
 31. भारतातील आपत्ती व्यवस्थापन प्रशासन
 32. खाजगीकरण व लोकप्रशासन
 33. सुशासनासाठी माहिती अधिकार
 34. पर्यावरणाचा सजीवांच्या आरोग्याशी संबंध एक विश्लेषण.
- | | |
|---------------------------------|-----|
| डॉ.सोमवंशी मुक्ता गोविंदराव | 10 |
| डॉ. प्रकाश रावसाहेब शिंदे | 12 |
| डॉ. दाणे बी.एल. | 13 |
| प्रा.आकोलकर आशा दगडू | 16 |
| डॉ. जयदेव मोहिते | 18 |
| प्रा. डॉ. जाधव अशोक काकासाहेब | 20 |
| अर्चना भगवानराव काळे | 25 |
| डॉ. बोबडे बी.बी. | 28 |
| डॉ. जयदीप रामकृष्ण सोळुंके | 33 |
| प्रा. डॉ.नंदकुमार एन कुंभारीकर | 35 |
| प्रा.डॉ.गंगणे जीवन सुदामराव | 37 |
| प्रा. डॉ. वैशाली शेषराव पेरके | 41 |
| प्रा. जी.एन.सोनवणे | 43 |
| प्रा.डॉ. चव्हाण बी.एम. | 46 |
| प्रा.डॉ. बी.आर. कतुरवार | 51 |
| Mr.Mahesh Jaiwantrao Patil | 55 |
| Smt. Pradhnya P. Sawarkar | 58 |
| Dr. M. C. Pawar | 62 |
| Dr.Bhagwansing M. Bainade | 66 |
| Dr.Meer Bashrat Ali | 69 |
| डॉ. विठ्ठल शंकरराव देशमुख | 70 |
| प्रा. संजय मारोतराव देवडे | 73 |
| प्रा.डॉ.एस.जी.गव्हाणे | 75 |
| प्रा.डॉ.भगवान श्रीपती सांगळे | 78 |
| प्रा. डॉ. उलगडे लक्ष्मण काशिनाथ | 81 |
| प्रा. डॉ. वसंत पांडूरंग सरवडे | 83 |
| प्रा. व्ही. ए. गायकवाड | 86 |
| प्रा. डॉ. संजय कांबळे | 88 |
| प्रा.डॉ. उर्मिला गोविंद रेड्डी | 92 |
| प्रा. डॉ. अमोल काळे | 94 |
| डॉ. गजानन चिट्टेवाड | 97 |
| डॉ. प्रतिभा श. उरुळे | 100 |
| प्रा.डॉ. कालिदास दिनकर फड | 102 |
| प्रा.प्रकाश झुळे | |



सुशासनासाठी माहिती अधिकार

प्रा.डॉ. कालिदास दिनकर फड

(लोकप्रशासन विभाग), राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड

प्रस्तावना :

लोकशाही शासनव्यवस्थेतील प्रत्येक प्रक्रियेत लोकांचा सहभाग हा महत्त्वाचा असतो. लोकसहभागशिवाय कोणतेही कार्य प्रभावीपणे पूर्ण होत नाही. गांधीजींच्या मते, "काही मोजक्या लोकांच्या हातात सत्ता देऊन स्वराज्य साकार होत नाही, जेव्हा सत्तेच्या दुरुपयोगाला विरोध करण्याचे सामर्थ्य जनतेत येईल तेव्हाच खरे स्वराज्य साकार होईल." म्हणजेच सत्तेत सर्वांचा सहभाग व सत्तेच्या दुरुपयोगाला जनता जेव्हा विरोध करील तेव्हाच स्वराज्य निर्माण होते. गेल्या सात दशकात देशाची प्रगती सर्वच क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणावर होत असली तरीही सामान्य जनतेच्या हातात पाहिजे तेवढे सामर्थ्य, सत्ता आलेली नाही. जोपर्यंत सरकारी तिजोरीचे नियोजन अमलबजावणी करण्यामध्ये होणाऱ्या खर्चावर देखरेख करण्यामध्ये, लोकांच्या सक्रीय सहभागशिवाय खऱ्या अर्थाने लोकशाही अस्तीत्वात येणार नाही. जनता सरकारी लालफितशाहीच्या भ्रष्टाचारी कारभारामुळे त्रस्त झाली होती. म्हणून सामान्य जनतेला शासकीय कारभाराची, हक्काची माहिती, आपल्या कामाची माहिती मिळविण्यासाठी माहितीचा अधिकार कायदा अस्तित्वात आलेला आहे. सक्षम लोकशाहीसाठी ही विधायक बाब आहे. माहिती अधिकारापूर्वी सामान्य जनतेला प्रशासनापुढे हुजरेगिरी करावी लागत होती. परंतु माहिती अधिकार कायद्यामुळे प्रशासनाला सामान्य जनतेची कामे वेळेवर करावी लागत आहेत. हे सर्व माहिती अधिकारामुळे होत आहे. एक प्रकारे सामान्य जनतेचे प्रशासनावर नियंत्रण प्रस्थापीत होत आहे. माहिती अधिकारामुळे प्रशासन जनताभिमुख, भ्रष्टाचारमुक्त, पारदर्शक होण्यास मदत होत आहे. माहिती अधिकार कायदा हा सुशासन निर्मितीसाठी महत्त्वपूर्ण आहे.

प्रशासन अधिकाधिक जनताभिमुख व्हावे, पारदर्शी व्हावे म्हणून माहितीचा अधिकार कायदा -2005 सम्मत करण्यात आलेला आहे. या कायद्याची प्रभावी अमलबजावणी करण्यासाठी केंद्रीय, राज्यस्तर, जिल्हा व प्रत्येक कार्यालयात माहिती अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करण्यात आलेली आहे. या कायद्यामुळे कोणत्याही सार्वजनिक प्राधिकरणाकडे असलेली किंवा त्यांच्या नियंत्रणात असलेली व कायद्यान्वये मिळविता येण्याजोगी माहिती प्राप्त करण्याचा अधिकार सामान्य जनतेला मिळालेला आहे.

दुसऱ्या महायुद्धानंतर (1945) युनो (UNO) ची स्थापना झाली. Everyone has the right to seek receive and impact information and ideas through any media हा युनोचा एक महत्त्वाचा एजेंडा होता त्यावर 1946 साली भारत सरकारची स्वाक्षरी झाली. याप्रमाणेच भारतीय राज्यघटनेच्या कलम (19) प्रमाणे प्रत्येक व्यक्तीला आपले मत विचार मांडण्याचे स्वातंत्र्य आहे, हा मुलभूत अधिकार भारतीय राज्यघटनेने दिलेला असला तरीही आपल्या देशात माहितीचा अधिकार कायदा अस्तीत्वात नव्हता. जगात सर्वप्रथम 1766 साली स्वीडनमध्ये माहिती अधिकार कायदा सम्मत करण्यात आला त्यानंतर फिनलँडमध्ये 1951 साली, अमेरिकेत 1966 साली, ऑस्ट्रेलिया, न्युझिलँडमध्ये 1982 साली, इंग्लंडमध्ये 2000 साली माहिती अधिकार कायदा अंमलात आला परंतु भारतात त्रिटोशानी सामान्य जनतेची लुट करण्याच्या उद्देशाने निर्माण केलेला कार्यालयीन गोपनीयतेचा कायदा - 1923 स्वातंत्र्यानंतरही अंमलात होता. या कायद्याला विरोध म्हणून राष्ट्रीय स्तरावर अरुणा रॉय यांनी तर राज्यात ज्येष्ठ समाजसेवक अण्णा हजारे यांनी आंदोलन केले व त्याचे फलित म्हणून महाराष्ट्र शासनाने कार्यालयीन गोपनीयतेच्या कायद्यात सुधारणा करून महाराष्ट्र शासनाने सन 2000 साली माहिती अधिकार कायदा सम्मत केला. त्याची 2002 पासून अंमलबजावणी सुरु झाली. या कायद्यात दुरुस्त्या करून केंद्र सरकारने माहिती अधिकार कायदा सम्मत केला. त्याची ऑक्टोबर 2005 पासून अमलबजावणी सुरु झाली. सध्या माहिती अधिकार कायदा - 2005 अस्तीत्वात असून त्याची अंमलबजावणी होत आहे. या कायद्यान्वये प्रत्येक व्यक्तीला माहिती प्राप्त करून घेण्याचा अधिकार मिळालेला आहे. सुशासन निर्मितीसाठी प्रशासकीय कारभारात पारदर्शकता आणून कार्यतत्परता, भ्रष्टाचाराला आळा घालण्याच्या दृष्टीने माहिती अधिकार कायदा लोकशाही शासन व्यवस्थेत महत्त्वपूर्ण आहे. मागेल त्याला मागेल ती माहिती ठराविक काळात देण्याचे या कायद्यानुसार प्रशासकीय अधिकार्यांवर, प्राधिकरणावर बंधनकारक आहे.

माहिती अधिकाराच्या माध्यमातून लोकशाही मूल्यांचे स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय या तत्वांचे पालन होते त्याचबरोबर प्रशासनाचे नीतिमूल्ये, नैतिकतेचे पालन होऊन लोकहित साधले जात आहे. माहिती अधिकारामुळे कार्यालयात केल्या जाणाऱ्या कामांचे सविस्तर माहिती, नोंदी ठेवल्या जातात. त्या ठेवणेही संबंधीतावर बंधनकारक आहे. कामाची माहिती दर्शनी ठिकाणी लावणे बंधनकारक आहे. माहिती अधिकारामुळे प्रशासकीय कामकाजात पारदर्शकता आलेली आहे. सर्व कामकाजाची माहिती, कामाची पद्धत, कामाची वेळ, कालावधी या सर्व बाबी सामान्यांना समजत आहेत. त्यामुळे प्रशासकीय कामकाजात लोकांचा सहभाग वाढत आहे. प्रशासकीय कामकाजाची माहिती खुली आहे. माहिती अधिकारामुळे प्रशासकीय कामकाजात कार्यक्षमता, तत्परता आलेली आहे. प्रशासकीय कामे वेळेत, वेळेच्या नव्यात प्रभावीपणे केली जात आहेत. कामाच्या वेळेवर नैतिक बंधन आहे त्यामुळे प्रशासकीय जबाबदारी येवून कामे वेळेवर होऊन कार्यक्षमता वाढत आहे. प्रशासकीय निर्णय प्रक्रियेत तत्परता, तार्किकता, प्रांसंगिकता वाढत आहे. माहिती अधिकार कायद्यामुळे सत्तेच्या दुरुपयोगाचा नियंत्रण येवून प्रशासकीय भ्रष्टाचार, अनियमितता, मनमानी वृत्तीवर नियंत्रण येत आहे. प्रशासनात संवेदनशीलता येऊन प्रशासन व जनता यांचे संबंध सलोख्याचे होऊन सुशासनाकडे वाटचाल होत आहे.



असे असले तरीही माहिती अधिकार कायद्याची अंमलबजावणी प्रशासकीय यंत्रणेस करावयाची आहे. प्रशासकीय यंत्रणा कार्यवाहीत भाषाशैलीचा आधार घेवून सामान्य जनतेला संदिग्ध उत्तरे देत आहे. माहिती अधिकारी माहिती देण्यास नकार तर देत नाहीत पण कार्यालयात सध्या खुप कामे आहेत तुम्ही नंतर या. अर्जदाराच्या परिचयाच्या ओळखीच्या व्यक्तीला बोलावणे, माहिती देण्याचे टाळणे, अधिकारी लिहित बसण्यापेक्षा अधिक सविस्तर माहिती झेरॉक्स करून देतो असे सांगून अर्जदारास वाटेला लावतात. अर्जदार अपीलात गेला तर संबंधीत कार्यालयाचा वरिष्ठ अधिकारीच अपीलीय अधिकारी असतो तो आपल्या खालच्याच अधिकार्याची पाठराखण करतो. संबंधीत अर्जदारास संबंधीत अधिकार्यास माहिती देण्यास सांगण्यात आले असल्याचे लेखी कळवून अपील निकाली काढण्यात आल्याचे सांगण्यात येते. संबंधीत अधिकार्याशी संपर्क साधा अशी उत्तरे देण्यात येतात. अधिकारी -कर्मचार्यात माहिती अधिकारासंबंधी नकारात्मक मानसिकता तयार झालेली आहे. माहिती अधिकाराचे काम म्हणजे ऋणे-दुणे काढणे असा गैरसमज पसरवण्यात आलेला आहे. काही व्यक्ती संस्था या अधिकाराचा गैरवापर करून अधिकारी - कर्मचार्यांना ब्लॅकमेल करत आहेत. काही लोकांचा हा धंदा होऊ पाहत आहे. या अधिकार, कायद्याची मोठ्या प्रमाणावर जनजागृती होणे आवश्यक आहे. सामान्य जनतेत याबाबत आजही अनभिज्ञता दिसते. कधी-कधी तर माहिती अधिकारी अर्जदारास काही अमिष दाखवून टाळता येते का, असा पहिला प्रयत्न अधिकारी, कर्मचारी वर्ग करतो तरीही अनेक समाजहिताची, राष्ट्रहिताची प्रकरणे, गैरव्यवहार या कायद्याने सामान्य जनतेसमोर आलेली आहेत.

सारांश :

माहितीचा अधिकार कायदा हे सामान्य जनतेला मिळालेले शस्त्र, हत्यार आहे. ते दुधारी आहे. त्या शस्त्राचा उपयोग कसा करायचा हे प्रत्येक नागरिकावर अवलंबून आहे. या शस्त्राचा उपयोग, वापर नागरिकांच्या मुलभूत हक्कासाठी, सुदृढ आणि निकोप लोकशाहीसाठी, अभिव्यक्ती स्वातंत्र्यासाठी, समाज व राष्ट्राच्या उज्वल भवितव्यासाठी व्हावा. या कायद्याबाबत अधिकारी-कर्मचार्यांनी विनाकारण भीती बाळगू नये, नकारात्मक मानसिकता ठेवू नये. अधिकारी -कर्मचारी-जनतेचे प्रबोधन व्हावे. कायद्याचे महत्व समजावून सांगितले, संबंधीतांचे प्रबोधन, योग्य प्रशिक्षण झाले तर या कायद्याची गोड फळे सामान्य जनतेला नक्कीच चाखायला मिळतील.

संदर्भ :

- 1) हजारें अण्णा - माहितीचा अधिकार -2005, भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन न्यास साहित्य प्रकाशन, राळेगणसिद्धी, जानेवारी 2006.
- 2) कटारिया सुरेंद्र - तुलनात्मक प्रशासनीक व्यवस्थाएँ, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपूर, 2004.
- 3) कटारिया सुरेंद्र - भारत में लोकप्रशासन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपूर, 2010.
- 4) हेळंबे एच.बी. - लोकप्रशासन नवीन विचारप्रवाह, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, 2011.
- 5) यशदा - माहिती अधिकार कायदा, 2008.
- 6) दिवाळी अंक - चाणक्य मंडळ प्रकाशन, पुणे, ऑक्टो./नोव्हेंबर 2006.
- 7) स्पर्धा परीक्षा अंक -स्टडी सर्कल प्रकाशन, पुणे, मार्च 2006.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAO
TQ. & DIST. AURANGABAD.

48



Handwritten signature or initials

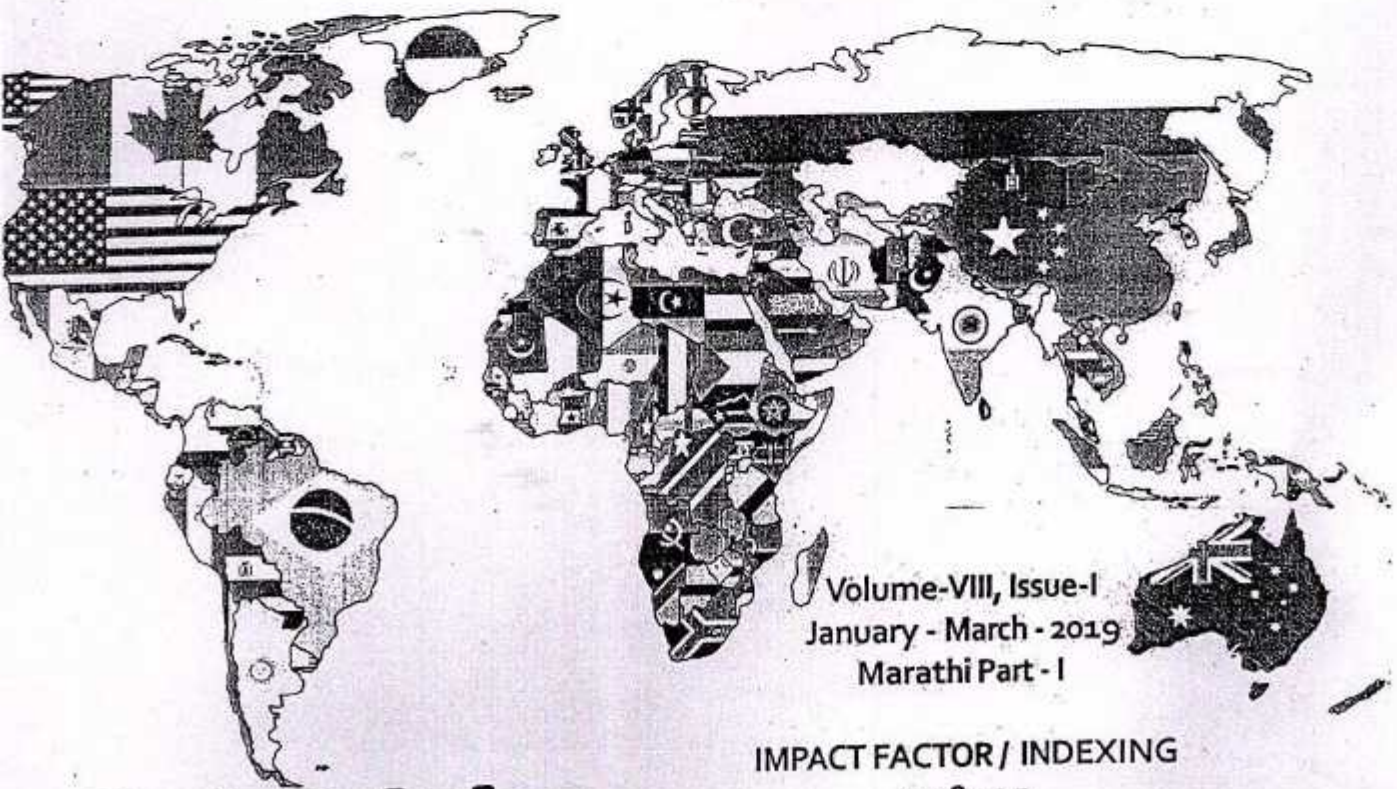
Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



SPECIAL ISSUE
"INDIAN FOREIGN POLICY AND PRESENT SCENARIO"



Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

48



VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
 AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI PART - I

क्र. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि दहशतवाद : एक अभ्यास डॉ. दिनकर संतुकराव कळंबे	१-५
२	भारतीय परराष्ट्र धोरणासमोरील आव्हाने प्रोफेसर विवेक नरेंद्र खटवटे	६-११
३	भारत व अमेरिका संबंध प्रा. संजय मोहाडे	१२-१५
४	भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि जागतिक समस्या प्रा. डॉ. सूर्यकांत माधवराव सांभाळकर	१६-१९
५	भारताचे प्राचीन काळातील व्यापारविषयक परराष्ट्र धोरण डॉ. सौ. सुनीता गोविंदराव पाटील, उर्फ सौ. सुनीता चक्रधर दळवी	२०-२४
६	भारताच्या परराष्ट्र धोरणाची प्रासंगिकता प्रा. डॉ. मारोती घंटेवाड	२५-३१
७	भारत - पाकिस्तान संबंध : एक अभ्यास विश्वास दामोदर तळेकर डॉ. डी. एस. कळंबे	३२-३६
८	भारत - प्रमुख महासत्ता डॉ. यासीन गुलाबभाई सव्यद प्रा. शांताराम गंगाधर मधे	३७-४१
९	शिवकालीन शेती व व्यापार धोरणाचा अभ्यास डॉ. ज्ञानेश्वर जिगे	४२-४५
१०	भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि पर्यावरण प्रदूषण प्रा. काकड वर्षा उदय	४६-५०
११	भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि आंतरराष्ट्रीय संघटना - सार्क पा. पुंडे शोनाली सयाजी	५१-५६
१२	भारताचे परराष्ट्र धोरण : जागतिक महिला चळवळ आणि बालगुन्हेगारी प्रा. मोरे सीमा लक्ष्मण	५७-६३



CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	भारताचे प्राचीन काळातील व्यापार विषयक परराष्ट्र धोरण प्रा. डॉ. आर. डी. बावणे	६४-६७
१४	भारत म्यानमार संबंध गौतम गोविंद गायकवाड	६८-७१
१५	पर्यावरण शिक्षण आणि संरक्षण : एक आव्हान प्रा. डॉ. बानायत गांधी	७२-७५
१६	भारतीय परराष्ट्र धोरणासमोरील आव्हाने मराठे पवन दिनेश	७६-७९
१७	भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि अलिप्ततावादी चळवळ डॉ. फोले एस. के.	८०-८५
१८	नवीन विश्वरचना आणि भारताचे परराष्ट्र धोरण डॉ. नंदकिशोर नानासाहेब उगले	८६-९१
१९	जागतिक पर्यावरण : समस्या आणि वाद प्रा. सुनिल लक्ष्मण नेवकर	९२-९९
२०	भारता समोरिल विदेशी गुंतवणूक असमानतेचे आव्हान लखन देविचंद सुर्यवंशी	१००-१०६
२१	भारताचे प्रमुख राष्ट्रांशी असलेले संबंध प्रा. आवारी रामचंद्र सुरेश	१०७-१०९
२२	भारतीय परराष्ट्र धोरणाची प्रासंगिकता जाधव श्रीराम दामला	११०-११२
२३	आंतरराष्ट्रीय राजकारणात संयुक्त राष्ट्र (UNO) संघटनेची भूमिका डॉ. साहेब राठोड	११३-११५
२४	भारताच्या परराष्ट्र धोरणात त्रिक्स बँकेची भूमिका प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड	११६-११८
२५	चिन्हे विस्तारवादी धोरण आणि भारताची भूमिका प्रा. डॉ. किशोर गटकळ	११९-१२१

अ.क्र.
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३



२४. भारताच्या परराष्ट्र धोरणात ब्रिक्स बँकेची भूमिका

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड

लोकप्रशासन विभागप्रमुख, राजीव गांधी महाविद्यालय, कर्माड, ता. जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना

भारताच्या परराष्ट्र धोरणामध्ये आंतरराष्ट्रीय संघटनांना फार महत्वाचे स्थान आहे. आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील वेगवेगळ्या राष्ट्रातील शासकीय यंत्रणांनी आणि खाजगी व्यक्तींनी एकत्र येऊन काही उद्दिष्ट्ये साध्य करण्यासाठी केलेली स्थायी स्वरूपाची यंत्रणा जागतिक पातळीवर परस्परांचे हितसंबंध असणाऱ्या राष्ट्रांनी समान बंधने घालून घेणे स्वहिताच्या दृष्टीने व राष्ट्रातील जनतेच्या लाभासाठी फारच महत्त्वपूर्ण असते. या आवश्यकतेतूनच आंतरराष्ट्रीय स्वरूपाच्या संघटना उदयास येत असतात. अशा काही संघटनांची व्याप्ती जागतिक स्वरूपाची असते. आजच्या आधुनिक युगात आंतरराष्ट्रीय संघटनांची कागगिरी फार मोलाची मानली जात आहे. परस्पर सहकार्यावर या संघटना विशेष भर देत आहेत. यामुळे सर्वांगीन विकासाचे आणि संरक्षणाचे उद्दिष्ट साध्य होतांना दिसून येत आहे. आज आंतरराष्ट्रीय स्तरावर अनेक जागतिक संघटना आहेत. त्यात ब्रिक्स बँक ही एक सुद्धा पाच देशांची एक संघटना आहे. जागतिक अर्थकारणात व राजकारणात या संघटनेची भूमिका फार महत्त्वपूर्ण आहे असे आपणास म्हणता येईल.

अर्थ

आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील विविध देशांनी परस्परांशी संबंध प्रस्थापित करण्यासाठी व ते अद्विष्ट चालू ठेवण्यासाठीच्या विविध संघटना स्थापन केल्या त्यांना आंतरराष्ट्रीय संघटन असे म्हणतात.

"विशिष्ट क्षेत्रात कार्यरत असणाऱ्या सार्वभौम राष्ट्रांमध्ये समान उद्दिष्ट्यांसाठी ती उद्दिष्ट्ये संबंधित क्षेत्राच्या संदर्भात आक्रमक स्वरूपाची नाही तर ऐच्छिक स्वरूपात संघटना स्थापन करण्याचा करार केला जातो त्यास संघटना असे म्हणतात.

संशोधनाचा उद्देश

१. ब्रिक्सच्या स्वरूपाचा अभ्यास करणे.
२. ब्रिक्स बँकेच्या उद्देशाचा अभ्यास करणे.
३. ब्रिक्स बँकेच्या कार्याचा आढावा घेणे.

ब्रिक्स बँकेची भूमिका व कार्ये

(BRICS- Brazil, Russia, India, China and South Afrika)

ब्राझील, रशिया, भारत, चीन आणि दक्षिण आफ्रिका या पाच देशांची ब्रिक्स ही संघटना किंवा मंडळ आहे. जगातील या पाच उद्योगमुख अर्थव्यवस्थांचे हे मंडळ आहे. २०१० पर्यंत दक्षिण आफ्रिकेचा समावेश होण्याअगोदर ही संघटना BRIC म्हणून ओळखली जात होती. G-२० संघटनेचे हे पाचही देश सभासद असून या सर्व देशांची जागतिक अर्थकारणात व राजकारणात



महत्वाची भूमिका आहे. कारण हे पाचही देश विकसनशील आणि औद्योगिक रण होत असलेले जगातील सर्वात
करणारे देश आहेत.

२०१० पासून हे पाचही देश दरवर्षी वार्षिक भेट घडवून आणतात. जुलै २०१५ मध्ये या संघटनेची सभा रशियामध्ये पार
पडली. २०१४ चा विचार केला तर या पाचही देशांची लोकसंख्या जवळजवळ ३०० कोटी होती. ही लोकसंख्या जगाच्या ४०
टक्के इतकी आहे. जगातील सर्वात जास्त लोकसंख्या असलेल्या पहिल्या २५ देशांमध्ये या पाचही देशांचा समावेश होतो. या पाच
देशांचे राष्ट्रीय उत्पन्न १६०० कोटी अमेरिकन डॉलर आहे. हे जगाच्या राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या २० टक्के आहे.

ही संघटना सुरु करण्याची मुळ कल्पना २००१ मध्ये अस्तित्वात आली. सप्टेंबर २००६ मध्ये या संघटनेची सभा झाली
व तिचा मसुदा तयार करण्यात आला. परंतु खऱ्या अर्थाने ब्रिक्स १६ जून २००९ रोजी रशियातील येकाटेरीनबर्ग या ठिकाणी
अस्तित्वात आली. येकाटेरीनबर्ग येथे झालेल्या पहिल्या सभेमध्ये प्रामुख्याने 'जागतिक राखीव चलन' निर्माण करण्याचा विचार
मांडण्यात आला. यामध्ये जागतिक चलन म्हणून मान्यता असलेल्या अमेरिकन डॉलरला शह देण्याची संकल्पना यामध्ये अंतर्भूत
होती.

२०११ मध्ये व्यावसायिक राजकीय, सांस्कृतिक सहकार्य या संघटनेत निर्माण व्हावे यासाठी प्रयत्न करण्याचे ठरविण्यात
आले. २०१५ मध्ये ब्रिक्स विकास बँक स्थापन करण्याचे ठरविण्यात आले. त्यासाठी भारताला या बँकेचे यजमानपद देण्यात
आले म्हणून ब्रिक्स संघटनेत भारताची भूमिका अत्यंत महत्वाची राहणार आहे. या नविन ब्रिक्स विकास बँकेचे सुरुवातीचे
भांडवल १०० अब्ज इतके आहे.

ब्रिक्स बँकेची उद्दिष्टे

ब्रिक्स देशात सहकार्य निर्माण होण्यास २००८ मधील वित्तीय संकट कारणीभूत आहे. ब्रिक्स (BRIC) ही संज्ञा २००१
मध्ये Building Better Global Economics Brics च्या प्रकाशनात जीम ओ निलर यांनी मांडली आहे. सुरुवातीस या
बँकेचे भांडवल ५० अब्ज अमेरिकन डॉलर्स असेल व ते बँकेच्या पाच सभासदांनी १० अब्ज याप्रमाणे पुरविलेले असेल.
नंतरच्या काळात भाग भांडवल १०० अब्ज डॉलर्स पर्यंत वाढविण्यात येईल. ब्रिक्स बँकेच्या स्थापनेच्या वेळीच राखीव
आकस्मिक निधीसाठी १०० अब्ज डॉलर्सची तरतूद करण्यात आली असून त्यापैकी सर्वाधिक ४१ अब्ज डॉलर्सचे योगदान चीनने
दिले आहे. ब्राझील भारत आणि रशिया या सभासद देशांचे प्रत्येकी १८ अब्ज डॉलर्स व दक्षिण आफ्रिकेचे योगदान ५ अब्ज
डॉलर्सचे राहिल. भविष्यात नवीन देश ब्रिक्सचे सभासद झाले तरी संस्थापक सभासद देशाचा हिस्सा ५५ टक्के पेक्षा कमी होणार
नाही याची दक्षता घेण्यात आली आहे.

ब्रिक्सची उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. सदस्य राष्ट्रात आयात निर्यात व्यापार वाढविणे.
२. सदस्य देशांच्या पायाभूत क्षेत्रातील (उदा. रस्ते बांधणी, उर्जा) प्रकल्पाच्या उभारणीस मदत करणे.
३. परकीय चलनाचा साठा वाढविणे.
४. आर्थिक संकटातून बाहेर पडण्यास सभासद राष्ट्रांना मदत करणे.
५. सभासद देशात तंत्रज्ञान विषयक माहितीच्या देवाण घेवाणीस प्रोत्साहन देणे.



६. व्यापारविषयक वाटाघाटीत विकसनशील देशांना लाभ मिळवून देण्याच्या बाबतीत महत्वाची भूमिका बजावणे.

ब्रिक्स बँकेची कार्ये

१. जागतिक महासत्तावर वित्तीय सहकार्यासाठी अवलंबून राहण्याऐवजी त्याला पर्यायी जागतिक वित्तीय व्यवस्था किंवा प्रणाली निर्माण करणे.
२. जागतिक स्तरावर कार्यशील नेतृत्व निर्माण करून विकसनशील देशातील समस्या सोडविण्यासाठी पर्यायी यंत्रणा निर्माण करणे.
३. आंतरराष्ट्रीय स्तरावर अमेरिकन डॉलरवर अवलंबून असल्यामुळे निर्माण झालेला धोका व अनिश्चितता कमी करणे त्यासाठी स्वतंत्र बँक स्थापन करणे व निधी उभारणे.
४. जागतिक स्तरावर निर्णय घेण्यासाठी विकसित देशांवर असलेले अवलंबित्व कमी करणे. त्यासाठी सहकार्य संघटना उभी करणे.
५. आर्थिक, राजकीय, सामाजिक परिस्थिती व समस्या सारख्या असल्याने या देशांमध्ये सहकार्य निर्माण करणे व जागतिकस्तरावर सहकार्य संघटना निर्माण करणे.
६. नैसर्गिक तेल, कच्चा माल, यावर खर्च होणाऱ्या परकीय चलनासाठी पर्याय निर्माण करून स्वावलंबित्व मिळविणे.
७. व्यापार व्यवसाय, वित्त यासाठी वेगळी संघव्यवस्था निर्माण करणे, त्यामुळे या विकसनशील देशांच्या विकासासाठी मदत होईल.
८. जगातील इतर संघटनांमध्ये असलेल्या त्रुटी दूर करून दीर्घकालीन सहकार्य कायम राहिल असा विश्वास निर्माण करणे.
९. कमी उत्पन्न गटातील देशांसाठी बहुपक्षीय व्यापार संधी निर्माण करणे.
१०. या देशांच्या स्वावलंबनाच्या आड येणारे आंतरराष्ट्रीय कायदे व नियम यांना विरोध करण्यासाठी पर्यायी यंत्रणा उभी करण्याचा हेतू यामागे आहे.

वरीलप्रमाणे ब्रिक्सची कार्ये असली तरी भविष्यकाळातील आर्थिक, राजकीय व सामाजिक परिस्थिती या संघटनेचे यश ठरवतील. म्हणून ब्रिक्स बँक या संघटनेचे महत्व आधुनिक काळात वाढल्याचे दिसून येते.

संदर्भ

१. Ruddar Datt and K.P.M. Sundaram-Indian Economy, S Chand and Co. New Delhi.
२. Misra S.K., Puri V.K.- Indian Economy, Himalaya Publishing House, Delhi.
३. Hand Book of Statistics on Indian Economy, 2004-05, 2007-08
४. World Bank Report, 2009-10, 2014-15
५. पंडित नलावडे, आंतरराष्ट्रीय संबंध, प्रकाशक, श्री.के.एस.अतकरे, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद, २०१४
६. डगे एस.के., भारतीय आणि जागतिक आर्थिक विकास, प्रकाशक के.एस.पब्लिकेशन, नारायण पेठ, पुणे, जून-२०१५

२०१५


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



VOL. 6 | SPECIAL ISSUE 6 | MARCH 2019

UGC APPROVED JOURNAL NO. 41129 [P-ISSN: 2394-7632] [E-ISSN: 2394-7640]

SCHOLARS IMPACT

International Multidisciplinary Multilingual
Journal of Contemporary Research

AN INTERNATIONALLY INDEXED, PEER REVIEWED, QUARTERLY, PRINT & ONLINE JOURNAL

SPECIAL ISSUE

ON

MAHATMA GANDHI IN THE CHANGING TIMES

(BOOK 2)

Editor-in - Chief
Dr. M. Raghiv Deshmukh

Issue Editors
Dr. Ramkishan Bhise
Dr. Digambar Rode
Mr. Hanuman Wankar

Managing Editor
Dr. M. Aaqib Deshmukh

Published By:
DESHMUKH PUBLICATIONS, PVT. LTD.
"Soyba Villa" Beside "Deshmukh Hospital" Millat Colony, At. Khamgaon Dist. Buldana
(Maharashtra) India -444303 Cell No- +91-9422926544
Email:- scholarsimpact@yahoo.com, Web: www.scholarsimpact.com
Printed at Snehal Printers and Book Binders, Parbhani -431401 Mob. +91 8329000732 nmpublication@gmail.com



Contents

1. महात्मा गांधी यांचा मूल्यनिष्ठ जनसंवाद	डॉ. राजेंद्र गोणारकर	8
2. महात्मा गांधी आणि भारताचा ग्रामीण विकास : एक अभ्यास	आचार्य व्हि.डी.	11
3. महात्मा गांधी आणि सामाजिक, आर्थिक व राजकीय विचार	डॉ. गणेश मोहिते	13
4. महात्मा गांधी यांचे शैक्षणिक विचार	डॉ. एस. एन. आकुलवार	15
5. सध्यकालीन प्रश्नांना गांधोवादी विचारांचा पर्याय	डॉ. माधव चोले	18
6. खादी ग्रामोद्योग - एक विचार	भाग्यश्री दाणे	20
7. महात्मा गांधी आणि भारताचे विभाजन यावर वादविवाद	धप्पाधुळे रामेश्वर शं.	22
8. महात्मा गांधीच्या धार्मिक आणि राजकीय विचारांचे संक्षिप्त अवलोकन	डॉ. ढोले चंद्रशेखर शं.	24
9. महात्मा गांधी यांच्या विचारांचा मराठी साहित्यावर प्रभाव	डॉ. डिगोळे बालाजी वि.	28
10. भारतीय खेडी या संदर्भात महात्मा गांधीचा वैचारिक दृष्टीकोन	डॉ. भगवान डोंगरे	31
11. गांधी प्रणित शिक्षण प्रणाली : एक दृष्टिक्षेप	कु. फुलारी ज्योती महिंशंकर	33
12. ग्रामीण विकासातील महात्मा गांधीचे योगदान	गाडवे मनिषा महारूद्र	35
13. महात्मा गांधी यांचे भारतीय लोकशाहीतील योगदान	डॉ. एल. डी. गलंडे	37
14. महात्मा गांधीजींचे ग्रामीण विकासातील महत्त्वपूर्ण योगदान	डॉ. यादव घोडके	40
15. महात्मा गांधीजींचे सत्याग्रह विषयक विचार	लक्ष्मण मा. घोटेकर	42
16. पांडरे ढग आणि उल्का या कादंबऱ्यावर गांधीवादाचा प्रभाव	डॉ. आशा सोपानराव गिरी	44
17. महात्मा गांधीजींची साध्य साधन सुचिता	डॉ. सखाराम य. गेरे	46
18. महात्मा गांधी: सत्याग्रह एक प्रभावी साधन प्रा. विक्रम ल. खेडकर	डॉ. अनिल पां. हजारे	49
19. ग्रामीण विकासाचे शिल्पकार महात्मा गांधी	डॉ. इरलापल्ले पल्लवी भा.	51
20. ग्रामीण विकासाबाबत महात्मा गांधींचा दृष्टीकोन	सौ. प्रियंका वि. जाधव (आवते)	53
21. गांधीवादातील निवडक पेलूचे अध्ययन	सुरेश लोभाजी जाधव	56
22. जागतिकीकरण, महात्मा गांधी आणि काही प्रश्न	डॉ. मारोती तेंगमपुरे	59
23. महात्मा गांधींचे भाषाविषयक कार्य	डॉ. पुरुषोत्तम शेषराव जुत्रे	61
24. राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजींचे भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील योगदान	डॉ. संतोष तुकाराम कदम	65
25. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था आणि महात्मा गांधी यांचे विचार	रमेश तारकराम खंडागळे	68
26. इंग्रज आणि भारतीय भाशेतील साहित्यावर महात्मा गांधीजींचा प्रभाव	प्रा. कोटरंगे दत्ता नामदेव	70
27. ग्रामीण विकासासाठी महात्मा गांधीजींचा -दृष्टीकोन	डॉ. लोंखडे बी. बी.	72
28. मराठी कवितेवर गांधीवादाचा प्रभाव	डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे	74
29. गांधीजींचे उद्योग आणि व्यापार विषयक विचार	डॉ. माळी चंद्रकांत बन्सी	77
30. महिला सक्षमीकरणातील गांधीजींची भूमिका	डॉ. पी. व्ही. माने	79
31. महात्मा गांधीजींचे महिला सशक्तीकरण बदलचे विचार	डॉ. चांगदेव निवृत्ती मुंडे	



32. महात्मा गांधी यांनी मांडलेला महीलोननतीचा विचार	अनुप अरुण नांदगावकर	
33. म. गांधीजीचे लोकशाहीभिमुख ग्रामस्वराज्य	डॉ. बी.ए. निर्मख	85
34. महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार व आजचा ग्रामीण भारत	पाटील सुभाष लक्ष्मण	87
35. महात्मा गांधी व सत्याग्रह सिध्दांत	डॉ. पाटील विनायक उध्दवराव	90
36. लोकशाही आणि सु-शासन	डॉ.मीरा विठ्ठलराव फड	93
37. गांधीजींच्या शैक्षणिक प्रयोगाची विशेषतः एक दृष्टिक्षेप	डॉ. कालिदास दिनकर फड	
	डॉ. सतोष काकडे	96
38. महात्मा गांधीच्या विचारातील खेडे : एक अभ्यास	डॉ. टि. डी. राजगुरे	98
39. महात्मा गांधीजींचे स्त्रीमुक्ती विषयक विचार	रकटे ज्योती भाऊसाहेब	101
40. महात्मा गांधीचे आर्थिक विचार	डॉ. सुरेश सामाले	103
41. महात्मा गांधीजींचा ग्रामीण विकासाचा दृष्टिकोन	डॉ. भगवान सांगळे	106
42. म. गांधी आणि भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम : एक अध्ययन	डॉ. शिंदे आर.डी.	110
43. महात्मा गांधी यांचे सर्वोदय, खादी ग्रामोद्योग व स्वदेशी संबंधी विचार	डॉ. टि.जी. सिराळ	114
44. राष्ट्रसंत तुकडोजींच्या साहित्यातील 'गांधीविचार'	डॉ. अनंत सूर्यभान सूर्यकार	117
45. महात्मा गांधी यांच्या विचारांचे ग्रामीण विकासातील योगदान	तोंडारे विजय नागनाथ	121
46. महात्मा गांधीचे स्त्री विषयक विचार	डॉ.अलका प्रदीप वालचाळे (सरोदे)	123
47. गांधीजींच्या ग्रामीण विकासाचे विचार वर्तमान परिस्थितीत उपयोगी	ए. एम. वानखडे	125
48. महात्मा गांधींचा 'स्त्री' विषयक दृष्टिकोन : चिकित्सक विश्लेषण	शितल रुद्रमुनी येरुळे	127
49. म.गांधीजींचा ग्रामीण विकासाचा दृष्टीकोन	डॉ.आहिरे भास्कर मुरलीधर	130
50. महात्मा गांधींचा ग्रामीण विकासाबद्दलचा दृष्टीकोण	डॉ. चव्हाण बी.एम.	132
51. महात्मा गांधी आणि ग्रामीण विकास	अर्चना कुंडलिकराव चवरे	134
52. गांधीजींच्या विचारांची उपयुक्तता	डॉ. आर.के. काळे	136
53. आजचे भारतीय राजकारण व गांधी विचारांची प्रासंगिकता	डॉ. राठोड डी.बी.	138
54. महात्मा गांधी यांचे शिक्षण विषयक विचार	कल्याण दत्तात्रय यादव	140
55. उपोषण अस्त्र : गांधींना आहार व आरोग्य व्यवस्थापनाचा आधार	उमेश रामचंद्र साडेगावकर	142

गांधीजींच्या शैक्षणिक प्रयोगाची विशेषतः एक दृष्टिक्षेप

प्रा.डॉ. कालिदास दिनकर फड
लोकप्रशासन विभागप्रमुख
राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड
ता. जि. औरंगाबाद
मो.नं. ७३८७९९८३८८

प्रा.डॉ. सतोष काकडे
लोकप्रशासन विभाग प्रमुख,
लोकसेवा महाविद्यालय, गारखेडा
परिसर, औरंगाबाद
मो. ९४०४९८२३६३



महात्मा गांधीजींचे शिक्षणविषयक विचार सर्व स्तरांना स्पर्शून जातात. त्यातूनच त्यांची शैक्षणिक साकल्यदृष्टी स्पष्ट होते. आदर्शवाद, स्वभाववाद व कार्यवाद यांचा सुंदर समन्वय त्यांनी आपल्या शैक्षणिक विचारात साधलेला आहे. गांधीजींनी केलेले विविध शैक्षणिक प्रयोग, त्यांनी विविध शैक्षणिक संस्था, उपक्रमांना केलेले मार्गदर्शन त्यांचे मार्गदर्शनपर विचार, त्यांनी विविध माध्यमाद्वारे व्यक्त केलेले शैक्षणिक विचार व स्वतः लोकशिक्षक म्हणून समाजाला केलेले मार्गदर्शन या विचारावर त्यांचे शैक्षणिक विचार आधारलेले आहेत. गांधीजींचे चिंतन, मनन, प्रार्थना, मौन यातून झालेला आत्मसाक्षात्कार या आत्मसाक्षात्काराद्वारे त्यांनी विविध शैक्षणिक प्रयोग राबविले होते.

गांधीजींनी सत्य आणि अहिंसा या परमतत्वाचे शिक्षणक्षेत्रात उपयोजन केल्यामुळे त्यांनी स्वतःची अशी खास शिक्षणपद्धती सापडते. गांधीजींनी सुरुवातीला आपले शैक्षणिक प्रयोग दक्षिण आफ्रिकेत फिनीक्स व टॉलस्टॉय फार्म येथे केले. भारतात आल्यानंतर कोसबाड, साबरमती, सेवाग्राम या ठिकाणी विविध शैक्षणिक प्रयोग केले ही गांधीजींची शैक्षणिक प्रयोगभूमी होय.

शिक्षण म्हणजे उत्कृष्टाकडे वाटचाल. सुप्त असलेल्या उत्कृष्ट गुणांचा अविष्कार होऊन मनुष्य आणि बालक यांचे शरीर, मन व आत्मा यांच्यामध्ये सुप्त असलेल्या उत्तमत्वाचे प्रगटीकरण सर्वांगीन रीतीने होणे म्हणजे शिक्षण ही गांधीजींनी शिक्षणासंबंधीची विचारधारा होती. प्रत्येक व्यक्तीत काही ना काही सुप्तगुण असतात. शिक्षणाच्या माध्यमातून त्या सुप्त गुणांचा शोध घेवून त्याचे उत्तम पद्धतीने प्रगटीकरण, विकास करणे म्हणजे शिक्षण. प्रत्येक गोष्ट, कृती सर्वोत्कृष्ट पद्धतीने करण्याची उर्मा शिक्षण देते. शारीरिक, मानसिक, आत्मिक या तीन्ही गुणांचा उत्तमोत्तम, सर्वोत्कृष्ट अविष्कार घडविण्यात शिक्षण सहाय्य करते. या तिन्ही अंगांचा विकास शिक्षण घडवून आणते. उत्तमत्वाचा अविष्कार म्हणजे स्वतःतील दैवी गुणांचे प्रगटीकरण, देवत्वाची अनुभूती, आत्मदर्शन हेच शिक्षणाचे अंतीम ध्येय असावे. गांधीजी आपल्या शिक्षणपद्धतीस व्यवसाय केंद्रित न म्हणता जीवनकेंद्रित म्हणत. जीवनासाठी जीवनभर चालणारे शिक्षण असे तिचे स्वरूप होते.

जीवनाच्या गरजानुसार उद्योगाची निवड करावी. मात्र त्यातील शैक्षणिक शक्यता सर्वतोपरीने उद्योगात आणण्यात ही गांधीजींची दृष्टी होती. श्रमाला जीवनमुल्य व शिक्षणमुल्य प्राप्त झाले पाहिजे. श्रमनिष्ठ व स्वावलंबी जीवनाच्या निर्मितीत एक आवश्यक घटक म्हणून उद्योगशिक्षण अवलंबिले गेले पाहिजे. सामान्य शिक्षणाचे माध्यम

म्हणून उद्योगशिक्षण केंद्रस्थानी आले पाहिजे. हा गांधीजींचा उद्योगशिक्षणाबाबतचा महत्वपूर्ण विचार होता.

जीवनमुल्यांचा संस्कार हा शिक्षणाचा गाभा गांधीजींनी मानला. आत्मसन्मान, स्वातंत्र्य, सेवाभाव, साधेपणा, स्वावलंबन, स्वयंशुद्धी, संयम, सहकार्य यासारखी मूल्ये शिक्षणातून, शैक्षणिक कार्यातून मनावर बिंबवली गेली पाहिजेत. त्या मुल्यानुसार आचरण हा आत्मिक शिक्षणाचा एक भाग बनला पाहिजे. सद्गुणांची घडण हा आचरणाच्या ऐरणीवरच होते. चारित्र्य शिक्षण हे सामान्य शिक्षणाचे एक अंग बनले पाहिजे. चारित्र्याची जडणघडण व आदर्श नागरिकांसाठी आवश्यक ती मूल्ये शिक्षणाच्या माध्यमातून संबंधीतांच्या मनाघर बिंबवली पाहिजेत व ती प्रत्यक्षात आचरणात आणावीत.

आदर्श शिक्षकाशिवाय आदर्श शिक्षण साकारू शकत नाही. आदर्श शिक्षकाची आवश्यकता गांधीजींना आरंभीपासूनच जाणवलेली होती. बौद्धिक शिक्षणाच्या दृष्टीने शिक्षकच लहान मुलांचे पाठ्यपुस्तक आहे. नैतिक शिक्षणाच्या दृष्टीने शिक्षकाचे जीवनच विद्यार्थ्यांसाठी जीवत वस्तुपाठ आहे. जे कार्य करण्यात शिक्षक कमीपणा मानतो. ते कार्य विद्यार्थ्यांनीही करू नये. शिक्षकांच्या कृती, कार्यांचा आदर्श विद्यार्थी घेतात. त्यामुळे शिक्षकांनी आपले विचार, कृती आदर्श ठेवून आदर्श चारित्र्य विद्यार्थ्यांसमोर ठेवले पाहिजेत. विद्यार्थ्यांच्या नैतिक न्हासाचे मुळ शिक्षकाच्या आत्मिक दुर्बलतेत आहे. म्हणून गांधीजींनी आपल्या शैक्षणिक प्रयोग, विचारात छडीला हद्दपार केले होते.

गांधीजींनी औपचारिक शिक्षणापेक्षा अनौपचारिक अनुभवाधिष्ठीत शिक्षणावर भर दिला. तोंडी काम, संवाद, संभाषण, चर्चा, शंकासमाधान यांना लेखन वाचनापेक्षा अधिक प्राधान्य दिले. गांधीजींची शिक्षण प्रणाली, शैक्षणिक विचार, प्रयोग हे ध्येयाच्या दृष्टीने आदर्शवादी तर वातावरणाच्या दृष्टीने स्वभाववादी आहेत. स्वाभाविकतेकडे त्यांचा कल असल्यामुळे त्यांनी कौटुंबिक वातावरणाच्या कुटुंबरूपी शाळेला अधिक महत्व दिले. आदर्श कुटुंबांची जागा कोणतीही आदर्श शाळा घेऊ शकत नाही. यावर गांधीजींचा दृढ विश्वास होता व खरे शिक्षण आदर्श वातावरणात पालकच देऊ शकतात. म्हणून त्यांनी कुटुंब, कुटुंबातील वातावरण शिक्षणासाठी महत्वाचे मानले होते.

शिक्षणाला स्वाभाविक प्रक्रियेचे स्वरूप द्यायचे असेल तर मातृभाषेइतके स्वाभाविक माध्यम दुसरे नाही. म्हणून शिक्षण हे मातृभाषेतून दिले पाहिजे असा गांधीजींचा आग्रह होता. मातृभाषेतून दिल्या जाणाऱ्या शिक्षणाला तोड नाही. इंग्रजी भाषा जाणणे म्हणजेच



सर्व शिक्षण असा चुकीचा अर्थ शिक्षणाबाबतीत होऊन बसलेला आहे. गांधीजींच्या मते, ही गुलामगिरीची व अधःपतनाची स्पष्ट निशाणी आहे. शिक्षणाचे माध्यम इंग्रजी असल्यामुळे विद्यार्थ्यांच्या बुद्धीवर दुहेरी ताण पडत आहे. त्यांची कल्पनाशक्ती व सर्जनशिलता नष्ट होत आहे. आपण युरोपीयन संस्कृतीचे टीपकागद बनत आहोत अशा प्रकारची कृती चुकीची असून मानसशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय व तत्वज्ञानात्मकदृष्ट्या मातृभाषेसारखे स्वाभाविक दुसरे माध्यम नाही. ही एक गांधीजींच्या शैक्षणिक प्रयोगाची प्रमुख विशेषतः आहे.

शारीरिक श्रम हे शिक्षणाचे अविभाज्य अंग व्हावे व त्याचा सर्व स्तरावर अंतर्भाव व्हावा. प्रत्येक कृतीचे का ? व कसे ? या प्रश्नांची उत्तरे विद्यार्थ्यांना शोधावीत ती शोधण्याची ताकद शिक्षणातून मिळावी. शिक्षणातून जिज्ञासूवृत्ती, शोधवृत्ती, ज्ञानपिपासूवृत्ती निर्माण व्हावी. जीवनशिक्षण ही विचारधारा गांधीजींच्या शैक्षणिक प्रयोगातून सिद्ध झालेली आहे. जीवनासाठी जीवनद्वारा, जीवनभर शिक्षण असे तिचे सर्वस्पर्शी स्वरूप होते. जीवन हाच अभ्यासक्रम या शैक्षणिक पद्धतीचा होता. मुलौद्योगी शिक्षण हे जीवनासाठी शिक्षण होऊन त्याची व्याप्ती वाढविली पाहिजे. प्रत्येकाला जीवनाच्या प्रत्येक स्तरावर मिळणारे असे ते जीवनव्यापी शिक्षण, स्वावलंबी शिक्षण होणे गांधीजींना अपेक्षित होते.

सारांश : गांधीजींनी आपल्या शैक्षणिक प्रयोगात सैद्धांतिक शिक्षणापेक्षा प्रात्यक्षिक शिक्षणावर अधिक भर दिलेला आहे. अनौपचारिक प्रत्यक्ष अनुभवाधिष्ठीत शिक्षणाला त्यांनी अधिक महत्त्व दिलेले होते. जीवनशिक्षण जीवनभर शिक्षण मुल्याधिष्ठित, श्रमाधिष्ठित शिक्षण, समस्या सोडवणूक करणारे, जिज्ञासूवृत्ती जोपासणारे शिक्षण त्यांना अपेक्षित होते. त्या अपेक्षांची कितपत पूर्ती होत आहे हा एक सतत चिंतनाचा विषय ठरत आहे असे असले तरीही त्यांच्या शैक्षणिक प्रयोगांच्या सध्याच्या शैक्षणिक पद्धतीत अवलंब केला गेला तर चित्र निश्चित आशादायी, उपयुक्त असेल.

संदर्भ :

1. Gandhi M.K., My Experiment with Truth, १९५८
2. Prabhu R.K. & Rao W.R., The Mind of Mahatma Gandhi, Oxford University Press, १९४५
3. Tedulkar & Dhavle K.B., Gandhiji his life & work, Bombay, १९४५
4. भारदे बाळासाहेब, गांधी विचार दर्शन, खंड-३, जीवनसाधना, महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी प्रकाशन, पुणे, १९९४
5. वाशीकर प्रा.शं, चार शिक्षणतज्ञ, नूतन प्रकाशन, पुणे, १९८०

□□□


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.



A.B.M.S.Parishad's
 Shri Shahu Mandir Mahavidyalaya, Parvati Pune 411009
 (Maharashtra, India).
 (NAAC Re-accredited 'A' Grade) (CGPA - 3.10)



An International Refereed Registered Research Journal

Impact Factor :
 (2018) - 4.67 : SJIF

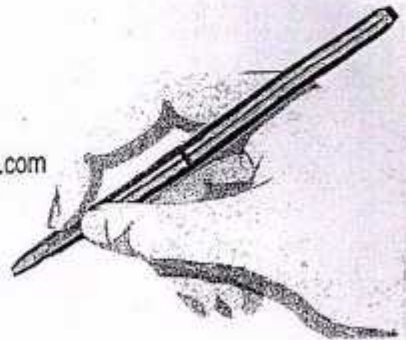
ISSN - 2320 - 5881
 (Print)

Volume - IX
 September, 2018

Rajjarshi

Chief Editor : Prin. Dr. Shobha Ingawale
 Email : principal_ssmmpune@yahoo.com

Executive Editor : Prof. Dr. D. S. Borkar
 Email : borkards.72@rediffmail.com



Email : rajjarshrijournal@shahucollegepune.org | Website : www.shahucollegepune.org



INDEX

No. Title Of The Paper	Name Of The Author	Page No.
1. An Analytical Study Of Time Management By Today's Youth	Ms. Ayushi Shrivastava Ms. Kalyani Naidu	1-6
2. Comparative Economic Development In Maharashtra State	Dr. Ramesh S. Desai	7-12
3. Ethical Principle And Organizational Development	Ms. Rajkumari Tamphasana Devi Dr. Shahaji Mishal	13-20
4. Walt Whitman's "Song Of Myself" : A Poem Of Democracy	Ms. Farhana Khan, Mr. Rajan Shinde Ms. Shaik Kalimoddin	21-23
5. Delphi Method	Mr. Prakash B. Jadhav Mr. Santosh P. Khajindar	24-31
6. Pune : An Emerging IT Hub	Mr. Prasad Rajendra Shishupal	32-36
7. Role Of NGOS, Consumerism And CSR	Dr. Neha D. Nalawade	37-42
8. Impact Of GST (Goods And Service Tax) On Indian Economy	Mr. Prashant J. Arsul	43-49
9. Educational System Of India	Ms. Kshitija D. Paraswar	50-59
10. Cryptography	Ms. Manisha Jitendra Vaid	60-65
11. Used Of Java Technology In The Design And Implementation Of Web Application	Ms. Priyanka Dhairyasheel Kale	66-70
12. Information Security And Security Policy	Mr. Narendra H. Kale	71-75
13. Impact Of Globalization On Indian Economy	Ms. Radhika Gaurav Gilda	76-83
14. To Understand The Importance Of Training & Development In The Hotel Operations	Mr. Rahul Desai	84-90
15. Approach Towards Concept Of Social Backwardness In Changing Times	Mr. Ravindra Wakade	91-96
16. Laws For Women In India - Let's Know Them	Mr. Rahul Nardevrao Bibave	97-105
17. Need Of Youth's Participation In Indian Politics	Mr. Sonu Dutta	106-111
18. Goods And Services Tax (GST) - A New Tax	Dr. D. S. Borkar	112-122
19. Blending History And Myth: A Critique On W.B. Yeats's Select Poems	Dr. Haseeb Ahmed	123-127
20. Corrugated Industry In India	Dr. Ravindra Motilal Kothari	128-132

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD



अनुक्रमणिका

अ. नं.	लेखाचे शिर्षक	लेखकाचे नाव	पान नं.
१.	शैक्षणिक प्रक्रियेत मूल्य शिक्षणाची आवश्यकता	डॉ. शोभा इंगवले	१३३-१३७
२.	स्त्री सक्षमीकरणाचे पुरस्कर्ते माननीय शरद पवार	डॉ. पौर्णिमा शिरिष कोल्हे डॉ. पांडुरंग भोसले	१३८-१४०
३.	पंडिता रमाबाई यांचे स्त्रीमुक्तीविषयक कार्य	डॉ. महालक्ष्मी मोराळे	१४१-१४३
४.	हिंदी सिनेमा में हिंदी गीतों का योगदान	डॉ. मीना ठाकूर	१४४-१४७
५.	गोंधळ, भजन व कीर्तन : स्वरूप विवेचन	डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे	१४८-१५३
६.	वासुदेवाची गीते व कलाविष्कार	डॉ. सुभाष आहेर	१५४-१६७
७.	लोकसाहित्यातील लोकजीवन व लोकसमजुती	डॉ. बाबासाहेब शेंडगे	१६८-१७२
८.	'विनोबा भावे एक आदर्श राष्ट्रसंत'	डॉ. कालिदास दिनकर फड	१७३-१७६



'विनोबा भावे एक आदर्श राष्ट्रसंत'

प्रा. डॉ. कालिदास दिनकर फड

लोकप्रशासन विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड
ता. जि. औरंगाबाद. मो.नं. ७३८७९९८३८८

प्रस्तावना :

भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील थोर स्वातंत्र्य सेनानी, सर्वोदय, भूदान आंदोलनाचे प्रणेते महात्मा गांधीजींच्या आंदोलनातील वैयक्तिक सत्याग्रही, राष्ट्रशिक्षक, राष्ट्रसंत विनोबा भावे यांचे विचार शाश्वत, उपयुक्त आहेत.

भारत हा सर्वधर्म परंपराचा पाईक आहे. त्यातील संत परंपरा ही अतिशय महत्त्वाची आहे. संतांनी लोकांना मानव समुदायाला समाजात कसे वर्तन करावे, कशा प्रकारचा व्यवहार करावा. समाजातील अनिष्ट रुढी, प्रथा, परंपरेवर प्रबोधनाच्या माध्यमातून प्रहार केला. आपल्या प्रबोधनातून लोकांची मने जागृत केली. लोकांना व्यवहाराच्या नवनवीन दिशा प्राप्त करून दिल्या. संतांनी आपल्या हयातील सतत समाजसेवा केली. त्यातील एक महान राष्ट्रसंत विनोबा भावे हे एक होत. विनोबाजी लोकांशी त्यांच्याच बोलीभाषेतून किर्तन, भजनाद्वारे संवाद साधत, लोकांना आपलेसे करत. लोकांनाही त्यांचे विचार भावत, पटत. त्यांनी रूग्णसेवा, समाजसेवा आपल्या हयातील शेवटपर्यंत केली. महात्मा गांधीजींचे ब्रह्मचर्य, सत्य, सत्याग्रह व त्यांचे सच्चे अध्यात्मिक उत्तराधिकारी म्हणूनही त्यांचे विचार व कार्य महत्त्वाचे आहेत. त्यांच्या विचार व कार्यातून लोकांना नवी दिशा मिळाली. आदर्श राष्ट्रसंताप्रमाणे त्यांचे कार्य आजही प्रेरणादायी आहेत. एक थोर राष्ट्रसंताप्रमाणे त्यांचे विचार, आचरण देशाला एक नवीन दिशा देणारे ठरलेले आहेत.

● महत्त्वपूर्ण शब्द - सर्वोदय, भूदान, जीवनशिक्षण

संशोधन उद्देश :

'विनोबा भावे एक आदर्श राष्ट्रसंत हा संशोधन लेख विनोबा भावे यांचे विचार अभ्यासून त्यांच्या विचारांची प्रस्तुतता अभ्यासणे या उद्देशावर आधारित आहे.

संशोधन पध्दती :

विनोबाजी एक आदर्श राष्ट्रसंत या संशोधन लेखासाठी संशोधकाने संशोधनाच्या वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पध्दतीचा त्याचबरोबर संशोधनासाठी द्वितीय स्त्रोताचा त्यासाठी विनोबांचे विविध लेख, प्रवचने साहित्याचा आधार घेऊन हा लेख पूर्ण करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. तसेच संशोधकाने या संशोधन लेखासाठी अधिकाधिक ग्रंथालयीन पध्दतीचा आधार घेतलेला आहे.

थोर स्वातंत्र्य सेनानी विनोबांचे संपूर्ण जीवन त्यागपूर्ण, आदर्शवात होते. विनोबाजींवर सुरुवातीच्या कालखंडात



बालपणी कुटूंबातील आजी आजोबांच्या विचाराचा अधिक प्रभाव दिसून येतो. त्यांच्या आजी आजोबांचे विचार अतिशय साधे, सरळ होते. ते लोकांना सतत मदत करायचे ते नवनीत गोष्टींची कास धरत. या नाविन्यपूर्णतेचा तसेच त्यांच्या वडिलांच्या प्रयोगशिलतेचा व आईच्या दानशूरवृत्तीचा त्यांच्यावर विशेष प्रभाव दिसून येतो. त्यामुळे त्यांनी आपले आयुष्य सतत प्रयोगशिलतेत व्यतीत केले.

विनोबाजींचा कामावर, कामाच्या निष्ठेवर प्रचंड विश्वास होता. ते प्रत्येक काम समर्पित वृत्तीने निष्ठेने करत. कोणतेही काम चांगले किंवा वाईट, लहान किंवा मोठे, श्रेष्ठ किंवा कनिष्ठ योग्य किंवा अयोग्य नसते. या गांधीजींच्या विचाराप्रमाणे ते प्रत्येक कामाला समान प्राधान्य देत. विनोबाजी स्वतः आपली प्रत्येक कामे करत. प्रत्येक काम करण्याची विनोबाजींची एक स्वतंत्र पध्दत होती. ते कामाशी तल्लीनतेने एकरूप होत. काम म्हणजे श्रमयज्ञ या भावनेतून काम करत. आपली काम आपणच करावीत हा त्यांचा महान विचार आजच्या स्थितीत भरकटलेल्या तरुणांसाठी व त्यांच्याबरोबर इतरांसाठी उपयुक्त आहे. सर्वांनी आपली नियत कामे निष्ठेने प्रामाणिकपणे केली तर देशाचा जलद गतीने विकास होईल. त्यांच्या श्रमनिष्ठेच्या तत्त्वानुरूप तरुणांनी सतत कार्य केले तर त्यांच्या मनाची घडण चांगली होईल. मनाला स्वच्छतेची सवय लागेल. स्वच्छता ही त्यांच्या जीवनाचा अविभाज्य भाग बनेल. तरुणांनी सतत कार्यमग्न राहणे. स्वतःबरोबर देशासाठी महत्त्वाचे आहे. त्यांचे श्रमनिष्ठेबरोबरच स्वच्छतेसंबंधीचे विचार उपयुक्त आहेत. त्यांची प्रासंगिकता दिवसेंदिवस वाढतच आहे.

विनोबांना पुस्तकी शिक्षण अपेक्षित नव्हते. पुस्तकी शिक्षणामुळे व्यक्तीत अहंपणा येतो. त्यासाठी जीवनशिक्षण महत्त्वाचे असते. जीवनात येणाऱ्या अडचणी, प्रश्न, समस्या, स्वतःचे स्वतः शोधून त्या प्रश्नांवर स्वतःच उपाय शोधणे त्याचबरोबर प्रत्येक परिस्थितीला अपल्या स्वभावाद्वारे हाताळणे अपेक्षित होते. आजच्या स्थितीत आपण कौशल्याधारित शिक्षण, जीवन शिक्षण यासंबंधी अभ्यासक्रम मते मांडतो. यासंबंधीचे विचार विनोबाजींनी स्वातंत्र्यपूर्व कालखंडात मांडून ते प्रत्यक्षात आणलेले होते. यावरून त्यांच्या शैक्षणिक दूरदृष्टीचा प्रत्यय येतो. विनोबाजींनी शिक्षणाबरोबर स्वयंपूर्ण गावावर विचार मांडले होते. गावातील लोकांच्या गरजा ह्या गावातच पूर्ण केल्या पाहिजेत. लोकांना जीवन जगत असतांना लागणाऱ्या सर्व गोष्टींचे उत्पादन गावातच झाले पाहिजे. गाव हे सर्वच बाबतीत स्वयंपूर्ण झाले पाहिजे. या दृष्टीने त्यांनी सुरगावचा विकास केला होता. विनोबांना विज्ञानाला अध्यात्माची जोड देणे महत्त्वाचे वाटत होते. अध्यात्मक व विज्ञानाच्या समन्वयातूनच खरी प्रगती होईल. यावर त्यांची दृढ श्रद्धा होती. विज्ञानाशिवाय समाजाची प्रगती, विकास होऊच शकणार नाही. समाज हा विज्ञानवादी होणे गरजेचे आहे. विज्ञान अधिक अध्यात्म (विज्ञान + अध्यात्म = सर्वोदय) म्हणजेच सर्वोदय. सर्वोदय म्हणजे सर्वांचाच विकास. विज्ञान व अध्यात्माच्या समन्वयातून सर्वांचा सर्वोदय होतो. विनोबाजींचे सर्वोदयी विचार आजच्या स्थितीत गरीबी, दारिद्र्य निर्मुलनासाठी, राष्ट्रविकासासाठी उपयुक्त आहेत. समाजातील तळागाळातील सर्वांचाच उद्धार, विकास त्यांच्या सर्वोदय विचारातून विज्ञान व अध्यात्माच्या समन्वयातून होईल. विज्ञान, तंत्रज्ञान, विज्ञान व अध्यात्मिक, नैतिक विचारांची सांगड घालूनच आपला विकास होईल.

विनोबांचे श्रीमद्भगवतगीतेवरील विचार हे अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत. त्यांनी गीतेचा साधा, सरळ, सोपा अर्थ

'विनोबा भावे एक आदर्श राष्ट्रसंत'

'गिताई' च्या माध्यमातून सांगितलेला आहे. त्यांच्या जीवनावर भगवतगीतेचा प्रचंड प्रभाव होता. त्यांनी गीतामार्गाद्वारे आपली जीवन साधना चालविली होती. त्यांचे "Talks on Gita" या ग्रंथातील विचार त्या दृष्टीने महत्त्वपूर्ण आहेत. या ग्रंथातील विचार आजच्या तरुण पिढीसाठी प्रेरणादायी आहेत. विनोबाजींनी सर्व धर्मांच्या पवित्र धर्मग्रंथाचा गीता, बायबल, कुराण, धम्मपद ग्रंथसाहिबा यांचा सुक्ष्म अभ्यास केलेला होता. सर्व धर्म समान असून कोणताच धर्म वरचा किंवा खालचा नाही. नद्या अनेक आहेत पण त्यांचे पाणी सारखेच असते. धर्मांचे देखील तशाच प्रकारचे आहे. धर्म अनेक आहेत पण त्यांची शिकवण एक सारखीच आहे. सत्य, प्रेम, करुणा ही प्रत्येक धर्मांची विश्वव्यापी शिकवण आहे. विनोबाजींनी आपल्या आश्रमात दैनंदिन सर्वधर्म प्रार्थना सुरु केल्या होत्या. सर्वधर्मांची चांगलीच शिकवण विश्वधर्मासाठी उपयुक्त आहे. त्यांचे हे धार्मिक विचार विश्वबंधुत्व, विश्वशांतीसाठी उपयुक्त आहेत. सर्व मानव सारखेच आहेत. सर्व धर्म समान आहेत. त्यांची शिकवण मानवकल्याणासाठीची आहे. जाती-पाती खोट्या आहेत. माणुसकी हाच मानवाचा धर्म आहे. विनोबांचा विश्वधर्म होता. जगाच्या कल्याणाचा ते नारा देत व त्याप्रमाणे वर्तन करत असे. ते एक महान संत होते. मानव हीच एकमेव जात आहे. सत्य, अहिंसा हीच खरी शिकवण, ठेवा आहे.

विनोबा काम आणि जातीचा संबंध नसावा यावर भर देत. ज्याला जे काम जमेल, ज्याचे ज्यात प्राणिग्य असेल त्याने ते काम करावे. तो कोणत्या जातीचा आहे हा विषय नसून कोणतेही काम कमी प्रतीचे मानू नये. काम हाच धर्म असावा. कर्मधर्माचे विनोबांनी समर्थन केले. त्यांनी अस्पृश्यता निर्मूलनाचे कार्य केले. अस्पृश्यांना इतरांप्रमाणेच समान वागणूक मिळावी यासाठी त्यांनी ह्यातभर कार्य केले.

विनोबांनी भूदान चळवळीस तेलंगनामधील पोचमल्ली गावात १८ एप्रिल १९५१ रोजी सुरुवात केली. भूदान चळवळ अतिशय शांततामय, अहिंसक पद्धतीने सुरु झाली. ही चळवळ अहिंसामय क्रांती होती. विनोबा जमीनदारांना आवाहन करत त्या आवाहनाला जमीनदार प्रतिसाद देवून आपल्याकडील जमीन देत व ही जमीनदारांची जमीन भूमिहीनांना, मजुरांना समान पद्धतीने वाटप होत. शेतीत काम करणारा शेती मालक होणार कोणीही भूमिहीन राहणार नव्हते. अशी ही अहिंसामय क्रांती विनोबांनी केली. सूर्य प्रकाश देतो, ढग पाऊस पाडतो, अग्नी उष्णता देते, वारा हवा देतो त्यावर मालकी सर्वांचे त्याप्रमाणे भूमीवर देखील मालकी सर्वांचीच. सब भूमी गोपाल की, जमीन, भूमी सर्वांचीच जो कसेल त्याची जमीन या तत्वाप्रमाणे त्यांनी देशभर भूदान चळवळ सक्रीय केली. या चळवळीमुळे भूमिहीनांना कष्टकऱ्यांना, शेतमजुरांना, कसणाऱ्यांना जमीनी मिळाल्या. त्यांना जगण्याचा मार्ग विनोबाजींनी दिला.

विनोबांना स्त्री शक्तीची पूर्ण जाणीव होती. त्यांनी स्त्री-पुरुष समानतेचा पुरस्कार केला. त्याचप्रमाणे ते वागले, जगले होते. स्त्रियांनी सर्व बंधने झुगारून घ्यावीत. सर्व क्षेत्रात त्यांना समान अधिकार मिळावा. यासाठी ते आग्रही राहिले. चिपको आंदोलनाच्या पाठीमागे विनोबांची प्रेरणा होती.

अशा अहिंसक आदर्श राष्ट्रसंतांचे विचार आजच्या सद्यस्थितीत कालसुसंगत आहेत.



सारांश :

विनोबांनी जे विचार आपल्या भजन, प्रवचनातून ग्रंथातून मांडले ते विचार त्यांनी अनुभवले, जगले होते. त्यांचे सर्व विचार दैनंदिन जीवन जगातंना जीवनशिक्षण म्हणून उपयुक्त आहेत. त्यांची सर्वोदयी विचारधारा आजच्या स्थितीत मानवी मूल्ये, जीवन मूल्ये आचरण्यासाठी महत्त्वपूर्ण आहेत. विनोबांनी कर्मधर्म सांगितला ती एक कार्यसंस्कृती आहे. त्या कार्यसंस्कृतीची सद्यस्थितीत नितांत आवश्यकता आहे.

संदर्भ :

१. Narayan Shriman (१९७०), Vinoba: His Life & Work, Popular Prakashan, Bombay.
२. Bhava Vinoba (१९६०), Talks on Gita, Parandham Publication, Wardha.
३. भावे विनोबा, अध्यात्म - तत्व - सुधा, परंधाम प्रकाशन, वर्धा.
४. भावे विनोबा - आत्मज्ञान + विज्ञान = सर्वोदय, परंधाम प्रकाशन, वर्धा.
५. भावे विनोबा, गीताई, परंधाम प्रकाशन, वर्धा.
६. खडसे भा. की. (१९८५), विनोबा, महाराष्ट्र राज्य प्रौढ शिक्षण संस्था, औरंगाबाद.

○○○

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAO
TQ. & DIST. AURANGABAD.

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-714



INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

April-2019 Special Issue - 183 (B)

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhargar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashik Road (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)



This Journal is indexed in :

- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATDHAN PUBLICATIONS

I
N
T
E
R
N
A
T
I
O
N
A
L
R
E
S
E
A
R
C
H
F
E
L
L
O
W
S
A
S
S
O
C
I
A
T
I
O
N



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 183 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal

ISSN :
2348-7143
April-2019

61	परिवर्तनशील विचारवंत डॉ. गोविंद गारे	श्री संदीप चपटे	296
62	लोकशाही प्रक्रियेत राजकीय नेतृत्वाचे विकासातील योगदान : विशेष संदर्भ जालना जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्य (सन २००४ ते २०१४)	सचिन शेवतेकर डॉ. शरद कुलकर्णी	300
63	महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांची बुद्धिमत्ता व समायोजन यांच्यातील सहसंबंधाचा अभ्यास	डॉ.एस.एस.शिंदे	305
64	भाषा आणि भाषाशास्त्र अध्यापनाचे नव दित्तिज	डॉ.संजय बावल्कर	309
65	असहकार आंदोलन स्थगित करण्यात आलेल्या महात्मा गांधींची भूमिका	सौ.प्रियंका जाधव	314
66	आदिवासींच्या शोषणाची कविता	डॉ.अंजली मस्करेन्हुस	319
67	नाशिक जिल्ह्यातील शेतकरी आत्महत्या-कारणे व उपाय	श्री. बाबाजी आहिरे आणि डॉ.माधव राजपंग	324
68	मैदानी खेळामुळे मेंदूच्या कार्यक्षमतेत होणारी वाढ	प्रा.नाजुकराव बनकर	328
69	जिल्हा परिषदेच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी- यांच्या भूमिकेचे विश्लेषणात्मक अध्ययन	विशाल भेंदुरकर	331
70	ज्ञान, संघर्षाची कहाणी : 'वाट तुडवताना'- उत्तम कावळे	विनोद भालेराव	338
71	भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शेती विषयक विचार	डॉ. राजू शिंदे	343
73	महाराष्ट्रातील शेती : समस्या	डॉ. ए. अय. खाल आणि अंबादास मारगडे	347
74	वीरगळ : एक ऐतिहासिक साधन	डॉ. संजय वाघमारे	353
75	आदिवासी लोकांगीतातून आविष्कृत होणारी दिवाळी	डॉ.मंदा नांदुरकर	360
76	महाराष्ट्राच्या प्रमुख प्रभावी लोककलांचा तौलनिक अभ्यास	भारती सोनवणे-निळे	365
77	विदर्भातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	डॉ. जगन्नाथ ठाकणे	373
78	महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांची सामाजिक बुद्धिमत्ता व आत्मविश्वास यांच्यातील सहसंबंधाचा अभ्यास	डॉ.एस.एस.शिंदे	378
79	जागतिकीकरणातील भारतीय शेती व शेतकऱ्यांच्या समस्या आणि राज्याची भूमिका	डॉ. राजू शिंदे	382
80	दलित कथा : एक आकलन	डॉ. मारुसाहेब गमे	386

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor



लोकशाही प्रक्रियेत राजकीय नेतृत्वाचे विकासातील योगदान :
विशेष संदर्भ जालना जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्य (सन २००४ ते २०१४)

सचिन सुधाकर शेठेकर
संशोधक विभागात

डॉ.शरद कुलकर्णी,
मार्गदर्शक

प्राचार्य, विभागप्रमुख, राज्यशास्त्र विभाग,
नूतन महाविद्यालय सेलू, जि.परभणी

1.1 प्रस्तावना :

मानवाच्या विकासांच्या सर्व आवस्थांमध्ये स्वतःच्या सुरक्षिततेसाठी वेगवेगळ्या प्रकारच्या व्यवस्था निर्माण केलेल्या आहेत.यातूनच पुढे चालून शासनाचे वेगवेगळे प्रकार निर्माण झालेले दिसून येतात.जसे की, राजेशाही, संरजामशाही, हुकूमशाही आणि लोकशाही इत्यादी. वरील सर्वप्रकारामध्ये शासनाचा लोकशाही प्रकार हा आजच्या स्थितीत जगातील बहुतांश राज्यांनी स्विकारलेला दिसून येतो.इतर सर्व शासन प्रकारांच्या लोकशाहीची तुलना केली असता शासन व्यवस्थेच्या केवळ या प्रकारांमध्ये सामान्य नागरिकांच्या मूलभूत अधिकारांचे मोठ्या प्रमाणात संरक्षण होत असलेले दिसून येते. तसेच नागरिकांना लोकशाही शासन व्यवस्थेमध्येच स्वतःच्या विकासांची संधी मोठ्या प्रमाणात प्राप्त होते.आधुनिक काळात राज्याची भौगोलिक क्षमता आणि लोकसंख्या यांच्यामध्ये प्रचंड वाढ झाल्याने सर्वत्र अप्रत्यक्ष लोकशाहीचा स्वीकार केलेला आढळतो. विशिष्ट वयाचे नागरिक विशिष्ट काळासाठी आपले प्रतिनिधी निवडून देतात,आणि त्यांच्यामार्फत राज्यकारभार चालवितात.लोकशाहीमध्ये सहिष्णूता या घटकाला अनन्य साधारण महत्त्व असल्यामुळे विविध विचारांना योग्य स्थान देणे महत्वाचे ठरते. लोकशाहीमध्ये एकापेक्षा अनेक विषय प्रस्तुत होऊ शकतात, स्वीकारले जाऊ शकतात.प्रत्येक विचारानुसार गट स्थापनाची संधी असल्यामुळे विविध पक्षांची निर्मितीही होऊ शकते.म्हणून कोणत्याही लोकशाहीमध्ये एकापेक्षा अधिक पक्ष आढळतात. राजकीय नेतृत्वास अनेक प्रकारचे कार्य पार पाडावी लागतात.सद्यस्थितीला अनेक देशांनी लोकशाही शासन व्यवस्थेचा स्वीकार केलेला आहे.तसेच लोकशाही सोबतच कल्याणकारी राज्याची संकल्पना स्वीकारलेली आहे.त्यामुळे राजकीय नेतृत्वाचे कार्य वृद्धिंगत झालेले आहे. समूहाला मार्गदर्शन करणे, विशिष्ट ध्येय जनतेसमोर एकत्रित ठेवणे, योग्य प्रसंगी योग्य निर्णय घेणे, नागरिकांचे मनोबल उंचावणे, ध्येय प्राप्तीमध्ये निर्माण होणाऱ्या आडी-आडचणीचे निवारण करणे इत्यादी स्वरूपांची कार्य राजकीय नेतृत्वास करावी लागतात. राजकीय नेतृत्वास वरील स्वरूपाचे कार्य करावी लागत असल्यामुळे आधुनिक राज्य व्यवस्थेत राजकीय नेतृत्वाचे महत्त्व वाढलेले दिसून येते, मात्र अशा प्रकारचे कार्य खऱ्या अर्थाने राजकीय नेतृत्व पार पाडीतआहेत का?या बाबीचा शोध घेण्याचा दृष्टीकोनातून सदरील अभ्यासविषय आवश्यक वाटतो.

प्राचीन काळापासून मानवी इतिहासात नेतृत्वाचा उदय झालेला दिसून येतो.जेव्हा मनुष्य टोळीच्या रूपात राहात असे तेव्हा त्या टोळीच्या रक्षणाची जबाबदारी टोळीच्या प्रमुखाकडे देण्यात आली.याचेच रूपांतर



पुढे चालून राजेहीत झाले. राजाच्या आज्ञांचे पालन सर्वांना बंधनकारक होते. आधुनिक काळामध्ये लोकशाहीचा उदय झाला व निवडणुकांच्या माध्यमातून प्रत्यक्ष जनते मार्फत मतदान घेऊन नेता निवडण्याच्या प्रक्रियेस सुरुवात झाली.

1) प्राचीन कालखंडातील नेतृत्व :

प्राचीन कालखंडातील लिखित साधनांचा अभ्यास केल्यास असे लक्षात येते की, नेतृत्वाचा प्रवास हा टोळी प्रमुखापासून राजेशाहीपर्यंत झालेला आहे. यातून ग्राम नेतृत्व निर्माण झाले कालांतराने गावाचे रुपांतर नगरामध्ये झाले. स्थिर स्वरूपांच्या स्थानिक समुहाच्या व्यापक विस्ताराबरोबरच नेतृत्वाची व्याप्ती वाडली. प्राचीन काळी 'योधेय' व 'लिच्छवीगणराज्य' केंद्रीय कायदे मंडळे होती. त्यात वरिष्ठ व कनिष्ठ असे दोन सभागृह होते. या सभागृहात पक्ष होते.

विधिमंडळाचे एक कार्यकारी मंडळ व त्यांचा अध्यक्ष होता. कार्यकारी मंडळाच्या सदस्यांना, निरनिराळे विभाग दिले होते. कार्यकारी मंडळाची चर्चा कार्यक्रम पत्रीकेनुसार होत असे. संथागार मध्ये अनेक राजकीय विषयांवर चर्चा होत असे. आदर या गणराज्यांमध्ये मतदान घेतले जात नसे, कारण येथे मित्रता व स्नेहपूर्ण वातावरणात संख्येच्या बहुमतापेक्षा वृद्ध, जाणकार, अनुभवी व्यक्तीच्या साह्याने निर्णय घेतले जात असत. आलमंडळाचे मते ही गणराज्ये इ.स. 400 पर्यंत भारताच्या उत्तर भागात होती. गणराज्यांची आपसात फुट व समुद्रगुप्ताचे साम्राज्य विस्ताराचे धोरण यामुळे या गणराज्यांचा अस्त झाला. प्राचीन काळात गणराज्य नेतृत्वाबरोबरच स्थानिक पातळीवर नेतृत्वाचा विकास झाल्याचे दिसून येते. स्थानिक स्वराज्य संस्था लोकसत्ताक राज्यात तर होत्याच परंतु जेथे राजतंत्र होते राज्यात खेड्यांचा कारभार स्वायत्त पद्धतीने चालत असे. चोल राजाच्या काळात (इ.स. 900 ते 1300) तत्कालीन लेखांवरून तामीळमध्ये ग्रामसंस्था व त्यांच्या कार्याचे विस्तृत वर्णन आहे.

2) मध्ययुगीन राजकीय नेतृत्व :

मध्ययुगात सामान्य वर्गमिथूनही नेतृत्वाचा उदय झालेला दिसून येतो. उदा: चंद्रगुप्त मौर्य हा एक सामान्य कुळातील होता. लहान मुलांमध्ये खेळत असतांना तो सरदाराच्या भूमिका करतांना आर्य चाणक्याला दिसला. त्याच्या अंगी असणारे नेतृत्व गुण लक्षात घेऊन, चाणक्याने त्याला सहाय्य केले. कालांतराने चंद्रगुप्ताने विस्तृत व बलाढ्य अशा मौर्य साम्राज्याची निर्मिती केली. "दक्षिण भारतामध्ये विजयनगरचे साम्राज्य निर्माण करणारे हरिहर व बुक्कराय यांच्यातील नेतृत्व गुण लक्षात घेऊनच विद्याचरण स्वामींनी त्यांना प्रोत्साहन दिले. हे दोघे बंधू देखील एका सामान्य कुळातीलच होते" याच विजयनगर साम्राज्याची प्रेरणा घेऊन शिवाजी महाराजांनी स्वतःच्या नेतृत्व गुणांच्या जोरावर बालपणीच मित्र जमवून स्वराज्याची निर्मिती केली. त्यांचे संघटन चांगले होते."

"स्वराज्यांच्या कल्पनेभोवती भारावलेल्या छोट्या-मोठ्या अनुयायांचा वर्ग उभा करून कल्पनेतील स्वराज्य प्रत्यक्ष प्रस्थापित केले. जनतेचे समर्थन आणि मान्यता मोठ्या प्रमाणात प्राप्त झाली. शिवाजी महाराजांनी राज्याच्या संरक्षणासाठी आरमार बांधले, समुद्रात किल्ले बांधले. अष्टप्रधान मंडळ निर्माण केले. राज्य व्यवहार केला "इतका व्यापक दृष्टीकोण पुढील काळात दिसून आला नाही. विधायक बुद्धीचा अखेरचा



हिन्दू राजा म्हणून यदुनाथ सरकार या प्रसिद्ध इतिहासकाराने शिवाजी महाराजांचे वर्णन केलेले आहे.त्यांच्या मते, भविष्यात असा अष्टपैलू राजनेता झाला नाही."

1.2 संशोधनाची उद्दिष्टे :

1. जालना जिल्ह्यातील लोकशाही प्रक्रियेत राजकीय नेतृत्वाचा अभ्यास करणे.
- 2.

1.3 संशोधनाची गृहीतके :

1. मतदार संघातील विकासात्मक कार्यामध्ये राजकीय नेतृत्वाची महत्त्वाची भूमिका आहे.
- 2.

1.4 संशोधन पध्दती :

संशोधकाने संशोधनाच्या विविध पध्दतीपैकी सर्वेक्षणात्मक संशोधन पध्दती व विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा आधार घेतला आहे,

1.5 तथ्य संकलन :

लोकशाही प्रक्रियेत राजकीय नेतृत्वाचे विकासातील यायोगदान: विशेष संदर्भ जालना जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्य (सन 2004 ते 2014) या प्रस्तुत विषयाच्या अभ्यासासाठी प्राथमिक व द्वितीय खोताचा आधार घेण्यात आला आहे.

कोणत्याही मतदार संघाचा सर्वांगीण विकास करावयाचा झाल्यास त्या मतदार संघासाठी ज्या प्रमाणे विकास निधीची आवश्यकता असते, त्याच प्रमाणे त्या मतदार संघासाठी एका नेतृत्वाचीही आवश्यकता असते.कारण नेतृत्वाविना कोणत्याही क्षेत्राचा म्हणावा तितकासा विकास होवू शकत नाही. 2004-14 या 10 वर्षांच्या कालावधीत जालना जिल्ह्यातील राज्यकर्त्यांनी जिल्हांच्या विकासात मोलाचे योगदान दिले आहे.सर्वच विधानसभा सदस्यांनी आपल्याला मिळालेल्या विकास निधीचा उपयोग कोणकोणत्या कामावर केला याचा आढावा घेतला असता असे निदर्शनास आले की, त्यांनी अनेक प्रकारची आपल्या मतदार संघातील विकासात्मक कार्य पूर्ण केले आहेत. यात रस्ते, विज, पाणीपुरवठा, बांधकाम, विहीर इत्यादींचा समावेश होतो. विधानसभा सदस्यांनी केलेल्या कामामुळे मतदार संघाचा विकास झाला आहे काय, तेंव्हा उत्तरदात्यांनी होय असे उत्तर दिले .जालना जिल्ह्यातील एकूण पाच मतदार संघातील विकास कार्याचा आढावा घेतला असता प्रत्येकानेच विकासात्मक कार्यास गती देण्याचा प्रयत्न केला आहे.मात्र त्यांच्या विकास कार्यात असमतोलपणा जाणून आला.कोणी सार्वजनिक रस्ते कोंक्रीटीकरणाला प्राधान्य दिले, तर कोणी पाणीपुरवठ्याची व्यवस्था करण्याला प्राधान्य दिले,तसेच सर्वच विधानसभा सदस्यांनी आपला निधी खर्च करण्याचा प्रयत्न केला आहे. आपआपल्या मतदार संघातील नागरिकांच्या गरजेनुसार व आवश्यकतेनुसार त्यांनी त्या-त्या पध्दतीने कार्य केले.गरजेची जी कामे आहेत त्यास आधी प्राधान्य देण्यात येते व ती कामे आधी पूर्णत्वास नेली जातात. तसेच मोठ्या प्रमाणात होणारे शहरीकरण नागरिक सुविधांची वाढती मागणी वाढणारी लोकसंख्या वाढलेली माहगाई, नागरिकांच्या विधानसभा सदस्यांकडून वाढत जाणा-या अपेक्षा या सर्व घटकांचा विचार केला असता आजची विकास निधीची असणारी तरतूद कमी आहे,विधानसभेतील नेतृत्वास मिळालेल्या निधीचा पूर्णपणे वापर केले जात असल्याचे दिसते.जालना जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्यांना देण्यात आलेला एकूण विकास

Pacl



निधी व त्यांनी खर्च केलेला एकूण विकास निधी याचा आडावा घेतला असता असे निदर्शनास आले की, या सदस्याला मिळालेल्या विकास निधीचा पूर्णपणे वापर करण्यात आलेला आहे. म्हणजे सर्वच विकास निधी जालना जिल्हातील विकास कामासाठी खर्च करण्यात आला आहे.

1.6 निष्कर्ष :

1. नेतृत्व स्वतःची एक प्रक्रिया असल्यामुळे राज्य व्यवस्थेच्या विविध पातळीवर नेतृत्वाचे कार्य चालू असते. हे कार्य करण्यासाठी राष्ट्रीय पातळीवरील नेतृत्वापासून तर स्थानिक पातळीवरील नेतृत्वापर्यंत, भिन्न मानवी समूहात नेतृत्व भरतीचे कार्य अब्याहृतपणे चालू असते.
2. लोकशाही वेवस्थेत व्यवस्थेत राजकीय नेतृत्व आणि राजकीय पक्ष यांना महत्वाचे स्थान प्राप्त झाले आहे. राजकीय पक्षांच्या माध्यमातूनच नेतृत्व स्वतः एक कार्यक्रम जनतेसमोर मांडते, निवडणूक लढविते व सत्ता प्राप्तीचा प्रयत्न करते. म्हणजेच राजकीय पक्ष लोकशाही वेवस्थेत संस्थेला संघटित स्वरूप मिळवून देण्याचे कार्य करते.

1.7 शिफारशी :

1. जालना जिल्हातील लोकशाही प्रक्रियेत विधानसभेतील नेतृत्वास मिळालेल्या विकास निधीचा वापर होतो का नाही हे नागरीकांनी पहावयास हवे.
2. लोकशाही वेवस्थेत जालना जिल्हातील विधानसभा नेतृत्वामुळे स्थानिक पातळीवर विकास घडवून आला आहे का नाही हे नागरीकांनी पहावयास हवे.
3. लोकशाही वेवस्थेत नागरीकांना भाग घेण्याचा समान हक्क असावा आणि तो त्यांना योग्य तऱ्हेने बजावता यावा यासाठी शासन स्तरावरून प्रयत्न होण्यास हवे.
4. लोकशाही वेवस्थेत सरकार यशस्वी व्हायचे असेल तर मुळात संपूर्ण समाजाचा लोकशाही संकल्पनांवर विश्वास असावा, समाजात स्थापन झालेल्या छोट्या-छोट्या संस्थांच्या कार्यप्रणालीतून हा विश्वास व्यक्त व्हावा लागतो. सरकारखेरीज इतरही संस्थांनी समाजासाठी काही तरी जबाबदारी पार पाडण्याचे काम हाती घ्यावे लागते.
5. कोणत्याही समाजात एकाच प्रभाबद्दल मतभिन्नता असू शकते असे मते मांडली जाण्याची आणि त्यांच्यामधील अंतिम मत ठरवण्याची संधी फक्त लोकशाहीमध्येच मिळत असते. यासाठी जास्त चर्चा, कमी निर्णय असावे, टीकापण लोकशाहीवर होते. मात्र ही वेगवेगळी मते त्यातली नवीनता आणि वैविध्य इत्यादी समाजाची बलस्थाने आहेत. हे आपण लक्षात ठेवले पाहिजे कारण ती लोकशाहीमध्येच जतन होऊ शकतात.
6. मतदानातून आणि निवडणुकीमधून जालना जिल्हातील विधानसभा सदस्याची निवड होते. जालना जिल्हातील धोरण विधानसभा सदस्यांनी राबवावे यासाठी लोमताचा रेटा लावून ही सत्ता दाखवून देता येते. यासाठी चळवळ उभारून आपल्याला हवे ते विधानसभा सदस्य आपण्याचा नागरिकांनी प्रयत्न करावा.

Each



'RESEARCH JOURNEY' International E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 183 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal

ISSN :
2348-7143
April-2019



7. लोकशाहीत प्रत्येक पक्षाला स्वतःच्या धोरणाला पाठिंबा मिळवण्यासाठी नागरिकांपर्यंत जावेच लागते. जास्तीत-जास्त लोकांपर्यंत पोचण्यासाठी प्रसारमाध्यमे हा उत्तम उपाय आहे. म्हणूनच वृत्तपत्राचा अधिकाधिक उपयोग जालना जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्यांनी करावा.

संदर्भग्रंथ सूची:

1. आरगडे अंवादास, (2013) "भारतातील लोकप्रशासन", एनयुकेशनल प्रकाशन, औरंगाबाद.
2. धर्मापुरीकर भालचंद्र, (2015), "परभणी जिल्ह्यातील विधानसभा सदस्यांचे विकासात्मक कार्य: एक अभ्यास."
3. घोटाळे रा.ना, (1992), "समाजशास्त्रीय संशोधन तत्वे आणि पध्दती", श्री मंगेश, प्रकाशन,, नागपूर, पाचवी आवृत्ती .
4. नाडगोंडे गुरनाथ, (1999), "सामाजिक संशोधन पध्दती", फडके प्रकाशन, कोल्हापूर.
5. भांडारकर पु.ल, (1987), "सामाजिक संशोधन पध्दती", महाराष्ट्र विद्यापीठ, ग्रंथ निर्मिती मंडळ, नागपूर.

PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARWAD
TO. & DIST. NARANANGABAD

2017



Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277-5730



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

TAX

**AJANTA
PRAKASHAN**

Volume-VI, Issue-IV
English Part - II
October - December - 2017



NATIONAL CONFERENCE - 2017
AJANTA - ISSN - 2277-5730 - IMPACT FACTOR - 4.205 (www.ajfactor.com)

CONTENTS OF PART - II

Sr. No.	Name & Author Name	Page No.
1	GST and Common People Kumawat S. R.	1-2
2	Effect of GST on Tourism of Country, State & Raunagiri District Mr. Lankesh Murlidhar Gajbhiye	3-9
3	Customer's Tax Relaxation in GST Dr. M. S. Waghmare	10-16
4	Impact of GST : General Analysis Dr. Madhavi Pawar	17-19
5	GST Myths and Realities Mamata Jagannathji Rathi	20-24
6	Goods and Services Tax (GST): An Overview, its Impact on Indian Economy and growth Dr. Manisha Kotgire	25-29
7	Impact of Goods and Services Tax on Indian Economy Ms. Manisha Prakash Shukla	30-33
8	A Systematic Study on the Impact of GST on Sports Prof. Dr. Manoj M. Painjane Prof. Dr. Ashwin P. Borikar	34-37
9	Impact of Goods and Services Tax (GST) on Indian Economy Maske Pravin Sitaram	38-42
10	Impact of Goods and Service Tax (GST) on Education Md Shakeeb Pathan Muskan Mr. Khan Mohtasib Ali	43-48
11	Goods and Services Tax (GST): Challenges, Opportunities & Impact Dr. Meena M. Wadgule	49-54
12	Roots of GST in Ancient Sanskrit Literature Dr. Minal N. Shrigiriwar	55-59
13	Indian Tourism Sector and Impact of GST Dr. More M. R. Kukde Y. H.	60-64

Impact of Goods and Services Tax (GST) on Indian Economy

Maske Pravin Sitaram

Research Student, Dept. of Commerce, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

Abstract

A very significant improvement over the local sales tax system is Goods and Services Tax (GST) is a comprehensive tax levy on manufacture, sale and consumption of goods and services at a national level. One of the biggest taxation reforms in India the (GST) is all set to integrate State economies and boost overall growth. At present businesses pay lot of indirect taxes such as Service Tax, VAT, Sales Tax, Luxury Tax, Octroi and Entertainment Tax. Once GST is implemented, all these taxes would cease to exist. There would be only one tax, that too at the national level, monitored by the central government. The basic aim of the paper is to study the concept of goods and service tax and its impact on Indian economy. The study also aims to know the benefits and needs of GST in Indian scenario.

Keywords: GST and Indian economy

Introduction

The major source of revenue for any nation is the tax, so for economic development of the nation it is compulsory to have good taxation system. Taxes are the only means for financing the public goods because they cannot be priced appropriately in the market. They can only be provided by governments, funded by taxes. It is important the tax regime is designed in such a way that it does not become a source of distortion in the market or result in market failures. The tax laws should be such that they raise a given amount of revenue in an efficient, effective and equitable manner. India started its journey towards in the year 1980.

GST stands for Goods and Services Tax. It is a domestic trade tax that will be levied in the form of a value added tax on all goods and services - in practice with some exemptions. A value added tax exempts all inputs including capital goods. Hence, it becomes a general tax on domestic consumption. It is a convenient and economically efficient way of taxing consumption. If it is levied at a single rate and there are only very few exemptions, it becomes a proportional tax on consumption. In order to ensure that the tax burden is distributed according to the consumption of different individuals, it must be levied on the basis of the principle of destination that is to say that the tax on a good should go to the state in which the concerned consumer lives. This automatically takes place if the tax is levied at only the central level, or if the state is a unitary one with only one level of taxation. In a federation, there are special problems to be solved if GST is to be levied at the level of the states as well as the federal government.



Objectives of the Study

- 1) To study the Benefits and Need of GST in Indian economy.
- 2) To understand how GST will work in India.
- 3) To study the Background of GST outside India.
- 4) To analysis the Impact of GST on different sectors.

Research Methodology

This paper is mostly based on secondary data collected from various books, National & international Journals, government reports, publications from various websites which focused on various aspects of Goods and Service tax.

Benefits of GST

- 1) It would introduce two tiered one country one tax regime.
- 2) It would make it transparent.
- 3) It would free the manufacturing sector from cascading effect of taxes, thus by improve the cost competitiveness of goods and services.
- 4) It would create business friendly environment thus by increase tax GDP ratio.
- 5) Uniformity of tax rates across the state.
- 6) Price of goods are expected to reduce in the long run as the benefits of less tax burden would be passed on to the consumer.

Need of GST

The GST is being introduced not only to get rid of the current patchwork of indirect taxes that are partial and suffer from infirmities, mainly exemptions and multiple rates, but also to improve tax compliances. The spread of GST in different countries has been one of the most important developments in taxation over the last six decades, owing to its capacity to raise revenue in the most transparent and neutral manner, more than 150 countries have adopted the GST.

- 1) Many areas of services which are untaxed will also get covered.
- 2) Goods and service tax will help in development of a common national market.
- 3) GST will replace existing taxes.
- 4) Goods and service tax (GST) will avoid double taxation.
- 5) Ensure tax compliance across the country.



Three Prime Models of GST

Central GST
GST to be levied
by the centre

State GST
GST to be levied
by the state

Dual GST
GST to be levied by the
centre and the states
Concurrently

GST - How It Works In India?

The GST model has some aspects which are as follows.

- 1) **Components:** GST will be divided into two components, namely, Central Goods and Service Tax and State Goods and Service Tax.
- 2) **Applicability:** GST will be applicable to all Goods and Services sold or provided in India, except from the list of exempted goods which fall outside its purview.
- 3) **Payment:** GST will be charged and paid separately in case of Central and State level. Input Tax Credit at Central level will only be available in respect of Central Goods and Service tax. In other words, the ITC of Central Goods and Service tax shall not be allowed as set-off against State Goods and Service tax and vice versa.

Background of GST outside India

While countries such as Singapore and Canada tax virtually everything at a single rate. In Indonesia, tax rate is about 10%. In China, GST applies only to goods and the provision of repairs, replacement and processing services. It is only recoverable on goods used in the production process, and GST on fixed assets is not recoverable. There is a separate business tax in the form of VAT. For example, when the GST was introduced in New Zealand in 1986, it yielded revenues that were 45 per cent higher than anticipated, in large part due to improved compliance. It is more neutral and efficient structure could yield significant dividends to the economy in increased output and productivity. The GST in Canada replaced the federal manufacturers sales tax which was then levied at the rate of 60 per cent and was similar in design and structure as the CENVAT in India. It is estimated that this replacement resulted in an increase in potential GDP by 24 per cent consisting of 12.4 per cent increase in national income from higher factor productivity and 50 per cent increase from a larger capital stock (due to elimination of tax cascading). The Canadian experience is suggestive of the potential benefits to the Indian economy. This means gains of about US\$15 billion annually.

Impact of GST

The Goods and Service Tax (GST) bill is expected to have wide ranging ramifications for the complicated taxation system in the country. It is likely to improve the country's tax to GDP ratio and also inhibit inflation.



However, the reform is likely to benefit the manufacturing sector but may make things difficult for the services sector. Though there are expectations that the GDP growth is likely to go up by 1 to 2 %, the results can only be analyzed after the GST implementation. The response is mixed from countries around the world. While the New Zealand economy had a higher GDP growth, it was lower in case of Canada, Australia and Thailand after the GST was implemented. The one per cent tax that has been proposed as a sop to appease the States for compensating their loss of revenue from the inter-state GST is likely to play a spoil sport. It is probable that it may affect the GDP adversely.

The Congress is already opposing the 1 per cent tax. The GS Tax rate is expected to be around 17-18% and can be assumed as a tax neutral rate. This tax rate is not likely to give any incremental tax revenue to the government. The rate will prove beneficial for the manufacturing sector where the tax rate is around 24% at present. The major manufacturing sectors that will benefit the most are FMCG, Auto and Cement. This is because they are currently reeling under 24 to 38 per cent tax. The sector which is going to be adversely affected is the services sector. Already there has been a hike from 12 to 14% from the 1st of June this year. Another 4 per cent increase will break their backs. The uniformity in the taxation rate is fine but it should not result in disparity for the goods and services sectors. Nobody has thought of the implications it will have in the services sector if the government moots a higher GS Tax rate like 20% or 24%. The higher GST rate will definitely boost the tax to GDP ratio, while giving financial muscle to the government for increasing the capital expenditure. This is likely to spur growth in the economy. There is definitely a silver lining to the whole exercise.

The unorganized sector which enjoys the cost advantage equal to the taxation rate can be brought under the GST bill. This will bring a lot of unorganized players in the fields like electrical, paints, hardware etc. under the tax net. It is easier said than done. It will take a lot of meticulous planning in the implementation of the GST reform for capturing the unorganized sector under its ambit. For one it will widen the tax reach and secondly it will benefit the organized players who lose out revenue to the unorganized sector at present. There are still a lot of uncharted territories which need to be looked into through parliamentary discussions in the sessions. This will bring sanctity to the taxation system without hurting any of the sectors adversely. To The Individuals and Companies - With the collection of both the central and state taxes proposed to be made at the point of sale, both components will be charged on the manufacturing costs and the individual will benefit from lowered prices in the process which will subsequently lead to increase in consumption thereby profiting companies.

Conclusion

Tax policies play an important role on the economy through their impact on both efficiency and equity. GST is a simple transparent and efficient system of indirect taxation. The enumeration of benefits casts a welcome setting for GST. GST is not going to be an additional new tax but will replace other taxes. Proving GST as a superior and sufficient system depends upon the structure it is designed into and the manly of



implementation. Which it serves to be beneficial set up for the industry and the consequent increase in govt. revenue.

References

- 1) The Economic Time (2009) Featured Articles from the Economic Times.
- 2) GST Indian (2015) Economy and Policy
- 3) Arpit Shailesh and Dr. Taruna, "A Study on Impact of GST on Indian Economy" 2016
- 4) Garg, Girish (2014), "Basic concepts and features of GST in India," International Journal of Scientific Research and Management, Volume 2, issue 2
- 5) Dr. S. A. Sameera and Dr. Shakir, "Does GST lead to Indian economic development?" 2016
- 6) Bhayani, Rachna (2015), Impact of Goods and Services Tax on India Economy," National Conference on Commerce and Management, Volume-6, issue-24.


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.

Structural report of cobalt ferrite nanoparticles using Williamson-Hall plot with context to the green synthesis

Atul D. Saraf^{1*}, Suraj W. Birare¹ and V. D. Murumkar¹

¹Department of Physics, Vivekanand College, Aurangabad, Maharashtra, India

*Corresponding author's e-mail address: atul.saraf101@gmail.com



Abstract. In the present article, cobalt ferrite (CoFe_2O_4) nanoparticles were synthesized by using the green synthesis approach. The cobalt ferrite nanoparticles were synthesized by using metal nitrates and black pepper (*Piper nigrum*) extract as a fuel in the sol-gel method. The green synthesis of cobalt ferrite is ecofriendly, easy to manufacture composite, and inexpensive. The structural properties of the prepared sample were investigated by using the XRD analysis technique. The various structural parameters like lattice constant, crystallite size, d-spacing, etc were calculated from the XRD study. By using the W-H method, the 23.18 nm crystallite size was determined. The structural parameters obtained from the equation and graph were found to be closely the same. The cobalt ferrite nanoparticles prepared by using the green synthesis route were promising material for various applications, especially in a biomedical field like magnetic hyperthermia, magnetic resonance imaging, targeted drug delivery, etc.

1. Introduction

The development of nanosized materials has been becoming interesting for the last decades. The magnetic nanoparticles become more interested in the research field because of their innovative properties which makes them applicable in various applications like magnetic resonance imaging, magnetic hyperthermia, energy storage devices, sensors, mobile communication, magnetic recordings, gyromagnetic devices, information storage, magnetic shielding, etc [1, 2]. Among the various ferrites, spinel ferrites have more attraction in the research field. The spinel ferrite has the general formula MFe_2O_4 , where M is a divalent metal ion ($\text{M} = \text{Zn}^{2+}$, Co^{2+} , Mn^{2+} , Mg^{2+} , etc.) [3]. Spinel ferrites have a number of applications due to their nanostructure, magnetic properties, and chemical stability. The superparamagnetic spinel ferrite plays a vital role in biomedical applications like magnetic hyperthermia, antibacterial activity, etc. S [4]. Munjal et. Al. prepared oleic acid-coated cobalt ferrite nanoparticles by using the hydrothermal method and checked their magnetic and hyperthermia properties [5]. Raut et. al. prepared Zn doped cobalt ferrite nanoparticles by using the sol-gel auto-combustion method. Also studied their structural, magnetic, morphological properties and reported the particle size of nanoparticles found to be 45-49 nm with increasing Zn concentration in cobalt ferrite [6]. Among the various spinel ferrites, cobalt ferrite is a promising material for different applications due to its moderate saturation magnetization, high coercivity, and large magnetostrictive coefficient. Cobalt ferrite shows both normal and inverse spinel structures. Basically, cobalt ferrite shows inverse spinel structure which can be changed by doping divalent metal ions like Ni, Z, Cd, etc. Due to the high saturation magnetization and high coercivity cobalt ferrite is the hard magnetic material as compared to the other spinel ferrite [7]. To reduce hard magnetism of cobalt ferrite, doping and coating of particles methods are used and making them promising material for various biomedical applications. M. Ali et. al. Synthesised zinc doped cobalt ferrite nanoparticles successfully by sol-gel auto-combustion method and reported the average particle size was increased from 11 nm – 28 nm with increasing zinc concentration in cobalt ferrite [8]. S. Sagadevan et. al. prepared Ni-ferrite nanoparticles by chemical co-precipitation method and studied their structural, chemical, morphological properties. Also, concluded that the formation of spinel structure was confirmed from FTIR spectra [9]. P. Coppola et. al. prepared Zn-Co ferrite nanoparticles by using the hydrothermal co-precipitation method. They studied the morphological and structural properties of prepared nanoparticles [10]. The spinel ferrite nanoparticles are synthesized by various wet chemical methods like sol-gel auto-combustion, micro-emulsion, thermal decomposition, mechano-chemical synthesis, mechanical milling, hydrothermal technique, and forced hydrolysis method, etc. Among this sol-gel auto-combustion is broadly used for synthesizing fine-sized and chemically stabled magnetic nanoparticles. Because of sol-gel auto-combustion method has a number of good points like cost-effective, simple to do and reliable [11, 12]. The synthesis parameters like sintering temperature, pH of the solution, surfactants, solvents, organic salts, fuel, etc are affected by the size of particles. The Sol-gel auto-combustion method required organic fuel for combustion but is not



environmentally friendly. To overcome this problem nanoparticles synthesized by using a green synthesis approach is one of the best ways for preparation. Green syntheses of nanoparticles also provide advantages over other methods, as they are simple, one step, cost-effective, environmentally friendly, and relatively reproducible and often result in more stable materials[13]. Green nanotechnology is the ideal approach for reducing the negative consequences of nanomaterial manufacturing and application while also lowering the riskiness of nanotechnology. The biological route is an attractive alternative to traditional synthesis methods[14]. Making ferrites the greenway is an attractive choice. Recently there has been a lot of interest in the use of natural plant ingredients and this extract is in the methods of preparation. A. Nadumane et. al. reports an environmentally friendly synthetic strategy to synthesize new nickel ferrite and Mg-doped nickel ferrite photocatalysts under a modified green sol-gel route in which aloe Vera gel acts as a natural template. They open a new window to use this simple greener route to synthesize bi-functional NPs in the area of photocatalysis particularly wastewater treatment and display applications[15]. S. B. Patilet et. al. investigate Sugarcane juice mediated eco-friendly synthesis of visible light active zinc ferrite nanoparticles for degradation of mixed dyes application and antibacterial activities. Author noticed excellent photocatalytic activity in the presence of mixed organic dyes similar to the degradation of individual dyes[16]. M. M. Naiket et. Al. prepared Co-Zn ferrite by combustion method using curd as a green fuel. They conclude that gram-negative Salmonella typhi shows high antibacterial activity with the inhibition zone of Zn-doped CoFe_2O_4 (22nm) compared to pure CoFe_2O_4 (16nm)[17]. There are, few reports available on green synthesis of ferrite nanoparticles using extract of Aloe Vera, Hibiscus Rosa Sinensis, Sesame seed, Onion, Okra, Seaweed, black pepper, Clove, Cinnamon, Ginger, Cardamom, etc. Different combinations of organic and inorganic reducing agents may be present in the green extract. Further research still has to be done on the improvements in environmentally friendly synthesis methods. It needs to develop systems that are more efficient thus interpretation the environment cleaner and healthier. Using the natural extract for the spinel ferrite nanoparticles synthesis is cost-effective, easy to prepare, environmentally friendly. Black pepper extract is one of the best fuels for the synthesis of nanoparticles by using the sol-gel method and also black pepper is easily available. The present work aims to synthesize the cobalt ferrite nanoparticles by using eco-friendly and clean black pepper extract as a fuel in the sol-gel method. Also, study the effect of green synthesis on the structural properties of cobalt ferrite nanoparticles.

2. Experimental details

2.1. Chemicals

The Cobalt nitrate [$\text{Co}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$] and ferric nitrate [$\text{Fe}(\text{NO}_3)_3 \cdot 9\text{H}_2\text{O}$] are used as raw materials for cobalt ferrite synthesis. Ammonia (NH_3) is used to maintain the pH of the solution. All used chemicals are AR-grad.

2.2. Preparation of Black pepper (Piper nigrum) extract.

The black pepper extract was prepared by using a fine powder of black pepper. The 9 gm black pepper fine powder is dispersed in 50 ml of DI water and boils the solution for 30 min. after 30 min. the extract was cooled down up to room temperature and filtered. The prepared extract was used for further synthesis procedures.

2.3. Preparation of CoFe_2O_4 ferrite nanoparticles by sol-gel auto combustion method

Using black pepper (Piper nigrum) extract as a fuel, CoFe_2O_4 nanoparticles were synthesized by the sol-gel auto combustion method. The Cobalt nitrate [$\text{Co}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$] and ferric nitrate [$\text{Fe}(\text{NO}_3)_3 \cdot 9\text{H}_2\text{O}$] with stoichiometric ratio 1:2 dissolved in 500 ml of distilled water. The solution was kept under continuous stirring at 350 rpm for 15 min. The extract of black pepper was added as fuel in the solution to avoid the toxic fuels. The solution was stirred continuously for 15 min. The liquid ammonia was added drop-wise in the solution to maintain the pH at 7. After the maintain pH of the solution, stirred the solution continuously with constant heating 90°C . After 2 hours rises the temperature of the solution up to 120°C for the conversion of a sol into a gel. After some time gel was converted into viscous gel and combustion gets started and blackish-colored ash was obtained. This ash was grinded for a few hours the obtain a fine powder. The obtained powder was sintered at 600°C for 5 hours to remove the moisture and other extra content. Used these sintered nanoparticles for further characterizations.

2.3. Characterization tools

The CoFe₂O₄ nanoparticles were characterized by using an X-ray diffractometer (Bruker) with Cu K α radiation ($\lambda=1.54 \text{ \AA}$) was used to record the XRD patterns in a 2θ range of 20-80°. The analysis determines various structural parameters and phase purity of the sample.

3. Results and discussion

3.1. X-ray diffraction (XRD) studies

The various structural parameters of prepared CoFe₂O₄ were calculated from Bragg's diffraction angles shown in **table 1**. The lattice parameter value of prepared cobalt ferrite nanoparticles has been calculated both ways. The lattice parameter for each Bragg's diffraction angle is shown in table 1. The observed planes having (hkl) values (220), (311), (222), (400), (422), (511) and (440) indicated the formation of cubic spinel structure with Fd-3m space group. No, the additional plane was observed in the XRD pattern which gives the purity of the prepared sample. The lattice parameter was calculated from each observed plane by using the following **equation 1**. The calculated values of lattice parameters are shown in **table 1**.

$$\sin^2 \theta = (\lambda^2/a^2)(h^2 + k^2 + l^2) \quad (1)$$

Where, θ in the Bragg's angle, a is lattice constant, h , k and l are the Miller indices and λ is the X-ray wavelength. The average lattice constant (a_{ave}) was found to be 8.3755 \AA shown in **table 2**. Also, the lattice parameter was calculated graphically shown in **figure 1**. The $1/d$ -spacing versus square root of the ($h^2+k^2+l^2$) graph was plotted. By using the best linear fitting procedure slope of the line was obtained which gives the lattice constant (a_{grf}) value. From **figure 1**, the slope of the straight line was found to be 8.3810 \AA which is tabulated in **table 2**. There is a very small difference was found in the calculated value of the lattice constant and the graphically obtained value of the lattice constant. The various methods are available for obtaining clear information about microstructure. Warren-Averbach method, Williamsons Hall method, etc. are some methods are used to investigate the microstructure information. The Williamson-Hall plot method is a promising method for structural parameters analysis because of its easiness and simple calculations. The W-H plot for the prepared sample was drawn by using **equation 2**. The present W-H plot is based on a uniform deformation model (UDM).

$$\beta \cos \theta = \frac{k\lambda}{D} + 4\epsilon \sin \theta \quad (2)$$

The UDM takes into account uniform strain as well as crystallographic orientation, which is seen in nanocrystals due to crystal defects. The overall broadening has been expressed as given in the equation based on strain and size of a particular peak with hkl value. The straight-line observed in the W-H plot gives the intrinsic strain and crystallite size of the sample. The intercept on the y-axis gives the crystallite size and the slope of the straight line gives the intrinsic strain. The obtained straight line equation gives the 0.00598 y-intercept value. By using the y-intercept value crystallite size was found to be 23.18 nm tabulated in table 2. The lattice parameter and crystallite size were well matched with previous literature [18-20].



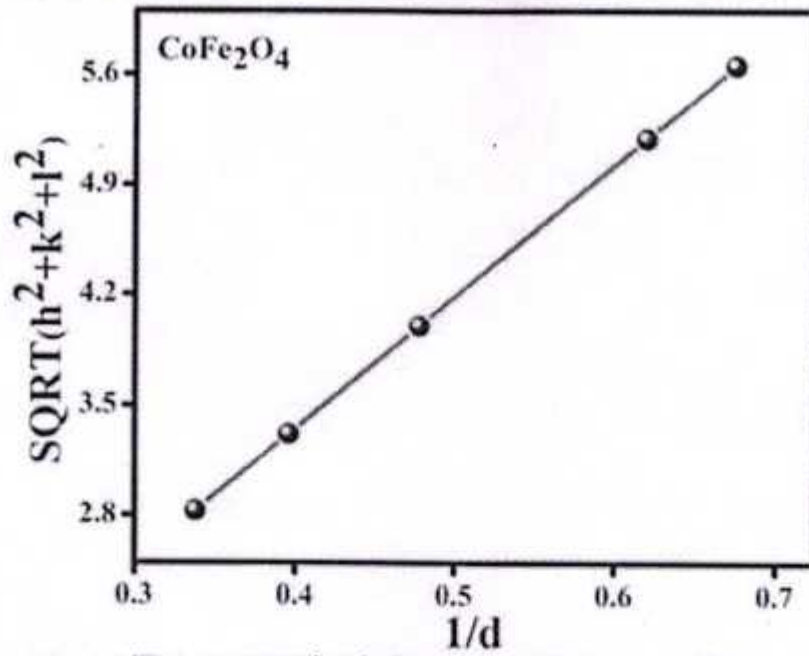


Fig. 1 1/d Vs. SQRT (h²+K²+l²) pattern of CoFe₂O₄ nanoparticles

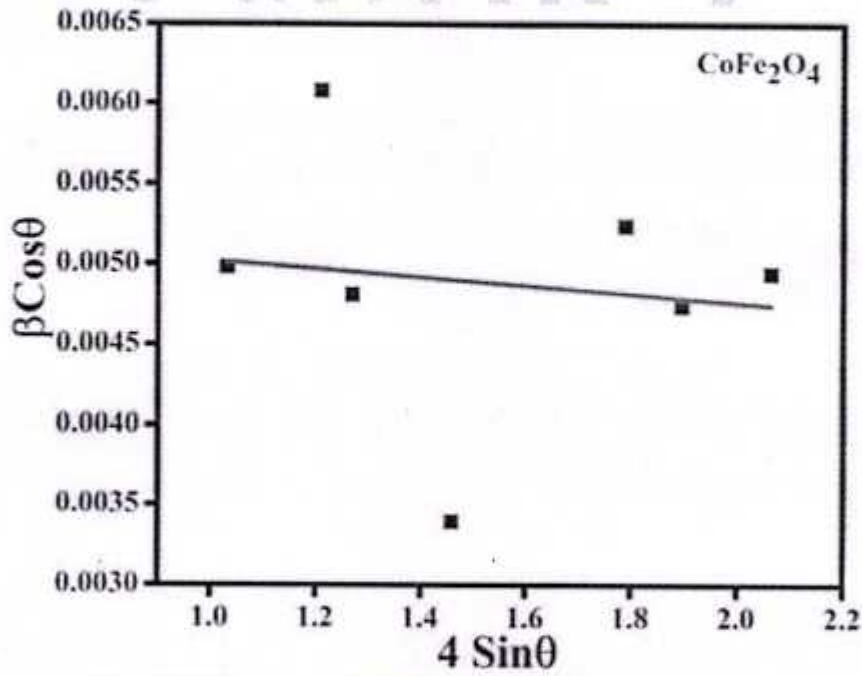


Fig. 2 Williamson – Hall plot of CoFe₂O₄ nanoparticles



Table 1: Bragg's angle (2θ), plane (hkl), d-spacing, lattice constant 'a' (Å)

2θ	$\sin\theta$	$2\sin\theta$	d	h	k	l	a
30.17	0.2603	0.5206	2.958	2	2	0	8.3686
35.50	0.3049	0.6099	2.5254	3	1	1	8.3759
43.17	0.3679	0.7359	2.0932	4	0	0	8.3728
57.03	0.4774	0.9548	1.6131	5	1	1	8.3822
62.66	0.5200	1.0400	1.4810	4	4	0	8.37787

Table 1: lattice constant ' a_{ave} ' (Å), lattice constant ' a_{grf} ' (Å) and crystallite size 't' (nm)

Parameter	a_{ave}	a_{grf}	t
value	8.3755	8.3810	23.18

Conclusions

The cobalt ferrite nanoparticles were successfully prepared by using the sol-gel auto combustion method. The black pepper (*Piper nigrum*) extract as a fuel in this method. The (hkl) planes obtained from the XRD pattern confirm the formation of the spinel ferrite structure. The average crystallite size calculated from the W-H plot was found to be 23.18 nm. The lattice parameter values were calculated by using an equation and also a graph. The 8.3810Å and 8.3755Å lattice parameter values were obtained from $1/d$ Vs $\text{SQRT}(h^2+k^2+l^2)$ and equation 1 respectively. The lattice parameter value was found to be nearly the same calculated from both types. The black pepper extract is suitable for the preparation of cobalt ferrite nanoparticles using the sol-gel auto combustion method.

Acknowledgment

The author Atul D. Saraf is thankful to the Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur for providing the XRD data.



References

1. Kefeni, K.K., et al., Spinel ferrite nanoparticles and nanocomposites for biomedical applications and their toxicity. *Materials Science and Engineering: C*, 2020. **107**: p. 110314.
2. Patade, S.R., et al., Impact of crystallites on enhancement of bandgap of $Mn_{1-x}Zn_xFe_2O_4$ ($1 \geq x \geq 0$) nanospinels. *Chemical Physics Letters*, 2020. **745**: p. 137240.
3. Somvanshi, S.B., et al., Hyperthermic evaluation of oleic acid coated nano-spinel magnesium ferrite: enhancement via hydrophobic-to-hydrophilic surface transformation. *Journal of Alloys and Compounds*, 2020. **835**: p. 155422.
4. Jadhav, S.A., et al., Visible light photocatalytic activity of magnetically diluted Ni–Zn spinel ferrite for active degradation of rhodamine B. *Ceramics International*, 2021. **47**(10): p. 13980-13993.
5. Munjal, S., et al., Water dispersible $CoFe_2O_4$ nanoparticles with improved colloidal stability for biomedical applications. *Journal of Magnetism and Magnetic Materials*, 2016. **404**: p. 166-169.
6. Raut, A., et al., Synthesis, structural investigation and magnetic properties of Zn^{2+} substituted cobalt ferrite nanoparticles prepared by the sol–gel auto-combustion technique. *Journal of Magnetism and Magnetic Materials*, 2014. **358**: p. 87-92.
7. Zhang, W., et al., Structural, morphological and magnetic properties of Ni–Co ferrites by the Mn^{2+} ions substitution. *Journal of Materials Science: Materials in Electronics*, 2019. **30**(20): p. 18729-18743.
8. Ali, M.B., et al., Effect of zinc concentration on the structural and magnetic properties of mixed Co–Zn ferrites nanoparticles synthesized by sol/gel method. *Journal of Magnetism and Magnetic Materials*, 2016. **398**: p. 20-25.
9. Sagadevan, S., Z.Z. Chowdhury, and R.F. Rafique, Preparation and characterization of nickel ferrite nanoparticles via co-precipitation method. *Materials Research*, 2018. **21**.
10. Coppola, P., et al., Hydrothermal synthesis of mixed zinc–cobalt ferrite nanoparticles: structural and magnetic properties. *Journal of nanoparticle research*, 2016. **18**(5): p. 138.
11. Duong, G.V., et al., Magnetic properties of nanocrystalline $CoFe_2O_4$ synthesized by modified citrate-gel method. *Physics of Magnetoelectric Composites*, 2006: p. 98.
12. Smith, K., et al., Sol–gel encapsulated horseradish peroxidase: a catalytic material for peroxidation. *Journal of the American Chemical Society*, 2002. **124**(16): p. 4247-4252.
13. Ahmed, S., et al., Green synthesis of silver nanoparticles using *Azadirachta indica* aqueous leaf extract. *Journal of radiation research and applied sciences*, 2016. **9**(1): p. 1-7.
14. Asiya, S., et al., Sustainable preparation of gold nanoparticles via green chemistry approach for biogenic applications. *Materials Today Chemistry*, 2020. **17**: p. 100327.
15. Nadumane, A., et al., Sunlight photocatalytic performance of Mg-doped nickel ferrite synthesized by a green sol-gel route. *Journal of Science: Advanced Materials and Devices*, 2019. **4**(1): p. 89-100.
16. Patil, S., et al., Sugarcane juice mediated eco-friendly synthesis of visible light active zinc ferrite nanoparticles: Application to degradation of mixed dyes and antibacterial activities. *Materials Chemistry and Physics*, 2018. **212**: p. 351-362.
17. Naik, M.M., et al., Green synthesis of zinc doped cobalt ferrite nanoparticles: Structural, optical, photocatalytic and antibacterial studies. *Nano-Structures & Nano-Objects*, 2019. **19**: p. 100322.
18. Suo, N., et al., Effect performance of the nanomagnetic properties of Ni–Cu–Co ferrites by Al^{3+} ions adulteration. *Modern Physics Letters B*, 2020. **34**(05): p. 2050059.
19. Kanamadi, C., et al., Dielectric and magnetic properties of $(x) CoFe_2O_4 + (1-x) Ba_{0.8}Sr_{0.2}TiO_3$ magnetoelectric composites. *Materials Chemistry and Physics*, 2009. **116**(1): p. 6-10.
20. Ibrahim, A.M., M. Abd El-Latif, and M.M. Mahmoud, Synthesis and characterization of nano-sized cobalt ferrite prepared via polyol method using conventional and microwave heating techniques. *Journal of Alloys and Compounds*, 2010. **506**(1): p. 201-204.




PRINCIPAL
 RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
 & SCIENCE COLLEGE, KARMAD
 TQ. & C. AURANGABAD.

Debye temperature and elastic properties of Mg-doped cobalt ferrite nanoparticles synthesized via green approach

Atul D. Saraf^{1*}, Suraj W. Birare¹ and V. D. Murumkar¹

¹Department of Physics, Vivekanand College, Aurangabad, Maharashtra, India

*Corresponding author's e-mail address: atul.saraf101@gmail.com



Abstract. In this study, magnesium doped cobalt ferrite ($\text{Co}_{0.75}\text{Zn}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$) nanoparticles were synthesized using sol-gel combustion using green (black pepper) extract as a chelating agent and metal nitrates as a metal source without using organic chemicals. Here, eco-friendly, inexpensive, and easily fabricated composite Co-Mg ferrite, was introduced with the role of biofuels and their advantages. Fourier transform infrared spectroscopy (FTIR) was investigated to study their elastic and magnetic properties. The higher frequency absorption band at wavenumber ($\nu_2 \approx 534 \text{ cm}^{-1}$) (ν_1) is caused by scratching vibrations of the tetrahedral metal-oxygen bond and lower frequency absorption band (ν_2) at wavenumber ($\nu_2 \approx 410 \text{ cm}^{-1}$) is caused by metal-oxygen vibrations in octahedral sites. The various elastic parameters were found from FTIR analysis including tetrahedral mass (m_A), octahedral mass (m_B), tetrahedral vibrational frequency (ν_1), octahedral vibrational frequency (ν_2), tetrahedral force constant (k_t), octahedral force constant (k_o), Debye temperature (Θ_D), average force constant (k_{avg}), lattice constant (a), elastic stiffness constant (C_{ij}), stiffness constant (C_{ii}), Young's modulus (Y), Bulk modulus (B) and modulus of rigidity (R).

1. Introduction

Ferrites are oxides that exhibit remarkable magnetic properties and have been investigated for five decades. Over the years, ferrites have been extensively studied for their special properties, making them one of the most interesting multifunctional materials. Its fascinating chemical, electrical, dielectric, and magnetic properties have made spinel ferrites an important electronic and magnetic material. Ferrites have been subjected to countless studies for a variety of purposes [1]. Ferrites are highly stable, non-toxic, highly compatible, and remain the backbone of magnetic and electrical engineering and technology due to their widespread application in transformers, magnetic storage devices, and other technological applications [2, 3]. The treatment of polluted water has also been achieved with them. There are two types of spinel ferrite $(\text{A}^{2+})[\text{B}_2^{3+}]\text{O}_4^{2-}$, in which A^{2+} and B^{3+} are divalent and trivalent cations, respectively, which occupy tetrahedral (T_A) and octahedral (O_B) interstitial metallic sites throughout the fcc lattice completed by O^{2-} ions. In contrast, in inverse spinel ferrite, T_A sites are occupied by trivalent cations while O_B sites contain both divalent and trivalent. However, in mixed valent inverse spinel ferrites, both sites can be filled by divalent and trivalent cations, including monovalent cations [4]. A special class of magnetic materials, nanocrystalline spinel ferrites, has emerged in recent years with applications in medical diagnostics, MRI imaging contrast agent, magnetic hyperthermia, treatment of cancer, sensors (gas, electrical and magnetic), agriculture, miniaturization of antenna, digital printing, magnetic drug delivery and biomedical research etc. [5, 6]. In addition to their high magnetic anisotropy and spontaneous magnetization, nanocrystalline superparamagnetic compounds are considered an effective material for hyperthermia, relaxometry, and contrast agents in MRI. The magnetism of cobalt ferrite (CoFe_2O_4), one of the important members of the spinel family, has gained renewed interest under its unique mechanical and physical properties. Biomedical applications can benefit from its excellent physical and chemical stability, substantial anisotropy and saturation magnetization, and tunable coercivity. Furthermore, they are also enhanced by Mg substitution [7]. Mg-ferrite is a highly catalytic material with high magnetic permeability as well as a high humidity and gas sensor. Magnesium ferrites are highly resistant, have a high Curie temperature, and are environmentally stable, so they are excellent candidates for an extensive range of applications [8]. Researchers have studied and processed several ferrites using a variety of methods, such as co-precipitation, sol-gel combustion, modified oxidation, forced hydrolysis, hydrothermal process, ball-milling, aerosol method, and the solid-state method. For the preparation of high-quality nano-ferrite samples and tuning their chemical, optical, and magnetic properties by cationic substitution at metal sites, special efforts have been made in the past two

decades using eco-friendly green synthesis routes[9]. Currently, nanotechnology is focusing on improving nanoparticles synthesis methods to make them more efficient, simple, and clean, which tends to reduce environmental pollution. Biogenic routes are attractive alternatives to traditional methods. They use nontoxic, biocompatible, relatively reproducible reagents, are environmentally friendly, and yield superior materials. Nanoscience research incorporates principles of green chemistry derived from plants, yeasts, fungi, and bacteria. The integration of green chemistry into nanoscience is a key issue[10]. Plant extracts from leaves, flowers, roots, or seeds, it is possible to prepare nanostructured magnetic ferrites with several chemical pathways using benign reagents, thus reducing the risk of hazardous substances. The plant extracts contain and can therefore release a variety of metabolites including carbohydrates, polysaccharides, phenols, amino acids, and vitamins, which can act as capping agents, reducing agents, and stabilizing and/or chelating agents for "capturing" the metal ions; they can also play a fuel role. The synthesis of nanoparticles with plant extracts can influence their size, shape, and morphology. They have a wide size distribution, a high disparity, and high stability. [11-13]. Nowadays, a variety of plant extracts such as Aloe-Vera leaves, ginger roots, and Hibiscus rosa-sinensis flowers and leaves are used to obtain metal oxides and mixed oxide nanoparticles[14, 15]. The local symmetry of crystalline and noncrystalline solids was determined using infrared spectroscopy, and the ordering phenomenon was investigated in ferrites using infrared spectroscopy. IR absorption bands are primarily caused by oxygen ion vibrations with cations at various frequencies[16]. Several factors influence the frequencies of spinel ferrites, including their cation masses, lattice parameters, and cation-oxygen bonding, for example. Elastic properties of spinel ferrites have not been investigated as thoroughly as their magnetic and electrical properties. The present work aimed to estimate Co-Mg ferrite's elastic properties using IR to study the elastic behavior of these ferrites[17]. Furthermore, there is a necessity to study the elastic behavior of these ferrites with new compositions possessing desired elastic properties. In the literature, there are reports on the elastic properties of Co-Mg ferrites; the present communication is an attempt to synthesize $\text{Co}_{1-x}\text{Mg}_x\text{Fe}_2\text{O}_4$ (where $x = 0.25$) using eco-friendly green synthesis. For the first time, we have described how we used black pepper extract as a chelating agent to systematically report Mg substitution in Co ferrite and studied their elastic properties.

2. Experimental details

2.1. Chemicals

A simple method for preparing cadmium substituted cobalt ferrite nanoparticles has been developed using analytical grade chemicals obtained from Merck, India. Analytical grade chemicals obtained from Merck, India, are used to prepare cadmium substituted cobalt ferrite nanoparticles. Cobalt nitrate [$\text{Co}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$], ferric nitrate [$\text{Fe}(\text{NO}_3)_3 \cdot 9\text{H}_2\text{O}$], magnesium nitrate [$\text{Mg}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$], and ammonia (NH_3) is used for the preparation of the $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles by green synthesis method. There was no further purification of the chemicals. Ammonia (NH_3) was used to maintain the pH of the solution.

2.2. Preparation of Black pepper (*Piper nigrum*) extract

We prepared bio-extracts using fine powder black pepper powder (*Piper nigrum*). Seven grams of black pepper powder were dissolved in 50 ml distilled water and the mixture was boiled for 30 minutes with magnetic stirring. Afterward, the filtered extract was used for further synthesis after it was cooled at room temperature.

2.3. Preparation of $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ ferrite nanoparticles

Black pepper (*Piper nigrum*) extract was used as the fuel for the sol-gel auto combustion method to make $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles. The Cobalt nitrate [$\text{Co}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$], ferric nitrate [$\text{Fe}(\text{NO}_3)_3 \cdot 9\text{H}_2\text{O}$], and magnesium nitrate [$\text{Mg}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$] were dissolved in 300 ml of distilled water with continuous stirring for 15min. To avoid toxic chemicals, black pepper extract (*Piper nigrum*) was added as an eco-fuel. Ammonia solution was used to maintain pH at 7. On a hot plate, the solution was continuously stirred and heated for approximately two hours at 80-90°C. After the production of the sol-gel, a very viscous gel, the temperature was raised to 120 °C so that the dried gel could be ignited, and powder could be obtained. As a result of burnt ash, Co-Mg ferrite nanoparticle powder is ground into a fine powder. This powder is then sintered for four hours at 600 °C to eliminate any remaining impurities. The sintered sample is again ground and used for further characterization with CMF2 coding.

2.3. Characterization tools

The $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles were characterized by using Fourier transform infrared spectroscopy (FTIR). The vibrational modes were identified by the Shimadzu FT-IR System in the wavenumber range of $380\text{--}4000\text{ cm}^{-1}$. The analysis determines various elastic parameters.

3. Results and discussion

3.1. Fourier transform infrared spectroscopy (FTIR)

Figure 1 illustrates the FTIR absorption bands of $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ ferrite systems, which were recorded at room temperature in the wavenumber range of $380\text{--}4000\text{ cm}^{-1}$. FTIR spectroscopy is an important and non-destructive tool that provides qualitative details regarding crystal structures of materials. According to this description, the first absorption band at this wavenumber ($\nu_1 \approx 534\text{ cm}^{-1}$) corresponds to the intrinsic vibrations of the tetrahedral complexes with the highest restoring force. The higher frequency absorption band (ν_1) is caused by stretching vibrations of the tetrahedral metal-oxygen bond and lower frequency absorption band (ν_2) at wavenumber ($\nu_2 \approx 410\text{ cm}^{-1}$) is caused by metal-oxygen vibrations in octahedral sites. Table 2 displays the absorption band edges, tetrahedral (k_t), and octahedral (k_o) force constants of the samples. According to Waldron's method, force constants are calculated using the following equations:

$$k_t = 4\pi^2 c^2 \nu_1^2 M_A \quad (1)$$

$$k_o = 4\pi^2 c^2 \nu_2^2 M_B \quad (2)$$

Ferrites exhibit extraordinary elastic properties under different strained conditions, and this is what determines how strong they are. It is important to study their elastic properties in the industry. The Debye temperature simplifies the integration of the heat capacity. This temperature indicates the approximate temperature below which quantum effects can occur. Debye temperature (Θ_D) is the maximum temperature a crystal can reach due to its highest normal mode of vibration, which is the highest temperature possible through a single normal vibration. The elastic parameters like average force constant (k_{avg}), lattice constant (a), elastic stiffness constant (C_{ij}), stiffness constant (C_{il}), Young's modulus (Y), Bulk modulus (B), modulus of rigidity (R) are tabulated in table 2. The above parameters were calculated using the following equations;

Elastic stiffness constant (C_{ij});

$$C_{ij} = \frac{k_{avg}}{a} \quad (3)$$

Stiffness constant (C_{il}),

$$C_{il} = \frac{\sigma \times C_{ij}}{(1-\sigma)} \quad (4)$$

These Poisson's ratio (σ) values were consistent with the theory of isotropic elasticity. Where, magnitude of poisson's ratio, $\sigma=0.3227$ is;

Young's modulus (Y),

$$Y = \frac{(C_{ij} - C_{il}) \times (C_{ij} + 2C_{il})}{(C_{ij} + C_{il})} \quad (5)$$

Bulk modulus (B);

$$B = \frac{1}{3} \times (C_{ij} + C_{il}) \quad (6)$$



Modulus of rigidity (R)

$$R = \frac{C_{ij}}{3} \quad (7)$$

It was found that all elastic parameters and Debye temperature obtained from FTIR data were in good agreement with reported values[18].

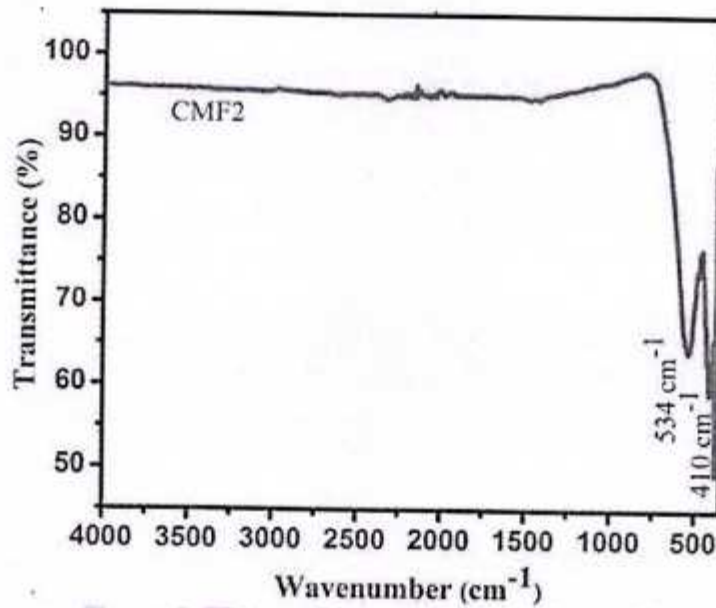


Figure 1 FTIR spectra of $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles

Table 1- Tetrahedral mass (m_A), octahedral mass (m_B), tetrahedral vibrational frequency (ν_1), octahedral vibrational frequency (ν_2), tetrahedral force constant (k_t), octahedral force constant (k_o), Debye temperature (Θ_D) of $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles

x	m_A (amu)	m_B (amu)	ν_1 (cm^{-1})	ν_2 (cm^{-1})	k_t (N/m)	k_o (N/m)	Θ_D (K)
0.25	55.9685	114.6545	534	410	209.51	139.37	679.57

Table 2- Average force constant (k_{avg}), lattice constant (a), elastic stiffness constant (C_{ij}), stiffness constant (C_{ii}), Young's modulus (Y), Bulk modulus (B), modulus of rigidity (R) $\text{Co}_{0.75}\text{Mg}_{0.25}\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles

x	a (Å)	k_{avg} (N/m)	C_{ij} (GPa)	C_{ii} (GPa)	Y (GPa)	B (GPa)	R (GPa)
0.25	8.379	174.4377	208.18	99.19	144.17	102.46	69.39

Conclusions

The magnesium substituted cobalt ferrite nanoparticles synthesized via green method assisted with black pepper (*Piper nigrum*) aqueous extract as chelating/reducing agents were successfully developed. The higher frequency absorption band at wavenumber ($\nu_2 \approx 534 \text{ cm}^{-1}$) (ν_1) is caused by stretching vibrations of the tetrahedral metal-oxygen bond and lower frequency absorption band (ν_2) at wavenumber ($\nu_2 \approx 410 \text{ cm}^{-1}$) is caused by metal-oxygen vibrations in octahedral sites. It was found from all elastic parameters and Debye temperature obtained from FTIR data were in good agreement with reported values. It is our understanding that there are no literature data on the synthesis of Mg substituted CoFe_2O_4 via black pepper (*Piper nigrum*) aqueous extracts.

Acknowledgment

The author Atul D. Saraf is thankful to the Department of Chemistry, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad for providing the FTIR data.

References

1. Amiri, M., M. Salavati-Niasari, and A. Akbari, Magnetic nanocarriers: evolution of spinel ferrites for medical applications. *Advances in colloid and interface science*, 2019. **265**: p. 29-44.
2. Wang, Q., Y. Yu, and J. Liu, Preparations, characteristics and applications of the functional liquid metal materials. *Advanced Engineering Materials*, 2018. **20**(5): p. 1700781.
3. Huang, W.M., et al., Shaping tissue with shape memory materials. *Advanced Drug Delivery Reviews*, 2013. **65**(4): p. 515-535.
4. Suzuki, Y., et al., Structure and magnetic properties of epitaxial spinel ferrite thin films. *Applied physics letters*, 1996. **68**(5): p. 714-716.
5. Darcheville, M., Synthesis of iron oxide nanoparticles and development of magnetic coatings by fluid processing. 2021, universit  Paris-Saclay.
6. Fazio, E., et al., Nanoparticles engineering by pulsed laser ablation in liquids: concepts and applications. *Nanomaterials*, 2020. **10**(11): p. 2317.
7. Andhare, D.D., et al., Effect of Zn doping on structural, magnetic and optical properties of cobalt ferrite nanoparticles synthesized via. Co-precipitation method. *Physica B: Condensed Matter*, 2020. **583**: p. 412051.
8. Patade, S.R., et al., Preparation and characterisations of magnetic nanofluid of zinc ferrite for hyperthermia. *Nanomaterials and Energy*, 2020. **9**(1): p. 8-13.
9. Liu, X.-M., G. Yang, and S.-Y. Fu, Mass synthesis of nanocrystalline spinel ferrites by a polymer-pyrolysis route. *Materials science and engineering: C*, 2007. **27**(4): p. 750-755.
10. Philibert, T., B.H. Lee, and N. Fabien, Current status and new perspectives on chitin and chitosan as functional biopolymers. *Applied biochemistry and biotechnology*, 2017. **181**(4): p. 1314-1337.
11. Aslam, M., A.Z. Abdullah, and M. Rafatullah, Recent development in the green synthesis of titanium dioxide nanoparticles using plant-based biomolecules for environmental and antimicrobial applications. *Journal of Industrial and Engineering Chemistry*, 2021.
12. El-Seedi, H.R., et al., Metal nanoparticles fabricated by green chemistry using natural extracts: biosynthesis, mechanisms, and applications. *RSC advances*, 2019. **9**(42): p. 24539-24559.
13. Me, R., et al., Role of Plant's Metabolites in the Biomimetic Synthesis of Plant-Mediated Silver Nanoparticles: A Review. *Asian Journal of Fundamental and Applied Sciences*, 2020. **1**(4): p. 1-9.
14. Tilaki, R. and S. Mahdavi, Stability, size and optical properties of silver nanoparticles prepared by laser ablation in different carrier media. *Applied Physics A*, 2006. **84**(1): p. 215-219.
15. Liu, Y., et al., Preparation of high-stable silver nanoparticle dispersion by using sodium alginate as a stabilizer under gamma radiation. *Radiation Physics and Chemistry*, 2009. **78**(4): p. 251-255.
16. Bouhadouza, N., et al., Structural and vibrational studies of $\text{NiAl}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ ferrites ($0 \leq x \leq 1$). *Ceramics International*, 2015. **41**(9): p. 11687-11692.
17. Ravinder, D., Elastic behaviour of zinc substituted lithium ferrites. *Materials Letters*, 2000. **45**(2): p. 68-70.
18. Maksoud, M.A., et al., Antibacterial, antibiofilm, and photocatalytic activities of metals-substituted spinel cobalt ferrite nanoparticles. *Microbial pathogenesis*, 2019. **127**: p. 144-158.

2019



Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University

Aurangabad - 431004 (MS) INDIA
(NAAC Re-accredited 'A' Grade)

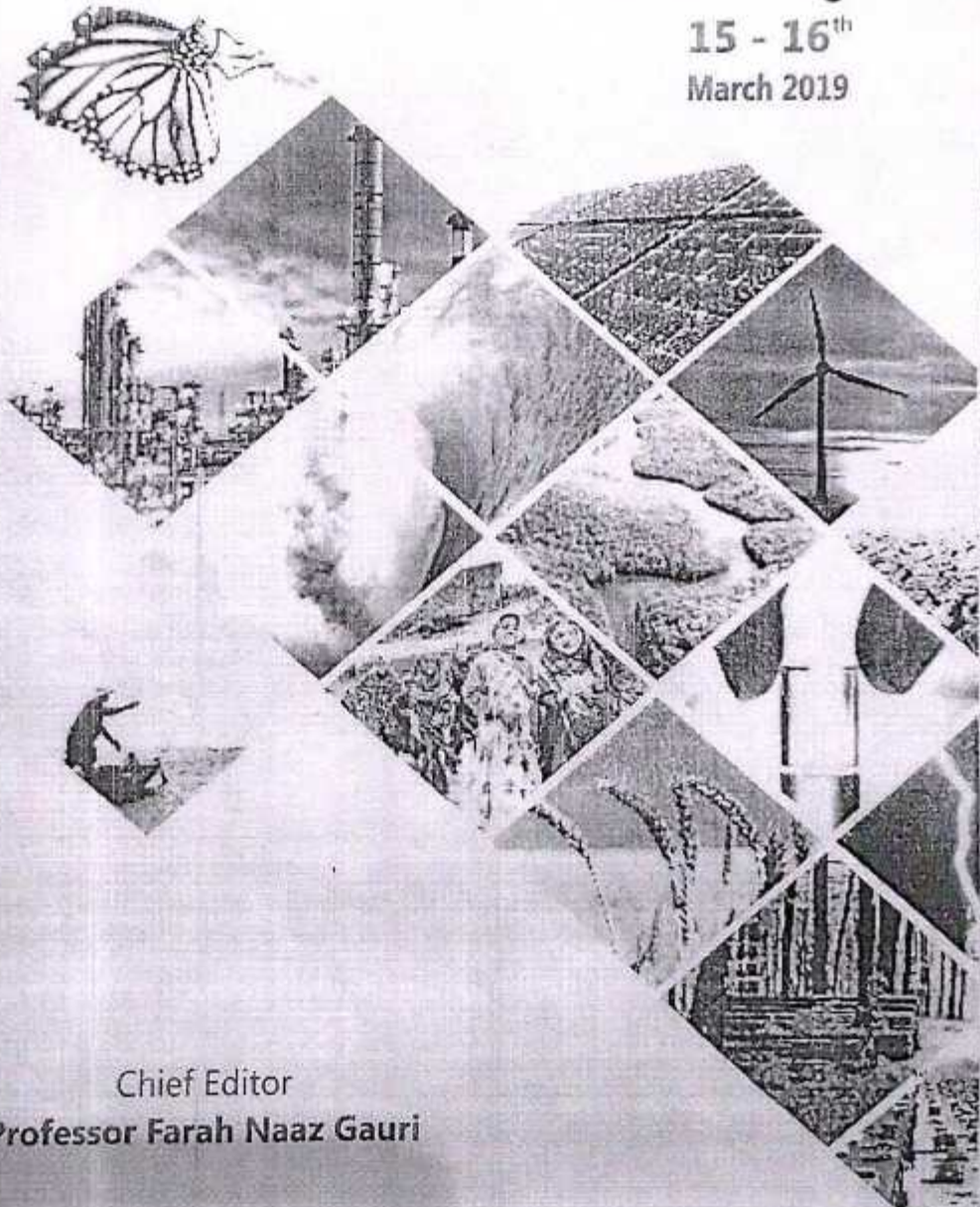
2nd Annual
International Conference on

Inclusive Growth and Sustainable Development - Emerging Trends and Challenges



Proceeding

15 - 16th
March 2019



Chief Editor
Professor Farah Naaz Gauri



11	Performance Analysis of EDTP (Entrepreneurship Development Training Programme) Scheme Implemented By Government & Supporting Agencies in Entrepreneurship Development in Maharashtra	Prin. Dr.Chandanshiv S. B. Associate Professor Dr.Gholkar D. R. Assistant Professor	67-72
12	The Growth Of Self-Help Group In India	Ghousia M.I. Assistant professor,	73-76
13	Effectiveness of Strategic Role of HR in Adding Value to Stakeholders in Global Business Context	Shweta Choudhary*, Research Scholar, Gauri Farah** Head, Department of Commerce,	77-84
14	Women empowerment through entrepreneurship with special reference to vendors in jalna.	P.S Talreja, Research Scholar,	85-89
15	Sustainable Development: The Importance And Effect On Human Life.	Prof. Gauri Farah Naaz Research Guide Ishraq Mohammed Albarakani PHD Student	90-94
16	Unemployment Primary Issue of Indian Culture	Dr MentonUbed , Assistant professor .	95-100
✓ 17	Awareness Of Farmers Towards Agricultural Crop Insurance Schemes In Washim District	Pravin S. Maske, Research Scholar Prof. Farah Naaz Gauri Research Guide	101-106
18	A study of Women Empowerment through Self-Help Groups	Mr. Shigavan Jagadish Hiru Research Scholar Prof. M. A. Lokhande Research Guide	107-113
19	Women Empowerment:	Shaikh Irfana Ahmed ; Research Scholar Asst. Prof.	114-117
20	A Study of Drought and Its Key Implications in Marathwada Region	Mr. Nitin Dhawale ¹ , Asst. Prof. Dr. L.B. Bahir ² ² Rtd. Asst. Professor & Research Guide,	118-122
21	Opportunities And Challenges For The Rural Entrepreneurship In India.	Dattu Shankar Lahane Research Student	123-129

AWARENESS OF FARMERS TOWARDS AGRICULTURAL CROP INSURANCE SCHEMES IN WASHIM DISTRICT

Pravin S. Maske
Research Scholar
Department of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad

Prof. Farah Naaz Gauri
Research Guide
Head, Department of Commerce
Dr. B A M University, A'bad



ABSTRACT:

Agricultural insurance is necessary for the farmers to protect them against financial issues. Agriculture is the backbone of our Indian economy. Agricultural development is a precondition of our national prosperity. It is the main source of earning livelihood of the people. Nearly two-thirds of its population depends directly on agriculture. Agriculture provides direct employment to 70 percent of working people in the country. It is the main stay of India's economy. So, it is very important to study about various aspects of agriculture. The present paper discusses the outcomes of the study in the area of crop insurance. Firstly, it measures the awareness and source of awareness, secondly examines the farmers' perception, finally identify the issues and challenges of crop insurance. The present paper is significant for potential beneficiaries from those villages which have no awareness of crop insurance scheme. It also helpful to small & marginal farmers to protect their interest in crops against natural calamities & getting benefits under this scheme. It also assists the bankers & policy makers for policy prescription & policy intervention.

KEYWORDS: *Agricultural, Crop insurance, Farmers Awareness, preferences & financial risk.*

INTRODUCTION:

Development of agriculture sector is essential for the development of Indian economy, as a major part of Indian population is dependent on agriculture for its livelihood, this sector also contribute to GDP. The growth expectations cannot be fulfilled without developing the agriculture sector. But this contribution needs to be increased to bring inclusive growth in the country, for which revenue from the sector should be enhanced. This mission cannot be achieved perfectly because of unpredictable weather, as agriculture production is dependent on weather. The unpredictable weather conditions damage the production hence revenue from the sector cannot be stable or enhance until the effect of adverse weather are managed. Government has been taking steps in this regard since independence yet these efforts are not successful in mitigating these risks, as these risks are uncertain and unpredictable. Agriculture Insurance is one of such efforts, launched in India in 1972. Since then there have been different agriculture insurance schemes implemented in India. These schemes were launched with the aim of compensating the losses occurred in agriculture production, which they could not achieve. And the sector is struggling for growth. The research wants to find out what exactly is the reason for the failure and how farmers perceive these insurance schemes, what is their opinion regarding these schemes.

CONCEPT OF AGRICULTURE INSURANCE:

In general, insurance is a form of risk management used to hedge against a contingent loss. The conventional definition is the equitable transfer of a risk of loss from one entity to another in exchange for a premium or a guaranteed and quantifiable small loss to prevent a large

and possibly devastating loss. A contract of indemnity by which, for a specified premium, one party promises to compensate another for the financial loss incurred by the destruction of agricultural products from the forces of nature, such as rain, hail, frost, or insect infestation. Crop insurance protects farmers from financial losses that result from natural causes such as drought, excessive moisture, hail, wind, frost, insects and disease. Agricultural insurance is a special line of property insurance applied to agricultural firms. In recognition of the specialized nature of this type of insurance, insurance companies operating in the market either have dedicated agribusiness units or outsource the underwriting to agencies that specialize in it. Agricultural insurance is not limited to crop insurance, it also applies to livestock, bloodstock, forestry, aquaculture, and greenhouses.

OBJECTIVES OF THE STUDY:

1. To study the agricultural insurance scheme in India.
2. To study the farmers awareness towards crop insurance.
3. To find out the issues and challenges of agricultural insurance scheme.

RESEARCH METHODOLOGY:

Area of the study: The research study was done in washim district.

Nature and source of data: The study is based on questionnaire method; primary data has been collected from various farmers in washim district and the secondary data have been collected from related journals, magazines and textbooks.

Statistical tools used for the study: Simple percentage analysis.

Sampling used: 100 farmers were selected by convenience sampling method.

NEED FOR CROP INSURANCE:

In such a scenario, it is necessary to have a mechanism like crop insurance which would enable the farmers to transfer their agricultural risks to a third party. In broader sense agricultural insurance provides the option for the farmers to manage the risk efficiently and also enable them to go for successive cultivation in the next season. Therefore, failure of crops is not a constraint to continue agriculture, unless it has negative impact on farming. Failure may act as a push factor to go for some other survival strategies. Hence such a process neither supports the livelihood of the farmers nor conducive for the growth of agriculture economy.

REVIEWS OF LITERATURE:

Duhan, A (2017) studied farmers perception towards crop insurance schemes and found out that lack of awareness should be removed and knowledge is essential for better implementation of these schemes. Farmers perceive premium to be high and claims to be low. Farmers also want that all crops should be covered not a few selective ones. They don't like time and amount of claim.

J. Sunder and Lalitha Ramakrishnan (2015), reveals the extent of preference towards purchase benefits and satisfaction level towards crop insurance. A total of 360 farmers from Kunichampet and Mannadipet in Puducherry district are selected for this study. The study has been made by collecting the response of farmers through structured questionnaire and they are analysed using simple percentage and Annova. The study findings revealed that there were constraints like less benefits and dissatisfaction towards claim settlement of crop insurance. Steps are necessary from Government and insurance delivery agents to promote insurance to counter problems like low benefits and dissatisfaction

D. Suresh Kumar, K.Palanisami, C.R. Ranganathan and R. Venkatram (2010), revealed that the extent of preference towards crop insurance as a tool for risk management in Tamilnadu. The study was taken up with a view to critically examine how the farmers perceive about the risk



mitigation measures provided by the government and about their preference. The study is conducted throughout the state of Tamil Nadu by interviewing 600 farmers spreading over 27 out of 32 districts of the state. The structured questionnaire and they analysed using Garret's Ranking Technique and Crop Diversification Indices. Uncertainty faced by individual farmers is transferred to the insurer through their participation in large numbers, for which benefit, the insured farmers pay a risk premium. From the analysis that encouraging the social participation will increase the preference of the farmers.

S. S. Raju and Ramesh Chand (2008), reveals the extent of preference towards agricultural insurance in India problems and prospects. The study was taken in New Delhi; they got respondents through the farmers and officials of the AIC, agricultural department, bankers, academicians and other representatives in New Delhi as well as Andhra Pradesh. To examine the performance of the existing and earlier national agricultural insurance schemes implemented in India and to discuss the problems and prospects of agriculture insurance in the country. Instability index (Sample Selection) and it is based on an analysis of primary and secondary data. The Primary data was collected from 150 farmers in district Vizianagaram and West Godavari district. With the improvement in governance, it is feasible to effectively operate and improve upon the performance of various programmes including agriculture insurance. National Centre for Agricultural Economics and Policy Research (Indian Council of Agricultural Research) New Delhi

AGRICULTURAL INSURANCE SCHEMES IN INDIA:

Pilot Crop Insurance Scheme: (PCIS) (1979-1980) General Insurance Corporation in collaboration with the state government introduced this scheme in 26 areas of Gujarat, 23 areas in West Bengal and 17 areas in Tamil Nadu. Subsequently it was extended to other states. The scheme covered Cercals, Millets, Oilseeds, Cotton, Potato, Gram and Barley. The scheme covered 6.27 lakh farmers who paid premium worth Rs. 195.01 lakhs. The claims paid amounted to Rs. 155.68 lakhs with claim premium ratio of 0.80.

Comprehensive Crop Insurance Scheme: (CCIS) (1985-1999) Comprehensive crop insurance scheme was an extension of PCIS. It was made compulsory for loanee farmers and was implemented by GIC. The premium rates were 2 percent of the sum insured for cereals and millets, and 1 percent for pulses and oilseeds. The union government and the state government shared premium and claims in the ratio of 2:1. Small and marginal farmers received 50% premium subsidy. The limit of sum insured was pegged at Rs. 10,000/- per farmer per hectare. The participation by states was on voluntary basis. The Government of India under the scheme was reimbursing 50 percent of administrative expenses to GIC.

Experimental Crop Insurance Scheme: (ECIS) (RABI 1997-1998) This scheme was introduced on an experimental basis to additionally cover non-loanee small / marginal farmers in 14 districts of five States. It entailed 100 percent premium subsidy for small / marginal farmers. The scheme covered 4.55 lakh farmers who paid Rs. 2.84 crore as premium and collected claims worth Rs. 37.80 crore. This resulted in a fairly high claim premium ratio of 13.31.

Farm Income Insurance Scheme: (FIIS) (2003-2004) to take care of variability in income arising out of fluctuations in the yield and market price, the government introduced a pilot project, viz. Farm Income Insurance Scheme (FIIS) during Rabi 2003-04 seasons. The objective of the scheme was not only to protect the income of the farmer, but also to reduce the government expenditure on procurement at Minimum Support Price (MSP). The other main objectives were to encourage crop diversification and also to give fillip to private trade, etc.



National Agricultural Insurance Scheme (NAIS): The National Agricultural Insurance Scheme (NAIS) was initiated in the year 1999-00 by redesigning an existing insurance scheme called the Comprehensive Crop Insurance Scheme of India (CCIS), which operated in the country since 1985. The NAIS provides insurance cover for yield losses of food crops, oilseeds and annual commercial/horticultural crops due to natural calamities, pests and diseases. For Food crops and oilseeds: ranges from 1.5 to 3.5 per cent of SI or actuarial rates, whichever is less. Annual Commercial and horticultural crops: actuarial rates Varies depending on the shortfall of actual yield from the threshold yield in the unit area of insurance and the sum insured by the farmers.

Weather Based Crop Insurance Scheme (WBCIS): The Weather Based Crop Insurance Scheme (WBCIS) was introduced by the Government of India in 2007-08 on a pilot basis in selected areas of a few States. The introduction of WBCIS was based on the fact that a similar scheme piloted by the Agriculture Insurance Company of India (AIC) since 2004 was argued to have distinct advantages over NAIS. WBCIS is based on deviation of weather parameters (such as rainfall, humidity, frost and temperature) from the desired value in a period in the insurance unit. In 2009-10, the scheme covered about 30 crops in 13 States during Kharif and 11 States during the Rabi season. In areas and crops where WBCIS is being implemented, NAIS is not available to farmers. Also, as in NAIS, for areas and crops for which the scheme is implemented, participation is compulsory for loanee farmers and is optional for others. For Food crops and oilseeds: ranges from 1.5 to 3.5 per cent of SI or actuarial rates (capped at 10 per cent for kharif and 8 per cent for Rabi), whichever is less. Annual Commercial and horticultural crops: ranges from 2 to 6 per cent of SI (actuarial rates capped at 12 per cent) Varies depending on the difference between the actual value and the trigger value of the weather parameter and the cost of inputs per unit area declared by AIC

Pradhan Mantra Fasal Bima Yojana (PMFBY): launched on 13 January, 2016 is a branch new insurance scheme of the central government. The scheme which is administered by the ministry of Agriculture and farmers' welfare will be implemented in all the states with the cooperation of the respective state governments. The scheme targets at providing a better insurance support to the farmers by low premium insurance cover. The new crop insurance scheme removes the capping on premium subsidies when compared to earlier schemes. It also covers risks like post-harvest losses, preventive sowings and many localized calamities like cyclones, which were excluded in most of the earlier schemes. Giving high priority to awareness creation is also a welcome step in this scheme.

ANALYSIS AND INTERPRETATION:



Table No. 1
Awareness of farmers about crop insurance

Sr. No	Awareness	No. of Respondents		Percentage	
		Yes	No	Yes	No
1.	Do you know the information about crop insurance?	86	14	86	14
2.	Do you know the procedure of taking crop insurance?	80	20	80	20
3.	Do you know the information about other agricultural insurance?	77	23	77	23
4.	Need for arrangement of workshop/orientation program?	98	02	98	02

Source: Field Survey

Out of total respondents 86% know what is crop insurance? But only 80% farmers know the procedure of insuring crop. Out of total farmers 77% respondents have the information about other Agri. Insurance. It is indicate that farmers are aware about crop insurance scheme as well as other agri. Insurance schemes and 98% respondents are said that there is a need of arranging such type of program.

Table No. 2
Source of information

Sr. No.	Source	No. of Respondents	Percentage
1.	Bank/Financial Institution	58	58
2.	News paper/TV/Radio	12	12
3.	Agri. Department, officials	4	4
4.	NGOs or any other agency	2	2
5.	Fallow Farmers	24	24
Total		100	100

Source: Field Survey

The above table shows that, out of 100 numbers of respondents 58% farmers came to know about this crop insurance through bank and financial institution, 12% through News paper/TV/Radio, 4% through Agri. Department, 24% through fallow farmers.

ISSUE AND CHALLENGES OF AGRICULTURAL INSURANCE:

1. Low awareness, don't like, lack of facilities are basic challenges.
2. Inadequacy and inequality of farmers access to institutional credit are more challenges
3. Bank failure to achieve the priority and agriculture credit targets is a major issue
4. Low operational performance of AIC is a burning issue for long survival of AIC

SUGGESTIONS:



1. The government should arrange for some meetings to popularize their crop insurance among the farmers.
2. Organize special periodical meeting and seminars for farmers.
3. Enhance the advertisement about crop insurance through local channels, news papers and magazines and like.
4. Placing the flex boards containing features of crop insurance policies offered at prominent areas.
5. The terms and conditions of the crop insurance policies should be completely transparent to the farmers.

CONCLUSION:

Agriculture in India is highly susceptible to risks like droughts and floods. It is necessary to protect farmers from natural calamities and ensure their credit eligibility for the next season. For this purpose, the government of India introduced many agriculture crop insurance schemes throughout India. In this context, insurance companies are playing a major role to help the farmers. To encourage the farmers the insurance company should understand the needs of the farmers, but understanding farmers is complex, as it is related to psychology of farmers and also depends on various factors, which have a direct bearing on climatic changes. The study concludes that farmers play an important role in crop insurance; once the farmers are satisfied they will bring more wealth to the nation.

REFERENCES:

1. Duhān, A. (2017), Farmer's Perception Towards Crop Insurance, *International Journal of Research in Applied, Natural and Social Sciences*, 6(8), India pp 1-6
2. J.Sunder and Lalitha Ramakrishnan (2015), Reveals the Extent of Awareness towards "Purchase Benefits and Satisfaction Level towards Crop Insurance"
3. D. Suresh Kumar, K.Palanisami, C.R. Ranganathan, R. Venkatram, "Farmers' Perception and Awareness towards Crop Insurance as a Tool for Risk Management in Tamilnadu ", Risk Assessment and Insurance Products for Agriculture Project No: 40013101 (Component IV), May 2010
4. Agricultural Insurance in India Problems and Prospects, S.S. Raju and Ramesh Chand, National Centre for Agricultural Economics and Policy Research (Indian Council of Agricultural Research) March 2008
5. Kuldip S. Chhikara and Anand S. Kodan (2012), National Agricultural Insurance Scheme (NAIS) in India an Assessment, Management and Labour Studies 37(2) 143-162
6. C. Sindhu and Dr. U. Thaslim Ariff. (2007), A study on farmer's preference towards crop insurance, *International Journal of Interdisciplinary Research in Arts and Humanities*, Volume 2, Issue 2, 2017
7. Agriculture insurance of India (n.d.) Introduction & Business Profile, retrieved from <http://www.aicofindia.com>
8. Crop Insurance in India-A Study, Venkatesh: 2008
9. Narayanan A. G. V. and Saravanan T.P (2011), A Study on Customers' Perception towards General Insurance Products (Livestock & Crop Insurance) with Special Reference to Erode Rural, Tamilnadu, India, *European Journal of Social Sciences* – Volume 25, Number 2, pp.219-232.


PRINCIPAL
RAJIV GANDHI ARTS, COMMERCE
& SCIENCE COLLEGE, KARMAD
TQ. & DIST. AURANGABAD.